प्रकाशक
जीतमल लूणिया, मंत्री
सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर

हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध

इस सस्ता-मंडल की पुस्तकों का विषय उनकी पृष्ठ संख्या और मूल्य पर ज़रा विचार कीजिए। कितनी उत्तम और साथही कितनी सस्ती हैं। मंडल से निकली हुई पुस्तकों के नाम तथा स्थाई ग्राहक होने के नियम, पुस्तक के अंत में दिये हुए हैं, उन्हें एक बार आप अवश्य पढ़ लीजिए।

❀ ग्राहक नम्बर

❀ यदि आप इस मंडल के ग्राहक हैं तो अपना नंबर यहाँ लिख रखिए ताकि आपको याद रहे। पत्र देते समय यह नम्बर जरूर लिखा करें।

मुद्रक
जीतमल लूणिया,
सस्ता-साहित्य-प्रेस, अजमेर।

'भैया-दूैज' के उपलक्ष्य में

प्रेमल कृतज्ञता की भेंट-स्वरूप यह पुस्तिका त्याग की उस छोटी सी प्रतिमा बहिन सुशीला देवी के दुबले हाथों में समर्पित है।

शारीरिक यातनायें, सुनते हैं, भगवान् की प्रच्छन्न दूतियें हैं। वह आती हैं आत्मा को ऊँचा उठाने और उसे भगवान् के अधिक सामीप्य में लाने के लिए।

भाई की आत्मा को जागृत करके स्वस्थ और उन्नत बनाने के लिए ही तो, बहिन ने, कहीं, यह इतने बड़े अस्वास्थ्य का भार अपने ऊपर नहीं लिया है ?

तब, हे विभो, उस भोली अबोध आत्मा का यह कष्ट हम सबकी आत्माओं को स्वस्थ और उन्नत करे ! और हे स्वास्थ्यमय देव, हे दयानिधि, उस बच्ची और उसकी माँ के दुःखो को दूर कर के उन्हें स्वस्थ और सुखी करो !

दीप मालिका
सम्वत् १९८५

एक अकिञ्चन भाई
क्षेमानन्द राहत

खर्चा जो लगा है

कागज	१८०)
छपाई	१६५)
बाइंडिंग	२५)
लिखाई	१००)
	४७०)
व्यवस्था, विज्ञापन, आदि खर्च	३६०)
	८३०)

कुल प्रतियाँ २१००

लागत मूल्य प्रति कापी ।=)

खर्चा जो पुस्तक पर लगाया गया

प्रेस का बिल व लिखाई	४७०)
व्यवस्था विज्ञापन आदि खर्च	१८०)
	६५०)

एक प्रति का मूल्य ।-)

इस प्रकार इस पुस्तक में फी प्रति -) और कुल १८०) की घटी उठाई गई है।

प्रस्तावना

ग्रन्थकार का परिचय

म० टाल्स्टाय उन्नीसवीं शताब्दि के एक जबरदस्त विचारक और लेखक हुए हैं। उन्होंने अपनी प्रतिभाशालिनी लेखनी से न केवल अपने महान देश रूस में ही प्रत्युत समस्त योरुपीय भूखण्ड में एक स्वास्थ्यमय क्रान्ति की लहर फैला दी। धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों से घिरे हुए समस्त ईसाई जगत में उन्होंने एक नवीन विचार-धारा बहा दी। उनके जीवनकाल में ही उनका नाम समस्त सभ्य संसार में विख्यात हो गया था और संसार भर के समान-धर्मा लोग उन्हे अपना आचार्य तथा पद-प्रदर्शक मानने लगे थे।

टाल्स्टाय ने अनेकों उपन्यास, कहानियें, निबन्ध और गम्भीर विवेचनात्मक ग्रन्थ लिखे हैं। धर्म, समाज, विज्ञान, कला और स्त्री-पुरुष-सम्बन्धपर उनके विचार अत्यन्त मार्मिक, मौलिक और प्रौढ़ हैं और संसार के विचारकों पर उनका गहरा असर पड़ा है। टाल्स्टाय की लेखनी में जबरदस्त शक्ति थी। वह जिस बात का वर्णन करते हैं उसका चित्रसा खींच देते हैं, जिस बात को समझाते हैं उसके लिए प्रायः समस्त सम्भव तर्कनाओं का उपयोग करके उसे सिद्ध करते हैं। टाल्स्टाय के ग्रन्थों का अवलोकन करने से पता चलता है कि वह एक बहु-विज्ञ विद्वान थे। जिस विषय पर वह लेखनी उठाते हैं उसमें उनकी पर्याप्त

गति है, वह केवल अपने ही विचार लिखकर सन्तुष्ट नहीं हो जाते परन्तु अपने पूर्व-वर्ती तथा समकालीन योरोपीय विद्वानों ने सम्बन्धित विषय पर जो विचार प्रकट किये हैं उनका उल्लेख और उचित आलोचना करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इसी लिए उनके तर्क-प्रधान ग्रन्थों में विस्तार का बाहुल्य है।

टालस्टाय ईसा के सच्चे भक्त थे, किन्तु आजकल ईसाइयत के नाम पर जो बातें प्रचलित हैं उनसे उनका गहरा विरोध था। वह चर्च के अस्तित्व को अनावश्यक और उसकी सत्ता को हानि-कारी मानते थे। उनका ख्याल था कि चर्च ने ईसा का बहिष्कार किया है और ईसा के उपदेशों के मनमाने अर्थ लगा कर बिल-कुल उनके विरुद्ध और विपरीत भावनाओं का लोगों में प्रचार कर रक्खा है। ईसा के पर्वत पर के उपदेश पर वह सम्पूर्ण हृदय से मुग्ध थे और मानते थे कि आध्यात्मिक कल्याण तथा सांसारिक सुख और शान्ति के लिए उन नियमो पर चलना और व्यवहार करना परमावश्यक ही नहीं अनिवार्य है। अवश्य ही, महात्मा ईसा का वह उपदेश, मनुष्य मात्र के अध्ययन करने की चीज़ है। समस्त विश्व के साहित्य में उससे बढ़ कर सरल सुन्दर और ऊँची चीज़ मिलना कठिन है।

किन्तु टाल्स्टाय केवल विचारक, लेखक और प्रचारक ही नहीं थे, वास्तव में वह सन्त थे। वह विपरीत परिस्थिति से बुरी तरह जकड़े हुए होने पर भी अपने विचारों के अनुकूल आचरण करने के लिए छटपटाते थे और जिन बातों को उन्होंने आव-श्यक समझा उन पर उन्होंने अमल भी किया। रूस के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित और समृद्धि-शाली सामन्त—कुल में जन्म लेने

पर भी उन्होंने अपने जीवन को बहुत ही सादा बना लिया था। उनकी प्रबल इच्छा थी कि वह अपनी विशाल सम्पत्ति किसानों को दे डालें; क्योंकि वह मानते थे कि उस जमीन पर उनका कोई अधिकार नहीं, वह तो किसानों ही की चीज़ है; किन्तु घर वालों ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। वह मानते थे कि मनुष्य कितना ही बड़ा और विद्वान क्यों न हो उसे शारीरिक श्रम द्वारा आजीविका उपार्जन करना चाहिए और इसलिए उन्होंने स्वयं श्रम करना प्रारम्भ किया। ज्ञान न वेचने के भाव से स्वरचित पुस्तकों की आय लेने से उन्होंने इन्कार कर दिया।

क्रान्तिकारी विचार रखने के कारण रूस की सरकार की क्रूर-दृष्टि तो उनपर थी ही पर सामाजिक और सम्पत्ति सम्बन्धी विचारों पर अमल करने की कोशिश करने के कारण वह अपने मित्रों और सगे सम्बन्धियों के भी बुरे बन गये थे। उनकी स्त्री और बच्चे उनकी बातों से सहमत न थे और उनकी 'सनकों' के कारण बहुत ही दुखी और परेशान थे। कहीं से किसी प्रकार की सहायता न मिलने और घनिष्ट आत्मियों के सतत विरोध के कारण वह अपने जीवन के महत्वपूर्ण परिवर्तनों में सफल न हो सके, यह उनके अन्तिम-जीवन की बड़ी ही व्यथामय और करुण घटना है।

टाल्स्टाय का प्रारम्भिक जीवन ठीक वैसा ही न था जैसा कि अपना प्रौढ़ और अन्तिम-जीवन उन्होंने बना लिया था।

यौवनं धन सम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।

एकैक मप्यनर्थाय किमुयत्र चतुष्टयम्॥

इस श्लोक में एक नित्य सत्य है। इसी यौवन, धन, सम्पत्ति और सत्ता के विष ने न जाने कितने ही होनहार नवयुवकों और युवतियो के अधखिले जीवन को विषाक्त बना कर सदा के लिए नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। युवक टाल्स्टाय भी इसकी लपेट में आ गया और कुसङ्ग मे पड़ कर अपने शरीर और आत्मा पर तथा दूसरों पर उसने तरह तरह के अनाचार किये। किन्तु वह संस्कारी प्राणी था इसलिए अपने घोर पतन के समय भी उसने विवेक को बिलकुल ही न छोड़ दिया और उसी विवेक के बल पर अपने को पतन के खड्ढे से निकाल कर और पाप-पाश को छिन्न-भिन्न करके फिर संसार के सामने एक शुद्ध और मुमुक्षु जीव के रूप मे अपने व्यक्तित्व को लाकर खड़ा करने में समर्थ हुआ। टाल्स्टाय का उदाहरण स्वभावजन्य दुर्बलताओं से भरे हुए मनुष्य-समाज के लिए बहुत ही स्फूर्तिदायी है। टाल्स्टाय देवता न था, फरिश्ता न था; वह मानवी दुर्बलताओं से परिपूर्ण केवल एक मनुष्य था। अमीरी और अमीरी के चारों ओर जो पाप-जाल फैला रहता है, उसका वह बेतरह शिकार हुआ; किन्तु वह उठा और उठ कर वहाँ पहुँचा जहाँ संसार की बड़ी से बड़ी सत्ता और विद्वत्ता की महत्ता प्रेम और आदर के साथ उसे सर नवाती थी। निस्सन्देह अपने ज़माने का वह सब से बड़ा महापुरुष था। उसका चरित्रबल और संसार भर में फैला हुआ उसका यश इतना प्रबल था कि अत्यन्त अवाञ्छनीय समझते हुए भी रूस की ज़ारशाही को उस पर हाथ डालने की जुर्रत न हुई।

टाल्स्टाय की आत्मा भारतीयता के बहुत अनुकूल थी। वह आत्मा की अमरता में विश्वास रखते थे। एक अंग्रेज़

मुलाक़ाती भक्त ने जब उनसे आत्मा की अमरता और मृत्यु के बाद के जीवन की चर्चा करते हुए कहा "ऐसा विश्वास रखने पर मौत का सारा भय दूर हो जाता है," तो इन्होंने उत्तर दिया था— 'यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। इसके बिना तो जीवन का कोई अर्थ नहीं। किन्तु भविष्य जीवन की वास्तविकता का सच्चा सबूत आध्यात्मिक घटनाओं में नहीं बल्कि उस साक्ष्य, उस विश्वास में है जो जीवन में सदाचार के नियमों का अनुसरण करने से स्वतः मनुष्य के हृदय में पैदा होता है।' उनका अंतिम वाक्य इस बात को घोषित करता है कि उनका ज्ञान और आत्मिक विश्वास हमारी भांति पुस्तकों के अध्ययन पर नहीं किन्तु स्वकीय चारित्र्य-गत अनुभूति पर अवलम्बित था।

महात्मा टालस्टाय ने पूर्ण परिपक्व अवस्था में विवाह किया था और उनके कई बच्चे भी थे; किन्तु स्त्री-पुरुष का कैसा सम्बन्ध रहना चाहिए इस विषय में उनके विचार कठोर और उच्च हैं और महात्मा गान्धी के विचारो से मिलते जुलते हैं। ब्रह्मचर्य और संयम—यही उनका आदर्श है। स्त्री और पुरुष ब्रह्मचर्य धारण करके मानव समाज की सेवा करें और जब ब्रह्मचर्य-निर्वाह में अपने को असमर्थ पावें तभी विवाह का विचार करें और विवाहित जीवन को भी कठोर संयम के साथ व्यतीत करें। जो सन्तान उत्पन्न हो उसका आदर्श व्यक्तिगत सांसारिक उत्कर्ष अथवा अर्थ-संचय न हो प्रत्युत मानव-समाज की सेवा करना ही वह अपना लक्ष्य बनाये। तलाक़ प्रथा के वह विरुद्ध हैं। किन्तु सामाजिक क्रान्ति के मतवाले कुछ लोग, आज, ईसा की ईसाईयत से दूर और पतित योरोप की देखादेखी हिन्दू-

समाज में भी इस अश्रेयस्कर प्रथा को जारी करने के इच्छुक हो रहे हैं।

टाल्स्टाय जीवन-पर्यन्त अपने आदर्शों को व्यवहार में लाने के लिए परिस्थिति से लड़ते रहे और अन्त समय में घर को छोड़ कर चल दिये। मुझे याद आता है, बहुत दिनों पहिले प्रोफेसर रामदेव ने एक व्याख्यान मे कहा था कि टाल्स्टाय ने एक विशिष्ट भारतीय पुस्तक में वृद्धावस्था में संन्यास ग्रहण करने की बात देख कर घर छोड़ कर संन्यासाश्रम स्वीकार कर लिया। यह बात भारतीय आदर्श की प्रेरणा से टाल्स्टाय ने की थी अथवा घर में रह कर अपने प्राणप्रिय सिद्धान्तों में सफलता प्राप्त करना असम्भव जान कर वह संन्यस्त हो गये, यह कहना कठिन है। पर, इसमें सन्देह नही कि अन्तिम अवस्था मे नाज़ों के पाले उस माई के लाल ने घर बार छोड़ कर भगवान के बनाये हुए इस विशाल प्राङ्गण में, कुहरे और पाले से भरे हुए उस रूसी प्रदेश में, प्रवेश किया और इस प्रकार अपनी आदर्शप्रियता का एक अन्तिम और जाज्वल्यमान उदाहरण संसार के झिझकने वाले पथिकों को प्रोत्साहन देने के लिए इस अनन्त-रङ्गमञ्च पर ला रक्खा।

पुस्तक तथा कुछ पात्रों का परिचय

प्रस्तुत पुस्तक इन्हीं ऋषितुल्य टाल्स्टाय के एक नाटक का अनुवाद है। टाल्स्टाय उन लोगों में नहीं हैं जो 'कला केवल कला के लिए है' इस सिद्धान्त को मानते हैं। वह मानते हैं कि कला जीवन को मधुर और सुन्दर बनाने के लिए होनी चाहिये! उनके नाटक उपन्यास और कहानियें इसी लक्ष्य को लेकर लिखे गये हैं और यह नाटक भी उन्हींमें से एक है।

'अन्धेरे में उजाला' टाल्स्टाय की श्रेष्ठतम कृति कही जाती है। इसमें टाल्स्टाय ने अपने मनोभावों को व्यक्त किया है। यह नाटक कल्पना के आधार पर नहीं लिखा है, इसमें व्यक्ति-गत जीवन की स्पष्ट छाया है और यह जीवन और किसी का नहीं स्वयं नाट्यकार का और प्रमुखतः उसके परिवार का जीवन है, जो इस नाटक के कथानक में प्रस्फुटित हुआ है। इस नाटक का प्रमुख पात्र निकोलस टाल्स्टाय का प्रतिबिम्ब है और मेरी सरयान्तसब टाल्स्टाय की धर्म-पत्नी का पार्ट खेल रही है।

जान कोलमैन केनवर्दी ने 'टाल्स्टाय-उनकी जीवनी और कृतियें' नामी पुस्तक में टाल्स्टाय-मिलन का जिक्र करते हुए उनकी स्त्री आदि के सम्बन्ध में लिखा है—The countess is tall, carries her years most lightly, is brisk. vigorous and dominant. She, the middleaged eldest son, the two eldest daughters, a younger boy and girl and the two or three visitors show plainly that the head of the house has swept far beyond the other's sphere, and that they variously follow him in degree only as varying despositions lead them.

अर्थात काउन्टेस का क़द लम्बा है, काफी उम्र की होते हुए भी वह सजीव और फुर्तीली हैं तथा शक्तिशाली और रोबोदाब वाली हैं। वह, (अर्थात काउन्टेस) अधेड़ उम्र का ज्येष्ठ पुत्र, दो बड़ी कन्यायें, एक छोटा लड़का और एक लड़की और दो या तीन अभ्यागत—यह सब स्पष्टतः सिद्ध करते हैं कि घर का मालिक आगे-अन्य सब लोगो की पहुँच से बहुत आगे बढ़ गया

है और वह अपनी अपनी भिन्न रुचि के अनुसार जैसा और जितना जिसके जी में आता है उतना ही उसका अनुसरण करते हैं।

प्रत्यक्षदर्शी लेखक ने इन पंक्तियों में टाल्स्टाय के गार्हस्थ्य जीवन की वास्तविक स्थिति का खाका खींच दिया है और इस नाटक के अन्दर भी हम निकोलस के परिवार का कुछ ऐसा ही चित्र देखते हैं। टाल्स्टाय ने दया करके मेरी को उतना जबरदस्त न बनाकर प्रेमल और कोमल प्रकृति का बनाया है और अपने बच्चों के ख्याल से तथा अपनी तेज-तर्रार बहिन अलेक्जन्ड्रा के द्वारा बराबर बहकाये जाने से ही वह निकोलस की इच्छाओं के प्रति विरोध प्रदर्शित करने में समर्थ होती है। 'मेरी' एक ऐसी सरल प्रकृति की स्त्री है जो सब प्रकार की महत्वाकांक्षाओं से रहित है और जिसका जीवन पति पुत्र और परिवार तक ही परिमित है। वह अभिमान करने की नहीं केवल प्यार और पूजा करने की [illegible] है। मेरी अपने पति निकोलस की जब-तब उठने वाली नित नयी तरङ्गों से परेशान है। निकोलस जब सारी जायदाद किसानों को देने के लिए जोर देता है तब वह इस आशा का आश्रय लेती है 'कि उनकी पहिली तरङ्गों की भांति यह भी चली जायेगी।' किन्तु उसका वह सहारा बालू की भांति की भाँति ढह जाता है। कौन समझेगा उसकी उस असहायावस्था को कि जब निकोलस अपनी ज़िद से बाज नहीं आता और मेरी की साधारण विवेक-बुद्धि, उसके परम्परा-गत संस्कार और उसके चारों ओर का संसार अपनी पैतृक सम्पत्ति को इस प्रकार लुटा कर अपने प्यारे बाल-बच्चों को बिलकुल भिखारी बना डालने के विचार का घोर विरोध करता है और जब निकोलस के प्रबल

युक्ति-सङ्गत तर्कों का कोई जवाब न पाकर मन ही मन उनसे प्रभावित होकर वह अपनी सखी 'शाहज़ादी चेरमशनज्स' से कहती है—यह तो और भी भयानक है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वह जो कुछ कहते हैं वह सब सच है।

दु:खित मेरी को ढारस देने के लिए शाहज़ादी कहती है—यह इस लिए कि आप उन्हें प्यार करती हैं।

थाह न आये हुए मनुष्य की भाँति मेरी उत्तर देती है—मालूम नहीं। मगर है यह बड़ी गड़बड़—और यही ईसाई धर्म है।

मेरी की आत्मा का अलबेला स्वरूप हम उस समय देखते हैं कि जब निकोलस के घर छोड़ कर जाने के समय ख़बर मिलते ही वह दौड़ती हुई आ घेरती है। उस सदा की तर्क-विहीन निरक्ष सीधी सादी गृहिणी में यकायक यह इतनी तर्कनाशक्ति कहाँ से फूट पड़ी ? घर छोड़ कर जाने के लिए निकोलस जब द्वार पर आता है तो वहाँ मेरी को खड़ा देखकर आश्चर्य करता है—अरे तुम यहाँ कहाँ क्यों आ गईं ?

स्त्री-सुलभ अभिमान और अधिकार के साथ मेरी कहती है—क्यों आ गई ? तुम्हें इस वज्र निठुराई से रोकने के लिए। तुम यह क्या कर रहे थे ? घर क्यों छोड़े जाते हो ?

ख़ासी बहस छिड़ जाती है। आज मेरी के पैंतरे देखो। सिपाही अपने मालिक की जान बचाने के लिए जूझ रहा है। माता जलते हुए घर में से सोते हुए बच्चे को निकालने के लिए दौड़ी है।

मेरी एक जगह शराबी और दीन अलेक्ज़ेण्डर पेट्रोकिन की ओर संकेत करके कहती है—भला तुम्हारा और इसका क्या मेल है, वह तुम्हारी स्त्री से भी बढ़ कर तुम्हें प्यारा क्यों हैं ?

दूसरी जगह बोलती है—देखो, तुम ईसाई हो, तुम दूसरों के साथ नेकी करना चाहते हो, और तुम कहते हो कि तुम सब आदमियों को प्यार करते हो, लेकिन उस बेचारी औरत को क्यों सताते हो, जिसने सारा जन्म तुम्हारी सेवा में बिताया है ?

निकोलस इस लांछन का पूरा निराकरण करने भी न पाया था कि मेरी ने दूसरा वार किया। निकोलस के घर छोड़ कर जाने से उसकी कितनी बदनामी और बेइज्ज़ती होगी इस बात का ज़िक्र करते हुए मेरी कुहक उठती है—और सिर्फ़ बे-इज़्ज़ती ही नहीं सबसे बुरी बात तो यह है कि अब तुम मुझे प्यार नहीं करते। तुम औरों को प्यार करते हो, सारी दुनिया को चाहते हो, और उस शराबी अलेक्ज़ेण्डर पेट्रोकिच तक को प्यार करते हो, बस दुनिया भर मे एक मैं ही ऐसी बुरी, बद-क़िस्मत और गई-गुज़री हूँ जिसे तुम प्यार करना नहीं चाहते। तुम मुझे प्यार करो या न करो मगर मैं तुम्हें अब भी चाहती हूँ और तुम्हारे बग़ैर जी नहीं सकती। अरे निर्मोही, तुम यह क्यों करते हो ? क्यों मुझे छोड़ते हो ?

यह वक्तृता न थी, संसार के कोमलतम काव्यों का अत्यन्त कमनीय सार था और तिसपर उन आंखों से आंसुओं का बह उठना कि जिन्हें जीवन भर प्यार किया हो ! ग़ज़ब हो गया ! इस महान तूफ़ानी बाढ़ के आगे तर्क का क्षुद्र बांध भला कबतक ठहरेगा भाई !

बेचारा निकोलस सिटपिटा जाता है किन्तु हथियार डाले बिना ही कहता है—मगर तुम मेरे जीवन—मेरे आध्यात्मिक जीवन को समझना भी तो नहीं चाहतीं।

उत्तर बना बनाया था—मैं समझना चाहती हूँ मगर नहीं समझ पाती। मैं तो देखती हूँ कि तुम्हारे ईसाई धर्म ने तुम्हें मुझ से और बच्चों से घृणा करना सिखला दिया है।

कोई बताओ तो सही मेरी यह बात कहां से सीखी कि जब बचाव का कोई अच्छा साधन न हो तो बस बराबर आक्रमण करते रहो ?

पुरुष निकोलस ने अपनी समझ में एक बड़ी ज़बरदस्त और मार्के की बात कही—लोग उसकी हँसी उड़ायेंगे। कहेंगे कि बातें तो बहुत बघारता है मगर कुछ करता नहीं।

मेरी एक चतुर तर्क-शास्त्री की भांति कह उठती है—तो तुम्हें डर इस बात का है कि लोग क्या कहेंगे ? सचमुच तुम इस लोकापवाद की अवहेलना करके क्या इससे ऊपर नहीं उठ सकते ?

निकोलस पूछता है—फिर भला, मैं क्या करूँ ?

मेरी समझाती है—वही करो जिसे तुम अक्सर मनुष्य का कर्तव्य बताते थे, धैर्य धारण करो और प्रेम-पूर्वक व्यवहार करो।

मेरी बोल रही थी कि इतने में नाच-पार्टी में आये हुए मेहमानों का सन्देश लाकर वानिया कहता है—माँ, वे लोग तुम्हें बुला रहे हैं।

यह तो ऐन मार्के की चाल के समय शतरंज के खिलाड़ी

को भोजन का बुलावा आ पहुँचा। मन ही मन झुंझला कर मेरी ने कहा—कह दो, मैं अभी नहीं आ सकती, जाओ जाओ।

और आखिर मेरी वहाँ से उठी अपनी बात मनवा कर। निकोलस जब विदा लेकर जाने ही लगा तो मेरी ने सर्व-विजयी दृढ़ता के साथ कहा—अगर तुम जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी और यदि साथ न जाऊँगी तो जिस ट्रेन से तुम जाओगे उसी के नीचे कट मरूँगी। जाने दो इन सबको जहन्नुम में— मिसी और काटिया को भी। हाय, भगवन्, यह तुमने कैसी मुसीबत डाली। यह कहते कहते वह सिसक सिसक कर रो उठी।

निकोलस ने द्वार पर जाकर कहा—पेट्रोविच, तुम जाओ। मैं नहीं जाऊँगा। यह कह कर उन्होंने अपना ओवरकोट उतार डाला।

आँसुओं की विजय हुई। इतनी बुद्धि, इतनी तर्कना, इतनी अध्यात्मिकता न जाने कहाँ विलीन हो गई।

अरे इन आँसुओं ने संसार के न जाने कितने होनहार निश्नायों को अपने कोमल पैरों के नीचे कुचल कर समाप्त कर दिया। न जाने कितनी सुरभित कलिकाओं को विकसित होने से पहिले ही वृक्ष से तोड़ कर फेंक दिया।

स्त्री यदि अनुकूल हो तो स्वयं देवी बनकर मनुष्य को देवता बना सक्ती है, किन्तु न पूछो उसके दुर्भाग्य की बात कि जिसकी स्त्री उसका साथ नहीं देती। बड़े बड़े मनुष्य को भी ऐसी हालत में अपने को सम्भालना महादुस्तर हो उठता है।

टाल्स्टाय घर छोड़ कर चले जाते हैं किन्तु निकोलस शाहज़ादी चेरमशनोव्स के हाथों गोली का शिकार होता है। यहाँ इन दोनों के जीवन में अन्तर है।

निकोलस को इस बात का दुःख है कि उसने जहाँ जिस काम में हाथ लगाया वहीं उसे असफलता हुई किन्तु मरते समय उसे इस बात का सन्तोष है कि उसने जीवन के अर्थ को समझ लिया।

शायद उस अर्थ को चरितार्थ वह दूसरे जीवन में करेगा।

वासिली नाम का एक युवक पुरोहित है जो निकोलस के संसर्ग में आने से, धीरे धीरे उसके मत का हो जाता है। वासिली का जीवन उन असहयोगी भाइयों की याद दिलाता है जो असहयोग के तूफ़ानी ज़माने में भावुकतावश कालेज या कचहरी छोड़ कर स्वतंत्रता के सैनिकों में आ मिले थे किन्तु जोश ठंडा होते ही अपनी कृति पर पछताते हुए फिर अपनी अपनी जगह पर लौट गये। वासिली को पीछे हटता देखकर निकोलस को बड़ा दुःख होता है। उसे इस बात का अभिमान था कि घर के लोगों ने न सही कम से कम वासिली ने तो उसके समान सत्य को समझा है और साहसपूर्वक उसका अनुसरण किया है किन्तु उसका यह मधुर सुख स्वयं बड़े बेमौके टूटता है।

इस नाटक का एक और पात्र है जिसके चरित्र का उल्लेख करने की आवश्यकता है। यह है युवक बोरिस। बोरिस शाहज़ादी नोरगशकोव्स का एकमात्र पुत्र है जिसे उसने बड़ी मुसीबतें सह कर पाला है। वह निकोलस के सिद्धान्तों को पसन्द करने लगता है और उनका अमल करने को कटिबद्ध होता है। निकोलस की

लड़की ल्यूबा का उससे प्रेम सम्बन्ध है और दोनों का विवाह होना भी एक प्रकार निश्चित हो चुका है। निकोलस टाल्स्टाय की ही तरह फौजी सेवा को घोर क्रूर हिंस्र कर्म मानता है। बोरिस भी इस बात को समझता है और इस काम से घृणा करने लगता है। लेकिन यहीं बोरिस कसौटी पर कसा जाता है और उस नव-युवक का अन्त कितना ही दुःखद क्यों न हो किन्तु प्रत्येक आत्मा के लिए यह परम सन्तोष की बात होगी कि बहादुर बोरिस उस भयंकर कसौटी पर पूरा उतरा।

ऐसा नियम था कि नवयुवक सामन्तों को कुछ समय के लिए सेना में भरती होकर सैनिक सेवा करना अनिवार्य था। बोरिस इससे इन्कार करता है। वह गिरफ्तार किया जाता है। अफसर उसे डराते हैं, धमकाते हैं, समझाते हैं, पर वह दृढ़ रहता है। उसकी मां, ल्यूबा और स्वयं उसका गुरु निकोलस उससे पुन-र्विचार का अनुरोध करते हैं किन्तु वह विचलित नहीं होता। बोरिस को पागल बता कर पागलखाने में भेजा जाता है। वहाँ उसे कैसी कैसी यातनायें भुगतनी पड़ती हैं। मगर हद से भयंकर बात यह होती है कि उसकी प्रेमिका यानी ल्यूबा उसे प्यार करना छोड़ देती है और दूसरे के साथ विवाह करने को तैयार हो जाती है। पता नहीं उस अभागे युवक ने इस हत्यारी घटना को किस प्रकार सहन किया। क्योंकि टाल्स्टाय ने अन्तिम अङ्क बिना पूरा किये ही इस नाटक को छोड़ दिया। इसमें सन्देह नहीं बोरिस अन्त तक दृढ़ रहता है और सम्भवतः बेचारा जेल में ही पड़ा पड़ा मर जाता है। बोरिस ही वह पवित्र और उज्ज्वल बलि-दान है जो निकोलस के सिद्धान्तों की वेदी पर चढ़ाया गया।

बोरिस के जीवन पर कोई आँसू बहाये या उसे कोसे पर इसमें सन्देह नहीं कि उच्च सिद्धान्त कालिका माई की तरह खून के प्यासे होते हैं और जब तक उनको पूरा पूरा भोग नहीं मिलता तब तक वह पनपते नहीं। ईश्वर करे, बोरिस का आत्मबलिदान हमें भयभीत न करके हमारे अन्दर वह शक्ति पैदा करे कि हम भी हँसते हँसते सत्य और स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर सकें।

Light shines in darkness का यह अनुवाद उस वक्त तैयार हुआ था जब 'भारत तिलक' के सम्पादक और प्रकाशक की हैसियत से धारा १४४ अ० के अनुसार मैं कडलूर जेल में सरकार का मेहमान था। उसी समय 'कलवार की करतूत' और 'जिन्दा लाश' नामक नाटक भी अनूदित हुए थे। यह नाटक बहुत दिनों तक मेरे पास और फिर प्रकाशकों के पास रक्खा रहा। भूमिका लिखने के लिए जब छपे हुए फार्मों को मैंने देखा तो मुझे ख्याल आया कि इस नाटक को छपने से पहिले एकबार मुझे देख जाना चाहिये था। टाल्स्टाय ने पाँचवाँ अङ्क नहीं लिखा केवल घटना-क्रम को बतलाने वाले नोट लिखकर छोड़ दिये थे। प्रकाशकों ने यह इच्छा प्रकट की कि मैं उस अङ्क को लिख डालूँ किन्तु कुछ समय तथा साहस की कमी के कारण मैंने इस काम में हाथ नहीं डाला। जैसा टाल्स्टाय छोड़ गये थे वैसे ही रूप में यह नाटक हिन्दी में प्रकाशित हो रहा है।

आशा है पाठकों को यह मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद प्रतीत होगा। इसमें एक आत्मा के ऊँचे उठने के उद्योग की कहानी है।

इसको पढ़ने से हीन भावों की जागृति नहीं होती और इसी लिए यह मुख्य नाटक होते हुए भी बालकों और कुमारियों के हाथ में निस्सङ्कोच दिया जा सकता है।

गांधी-आश्रम
हटूंडी, अजमेर

क्षेमानन्द राहत

नाटक के पात्र

निकोलस आइवनोविच सरयान्तसव

मेरी सरयान्तसव—उसकी पत्नी।

ल्यूबा— }
मिसी— } उसकी कन्यायें।

कातिया—उसकी छोटी बच्ची।

स्ट्यूबा—उनका पुत्र।

वानिया—छोटा पुत्र।

अलेक्ज़ेण्डर माइकालेविज—ल्यूबा का भावी पति।

मिट्रोफ़न—वानिया का शिक्षक।

अलेक्ज़ेण्डरा या अलीना—मेरी की बड़ी बहिन।

पीटर सेमोनोविच—उसका पति।

लिसा—उनकी लड़की।

शाहज़ादी चेरमशनोव्स—

बोरिस—उसका पुत्र।

टानिया—उसकी पुत्री।

वासिली—निकोलस के पुरोहित का नाम।

आइवन—एक किसान।

आइवन की स्त्री—

मालाशका—किसान की लड़की जो अपने छोटे भाई को गोद में खिलाती है।

पाटर—किसान ।

गाँव का एक पुलिस मैन ।

बाबा जिरैसियम—पादरी ।

एक बढ़ई ।

एक जनरल ।

एक कर्नल ।

एक संतरी ।

हेड डाक्टर ।

असिस्टेएट डाक्टर ।

अस्पताल में बीमार लोग ।

अलेक्जेएडर पिट्रोविच—एक ग़रीब शराबी आदमी ।

किसान मर्द और औरतें, विद्यार्थी, महिलाएँ, नाचनेवाले युवक युवतियें, सैनिक, क्लर्क, और सरकारी अफ़सर ।

अंधेरे में उजाला

पहला अंक

पहला दृष्य

(मेरी एक चालीस वर्ष की खूबसूरत स्त्री, उसकी बहिन अले-
क्ज़ेण्डरा, एक पैंतालीस वर्ष की बेवकूफ़ जिद्दी औरत
और उसका पति पीटर, एक मोटासा आदमी,
यह सब बैठे शराब पीते हैं।)

अलेक्ज़ेण्डरा—अगर तुम मेरी बहिन न होतीं, बल्कि मुझ से अपरिचित अजनबी होती और निकोलस तुम्हारा पति न होकर महज़ एक मुलाक़ाती होता तो मैं इन बातो को मौलिक और मजेदार समझती और शायद मैं उसे कुछ उत्साहित भी करती; लेकिन जब मैं देखती हूँ कि तुम्हारा पति बेवकूफों—हाँ, बिलकुल बेवकूफ़ों का सा काम कर रहा तब मुझसे चुप नहीं रहा जाता। इसीलिए इस सम्बन्ध में मेरे जो विचार हैं वह प्रकट कर देती हूँ और तुम्हारे पति निकोलस से भी साफ़ साफ़ कह दूँगी। मैं किसी से ड़रती नहीं।

मेरी—सच है, बहिन, तुम्हारा कहना सच है, मैं भी सब कुछ देखती हूँ लेकिन कुछ बोलती नहीं—मै उन बातों पर अधिक ध्यान नहीं देती।

अलेक्ज़ेण्डरा—तुम अभी तो ध्यान नहीं देती हो, लेकिन मैं कहे देती हूँ कि अगर यही हाल रहा तो तुम लोग भिखारी बन जाओगे।

पीटर—देखो तो सही! भिखारी बन जायेंगे! इतनी आमदनी होते हुए?

अलेक्ज़ेण्डरा—हाँ, भिखारी! लेकिन मेहरबानी करके तुम हमारी बातों में दख़ल न दो। मर्द चाहे कुछ भी करें तुम लोगों को तो वह ठीक ही मालूम देता है।

पीटर—ओफ! मैं यह नहीं जानता। मैं तो कह रहा था......

अलेक्ज़ेण्डरा—मगर तुमको इसका ज़रा भी ख्याल नही रहता कि तुम क्या कह रहे हो; क्योंकि तुम मर्द लोग जब कोई बेवकूफी करने लगते हो तो फिर ठहरना तो जानते ही नहीं। मैं तो बस इतना ही कहती हूँ कि अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो ये बातें कभी न होने देतीं। उन्हें एकदम रोक देतीं। आख़िर इसके मानी क्या हैं? उसके औरत है, बाल-बच्चे हैं, घर-बार है लेकिन इधर तो कोई ध्यान ही नहीं। न कोई काम है और न किसी चीज़ की देख-भाल है। सभी चीजें लुटाये देता है। जिसे जी में आया बस उठा कर दे दिया। मैं जानती हूँ और खूब अच्छी तरह जातनी हूँ कि इसका क्या नतीजा होगा।

पीटर—(मेरी से) मगर मेरी, मुझे ज़रा बताओ तो सही यह

नई हलचल क्या है ? मैं आज़ाद ख्याली आम तालीम और कौंसिल बहिष्कार आदि बातों को तो समझ सकता हूँ और समाज-वाद, हड़ताल और श्रमजीवियों के प्रश्न को भी जानता हूँ लेकिन यह सब क्या है ? ज़रा बताओ तो सही।

मेरी—मगर कल उन्होंने आपको समझाया तो था।

पीटर—मैं मानता हूँ कि मैं नहीं समझा। बाइबिल, पर्वत पर का उपदेश, आदि की बातें कह रहे थे और कहते थे कि गिरजों की कोई आवश्यकता नहीं है। मगर फिर कोई पूजा-पाठ किस तरह करेगा ?

मेरी—हाँ, यही तो ख़राबी है। वह सब बातो को तो नष्ट कर देना चाहते हैं मगर उनके स्थान पर कोई नई चीज़ हम लोगों को नहीं देते।

पीटर—इसका आरम्भ किस तरह हुआ ?

मेरी—पारसाल से उनकी बहिन की मृत्यु के बाद ही यह सब आरंभ हुआ। वह अपनी बहिन को बहुत प्यार करते थे। उसकी मौत से उनको बड़ा धक्का लगा। वह बहुत ही ग़मगीन हो गये और हमेशा मौत का ही ज़िक्र किया करते थे। और फिर, जैसा कि आप जानते हैं, बीमार पड़ गये। जब अच्छे हुए तब तो वह बिलकुल ही बदल गये।

अलेक्ज़ेण्डरा—मगर फिर भी फागुन के महीने मे जब वह मुझ से मिलने मास्को आये थे तब तो वह अच्छे भले थे और खूब हँसी-खेल किया करते थे।

मेरी—यह तो ठीक, लेकिन फिर भी उनमें बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था।

पीटर—किस तरह का ?

मेरी—वह घर-गिरिस्ती की बातो से बिलकुल लापरवाह थे और एक तरह की धुन उन्हें लगी रहती थी। वह कई दिनों तक लगातार बाइबिल पढ़ते रहते थे और रात को भी सोते न थे। वह रात को उठ कर पढ़ा करते, कुछ उद्धरण लिखते, नोट्स करते रहते और फिर उसके बाद से वह पादरियों तथा दरवेशो से मिलने जाने लगे और उनसे धर्म सम्बन्धी वार्तालाप करने लगे।

अलेक्जेण्डरा—और क्या वे वृत, उपवास रखते और पूजादि करते थे ?

मेरी—हमारे विवाह के समय से—याने बीस वर्ष पहले से लेकर—उस समय तक उन्होंने न कभी वृत उपवास आदि रक्खा और न कभी पूजापाठ किया; मगर उस समय एक बार, उन्होंने गुरु द्वारे मे मंत्र लिया और उसके बाद ही उन्होने निश्चय कर लिया कि न तो किसी को मंत्र ही लेना चाहिए और न गिरजाघर ही जाना चाहिए।

अलेक्जेण्डरा—यही तो मैं कहती हूँ कि वह एक बात पर दृढ़ नहीं रहते।

मेरी—हाँ, एक महीने पहले वह कभी गिरजा जाने से नहीं चूकते थे और हरेक वृत रखते थे लेकिन उसके बाद ही अचानक उन्होंने यह निर्णय कर लिया कि ये सब अनावश्यक है। भला, ऐसे आदमी के साथ कोई क्या करे ?

अलेक्जेण्डरा—मैंने उससे बात की थी और फिर उससे बात करूँगी।

पीटर—ठीक है, मगर यह मामला इतना ज़रूरी नहीं है।

अलेक्ज़ेण्डरा—ज़रूरी नहीं? तुम्हारे लिए नहीं होगा, क्योंकि तुम मर्दों को तो धर्म-कर्म का कोई ख्याल ही नहीं है।

पीटर—मेरी बात तो सुनो। मैं कहता हूँ, यह कोई बात नहीं। बात यह है कि यदि वह गिरजा को अस्वीकार करते हैं तो फिर बाइबिल को किसलिए चाहते हैं।

मेरी—इस लिए कि हम लोग बाइबिल और पर्वत पर के उपदेश के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें और जो हमारे पास है वह सब दूसरों को दे डालें।

पीटर—अगर सब कुछ दे डालें तो फिर जिन्दगी किस तरह बसर करें?

अलेक्ज़ेण्डरा—और पर्वत पर के उपदेशों में उसे यह कहाँ मिला कि हम लोगों को नौकरों और साइसों से भी हाथ मिलाना चाहिए? उसमें है "नम्र लोग धन्य है" मगर उसमें हाथ मिलाने का तो कोई ज़िक्र ही नहीं है।

पीटर—आज वह शहर किस लिए गये हैं?

मेरी—इन्होंने मुझसे कहा तो नहीं लेकिन मैं जानती हूँ कि वह उन दरख्तों के मामले में गये हैं जो कुछ लोगों ने काट गिराये हैं। किसान लोग हमारे बाग़ से पेड़ों को काटकर ले जाते हैं।

पीटर—उस शीशम वाले बाग़ से।

मेरी—हां, वे लोग शायद जेल-खाने भेज दिये जाँयगे और उन्हें दरख्तों की कीमत देनी होगी। उनके मुकदमे की आज पेशी है। यह बात उन्होंने मुझसे कही थी। इसीसे मुझे विश्वास है कि इसीलिए वह शहर गये हैं।

अलेक्जेंडरा—वह उन्हें जाकर माफ कर देगा और कल को वे आकर पार्क में से पेड़ों को काट ले जावेंगे।

मेरी—और क्या! इसका यही नतीजा होगा। अब भी तो वे हमारे आमों को तोड़ लेजाते हैं और हरे भरे अनाज के खेतों को रौंद डालते हैं। और वह हैं कि इन सब बातों को माफ कर देते हैं।

पीटर—बड़ी अजीब बात है।

अलेक्जेण्डरा—यही तो मैं भी कहती हूँ कि ऐसा नहीं होने देना चाहिए और अगर यही सिलसिला जारी रहा तो सब बरबाद हो जायगा। मेरा तो ख्याल है कि एक मां की हैसियत से तुम्हें इन बातों को रोकने की कोशिश करनी चाहिए।

मेरी—भला बताओ तो सही, मैं कर ही क्या सकती हूँ?

अलेक्जेंडरा—करने को क्या है? बस उसे रोक दो। उसे कह दो कि ऐसा नहीं हो सकता। तुम बाल बच्चे वाले आदमी हो। उनके लिए यह कैसी मिसाल है?

मेरी—इसमें संदेह नहीं कि यह कष्ट प्रद है लेकिन मैं उसे सह लेती हूँ। और यह आशा लगाये बैठी हूँ कि उनकी पहले वाली तरंगों की तरह यह भी चली जायगी।

अलेक्जेण्डरा—यह तो ठीक है लेकिन तुम जानती हो कि ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं। तुमको चाहिए कि तुम उसे यह महसूस करादो कि घर मे अकेला वही नही है, और यह कि इस तरह गुजारा नही हो सकता।

मेरी—ख़राबी तो यही है कि अब उन्हें बच्चों का कुछ ख़्याल ही नहीं रहता है। और मुझे ही सब कुछ करना पड़ता है। और बड़े बच्चो के अलावा मेरी गोद में भी एक बच्चा है। इन बच्चों—लड़के लड़कियो—की देख भाल भी करनी पड़ती है, पढ़ाने लिखाने की भी व्यवस्था करनी पड़ती है, और यह सब मुझे अकेले ही करने पड़ते हैं। पहले तो वह बच्चों से बहुत प्रेम रखते थे। और उनकी बड़ी ख़बरगिरी लेते थे, मगर अब तो मालूम होता है उन्हें कुछ परवाह ही नहीं है, कल मैंने उनसे कहा कि वानिया ठीक तरह से नहीं पढ़ता है और इम्तिहान में पास नहीं होगा तो वह बोले उसके लिए अच्छा तो यही है कि वह एकदम स्कूल जाना छोड़दे।

पीटर—फिर कहां जाय ?

मेरी—कहीं नहीं ! यही तो बड़ी भयानक बात है। हम लोग जो करते हैं उसीको वह बुरा और ग़लत बताते हैं। लेकिन यह नहीं कहते कि ठीक और सही बात कौनसी है ?

पीटर—यही तो बुरी बात है।

अलेक्ज़ेण्डरा—इसमें बुराई क्या है ? यह तो तुम लोगों का मामूल है कि सब चीजों को बुरा बताना और खुद कोई काम न करना।

मेरी—स्ट्यूपा ने विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करदी है और उसे अब किसी काम में डालना चाहिए। लेकिन उसके पिता इस बारे में कुछ बोलते ही नही। वह सिवित सर्विस में दाख़िल होना चाहता था, लेकिन उसके पिता कहते हैं कि यह ठीक नहीं है। तब उसने फौजी विभाग में जाना चाहा, लेकिन

उन्होंने यह भी नापसंद किया। तब लड़के ने पिता से पूछा "तब फिर मैं क्या करूं? कहीं न जाकर हल जोतूं?" बापने कहा—"हल क्यों नहीं जोतना चाहिए? सरकारी नौकरी से तो यह हजार दर्जे बेहतर है।" भला वह क्या करे? मेरे पास आया और सलाह पूछने लगा, और मुझे ही यह सब कुछ तय करना पड़ता है। लेकिन फिर भी सब अधिकार तो उन्हीं के हाथ में हैं।

अलेक्जेण्डरा—तुम्हें साफ साफ उनसे यह सब बातें कह देना चाहिए।

मेरी—मुझे यही करना होगा। उनसे यह सब कह ही देना पड़ेगा।

अलेक्जेण्डरा—उनसे स्पष्ट कह दो कि इस तरह गुजारा नहीं हो सकता। मैं अपना काम करती हूँ और तुम्हें अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिए। और इस पर अगर वह राजी न हो तो उसे चाहिए कि वह सब अधिकार तुम्हें सौंपदे।

मेरी—लेकिन यह तो बहुत ही अरुचिकर बात है।

अलेक्जेण्डरा—अगर तुम कहो तो मैं उससे सब बातें कह दूं।

(एक घबड़ाये हुए युवक पुरोहित का प्रवेश। उसके हाथ में एक किताब है। सब से हाथ मिलाता है।)

पुरोहित—मैं निकोलस साहब से मिलने आया हूँ। वास्तव में मैं एक किताब लौटाने आया हूँ।

मेरी—वह शहर गये हैं, मगर अब आते ही होंगे।

अलेक्जेण्डरा—आप कौनसी किताब लौटाना चाहते हैं।

पुरोहित—मि० रेनन का लिखा हुआ क्राइस्ट का जीवन चरित्र है।

पीटर—ओ' गजब ! आप लोग कैसी किताबें पढ़ते हैं ?

पुरोहित—(कुछ विचलित होता है और सिगरेट जलाता है) निकोलस साहब ने मुझे पढ़ने के लिए यह किताब दी थी।

अलेक्जेण्डरा—(हिक़ारत के साथ) निकोलस ने दी ! तो क्या तुम निकोलस और मि० रेनन से सहमत हो ?

पुरोहित—जी नहीं, अगर सचमुच सहमत होता तो वास्तव मे गिरजा का सेवक न रहता।

अलेक्जेण्डरा—लेकिन वास्तव में यदि आप गिरजा के वफादार सेवक हैं तो निकोलस को रास्ते पर क्यों नहीं लाते ?

पुरोहित—सच्ची बात तो यह है कि इस विषय में हरेक आदमी अपनी जुदा राय रखता है और निकोलस साहब के विचारों में वस्तुतः बहुत कुछ सचाई है। सिर्फ वह एक खास—गिरजे के—विषय मे भ्रम में पड़े हुए हैं।

अलेक्जेण्डरा—(हिक़ारत से) निकोलस के ऐसे कौन कौन से विचार हैं जिनमें बहुत कुछ सचाई है। क्या 'पर्वत पर का उपदेश, यह आज्ञा देता है कि हम अपनी सारी जायदाद दूसरे लोगों को दे डालें और अपने कुटुम्ब के लोगों को भिखारी बना दें।

पुरोहित—वास्तव में गिरजा पारिवारिक जीवन को विहित बतलाता है और गिरजा के पूज्यपाद महंतो ने परिवार के लिए आशीर्वाद भी दिया है, लेकिन उच्चतम समुन्नति का, आदर्श-मर्यादा पुरुषोत्तम का जीवन इस बात को चाहता है कि सांसारिक लाभ और पार्थिव ऐश्वर्य का त्याग किया जाय।

अलेक्जेण्डरा—निस्सन्देह साधु-संतों ने तो ऐसा ही किया; किन्तु मैं

समझती हूँ कि साधारण आदमियों को साधारण रूप से ही काम करना चाहिए, जैसा कि सब नेक ईसाइयों को शोभा देता है।

पुरोहित—कोई यह नहीं कह सकता कि उसे क्या नहीं करना होगा।

अलेक्ज़ेण्डरा—आपकी शादी हो गई है?

पुरोहित—जी हाँ।

अलेक्ज़ेण्डरा—आपके कोई बच्चे भी हैं?

पुरोहित—दो।

अलेक्ज़ेण्डरा—तब आप सांसारिक लाभ और पार्थिव ऐश्वर्य को त्याग क्यों नहीं देते और क्यों सिगरेट पीते फिरते हैं?

पुरोहित—यह मेरी कमज़ोरी है। सच पूछिए तो मेरी नालायकी है।

अलेक्ज़ेण्डरा—हाँ, मैं समझी! आप उसको राह पर लाने के बजाय खुद उसके विचारों का समर्थन करते हैं। लेकिन मैं कहे देती हूँ यह बात ठीक नहीं है। (दाई का प्रवेश)

दाई—बच्चा रो रहा है। मिहरबानी करके उसे दूध पिला दीजिए।

मेरी—चलो यह चली। (उठकर जाती है)

अलेक्ज़ेण्डरा—मुझे अपनी बहिन को देखकर बड़ा दुःख होता होता है। बेचारी को कितनी परेशानी हैं। सात बालक हैं। उनमें एक अभी दूध पीता है। तिसपर यह नये नये चोंचले। मुझे तो साफ मालूम होता है कि उसके दिमाग़ में कुछ खलल है। (पुरोहित से) हाँ, ज़रा यह तो बतलाइए कि आप लोगों ने यह कौनसा नया मत निकाला है?

पुरोहित—वास्तव में मुझे मालूम नहीं·······

अलेक्ज़ेण्डरा—अजी बातें न बनाइए। आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं क्या पूछ रही हूँ।

पुरोहित—मगर सुनिए तो········

अलेक्ज़ेण्डरा—मैं पूछती हूँ कि यह कौनसा मत जो हरेक किसान के साथ हाथ मिलाने की आज्ञा देता है और कहता है कि उनको दरख़्त काट लेजाने दो, उनको शराब के लिए पैसे भी दो और अपने परिवार को त्याग दो ?

पुरोहित—यह मैं नहीं जानता········

अलेक्ज़ेण्डरा—वह कहता है कि यही इसाई धर्म है। आप युनानी गिरजे के पुरोहित हैं और इसी लिए आपको मालूम होना चाहिए और बताना चाहिए की क्या वास्तव में ईसाई धर्म डकैती को उत्साहित करता है ?

पुरोहित—लेकिन मैं···········

अलेक्ज़ेण्डरा—और नहीं तो आप पुरोहित क्यों कहलाते हैं। लम्बे बाल क्यों रखते हैं और चोगा क्यों पहिनते हैं ?

पुरोहित—लेकिन यह नहीं कहा है कि···

अलेक्ज़ेण्डरा—नहीं कहा है, बेशक ! पर मैं पूछती हूँ, क्यो ? मुझसे उसने कहा था कि बाइबिल में लिखा है "जो तुमसे मांगे उसे देदो"। लेकिन इसका मतलब क्या है ?

पुरोहित—मैं तो समझता हूं कि इसका मतलब बिलकुल साफ ही है।

अलेक्ज़ेण्डरा—लेकिन मैं समझती हूं कि इसका मतलब स्पष्ट नहीं है। हमे हमेशा यह सिखाया गया है कि प्रत्येक मनुष्य का स्थान ईश्वर ने नियत किया है।

पुरोहित—बेशक, लेकिन फिर भी ·····

अलेक्ज़ेण्डरा—ठीक है यह तो बिलकुल वैसा ही मामला है जैसा

कि मैंने सुना था। आप उसका पक्ष लेते हैं। और यह बिलकुल अनुचित है। यह मैं साफ आपके मुँह पर कहती हूँ। अगर कोई नौजवान स्कूल का मास्टर या कोई छोटा छोकरा उसकी हां में हां मिलाता तो यही बुरा था लेकिन आपको एक पुरोहित की हैसियत से यह ध्यान रखना चाहिए आपके ऊपर कितनी बड़ी ज़िम्मेवारी है।

पुरोहित—मैं कोशिश करता हूं……

अलेक्ज़ेण्डरा—जब वह गिरजा नहीं जाता और जंत्रमंत्र में विश्वास नहीं रखता तो फिर धर्म रहा कहां? और उसको होश में लाने के बजाय उसके साथ आप भी रेनन की पुस्तकें पढ़ते हैं और बाईबिल का मनमाना अर्थ लगाते हैं।

पुरोहित—(उत्तेजित होकर) मैं उत्तर नहीं दे सकता। सच बात तो यह है कि मैं गड़बड़ा गया हूँ और अब मैं कुछ न कहूँगा।

अलेक्ज़ेण्डरा—अगर मै बिशप होती तो तुम लोगो को रेनन पढ़ने का और सिगरेट पीने का मज़ा चखाती।

पीटर—मगर, ईश्वर के लिए ठहरो। भला तुम्हे क्या हक है?

अलेक्ज़ेण्डरा—मेहरबानी करके आप मुझे आप सिखाइए मत। मुझे विश्वास है कि आप—हमारे पूज्य पुरोहित—मुझसे नाराज़ नही हैं। क्या हुआ अगर मैंने साफ साफ बातें कीं। यह तो और भी बुरा होता अगर मैं गुस्से को दिल ही में रहने देती। ठीक है न?

पुरोहित—क्षमा कीजिएगा, यदि मैं समुचित रूप से अपने विचारों को प्रकट न कर सका होऊँ। (खामोशी; ल्यूबा और लिसा का

प्रवेश—ल्यूब मेरी की एक २० वर्ष की खूबसूरत और फुर्तीली लड़की, लिसा अलेक्ज़ेण्डरा की लड़की। उम्र में वह ल्यूबा से कुछ बड़ी है। उनके हाथ मे रुमाल है और फूल लेने के लिए छोटी छोटी डलियाँ भी लिये हुए हैं। दोनों अलेक्ज़ेण्डरा पीटर और पुरोहित को प्रणाम करती हैं।)

ल्यूबा—माँ कहाँ हैं ?

अलेक्ज़ेण्डरा—अभी बच्चे के पास गई है।

पीटर—देखो बहुत से अच्छे अच्छे और सुन्दर फूल लाना। आज सबेरे एक मालिन की लड़की अच्छे अच्छे सफेद फूल चुन कर लाई थी। मैं खुद भी तुम्हारे साथ चलता, मगर गर्मी बहुत है।

लिसा—चलिए चलिए पिताजी, आप भी चलिए।

अलेक्ज़ेण्डरा—हाँ, जाओ, तुम बहुत मोटे हो रहे हो।

पीटर—अच्छा, चलता हूँ, मगर पहले सिगरेट लेता आऊँ।

(जाता है)

अलेक्ज़ेण्डरा—सब बच्चे कहाँ हैं ?

ल्यूबा—स्ट्यूपा तो साईकल पर स्टेशन गया है क्योंकि उसके मास्टर पिताजी के साथ शहर गये हैं, छोटे बच्चे गेंद खेल रहे हैं और वानिया बाहर बराम्दे में कुत्तों के साथ खेलता है।

अलेक्ज़ेण्डरा—हाँ, तो स्ट्यूपा ने कुछ फैसला किया है ?

ल्यूबा—हाँ, वह "अश्व-रक्षकों" में भरती होने के लिए खुद ही अर्जी देने गया था। कल वह पिताजी से बहुत बिगड़ पड़ा था।

अलेक्ज़ेण्डरा—इसमें शक नहीं कि बेचारा बड़ी मुश्किल में है। ... मानवी सहनशीलता की भी आखिर एक हद है। अब

वह सयाना हुआ है। रोजी का सिलसिला देखना है और उससे कहा जाता है कि हल जोतो।

ल्यूबा—पिताजी ने यह तो नहीं कहा था; उन्होंने तो कहा था…

अलेक्जेण्डरा—कोई हर्ज नहीं। फिर भी स्ट्यूपा को अब जीवन में श्रीगणेश करना ही होगा और जिस बात को वह चाहता है उसी में आपत्ति उठाई जाती है। लेकिन वह तो यहीं आरहा है। (पुरोहित एक तरफ हट कर, किताब खोलकर पढ़ने लगता है। स्ट्यूपा का बराम्देकी तरफ साईकल पर प्रवेश)

अलेक्जेण्डरा—तुम्हारी उमर बहुत बड़ी है। हम लोग अभी तुम्हारी ही बातें कर रहे थे कि इतने में तुम आ गये। ल्यूबा कहती है कि कल तुम अपने पिताजी से बिगड़ पड़े थे।

स्ट्यूपा—बिलकुल नहीं, कोई ऐसी बात नहीं हुई। उन्होंने अपने विचार प्रकट किये और मैंने अपने। अगर हमारे विचारों में अंतर और फेर है तो इसमें मेरा दोष नहीं है; ल्यूबा को तो आप जानती ही हैं, वह समझती तो खाक नहीं, लेकिन दखल हर बात में देती है।

अलेक्जेण्डरा—अच्छा तो तुमने क्या फैसला किया है।

स्ट्यूपा—पता नहीं, पिता जी ने क्या निश्चय किया। मुझे भय है कि उन्होने अभी तक इसका निश्चय नहीं किया है लेकिन मैंने "अश्व-रक्षकों" में सम्मिलित होने का फैसला कर लिया है। हमारे घर में तो हरेक बात पर कोई न कोई खास ऐतराज किया जाता है। लेकिन यह तो बिलकुल सीधीसी बात है। मेरा पढ़ना समाप्त हो गया है; इसलिए अब कुछ न कुछ काम तो करना ही होगा। फौज में भरती होना और

निम्नश्रेणी के शराबी अफसरों के साथ रहना अरुचिकर होगा। इसीलिए मैं "अश्व-रक्षकों" में भरती हो रहा हूँ जहाँ मेरे कुछ दोस्त भी हैं।

अलेक्ज़ेण्डरा– ठीक है, लेकिन तुम्हारे बाप इस बात पर राजी क्यों नहीं होते ?

स्ट्यूपा—मौसी ! उनका जिक्र करने से क्या फायदा ? उनको तो एक तरह की धुन लगी है। उनको अपनी बातों के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं पड़ता। वह कहते हैं, कि फौजी मुलाज़मत सबसे नीच वृत्ति है। इसलिए उसमें किसी को न जाना चाहिए, और इसीलिए वे मुझे रुपया नहीं देते।

लिसा—नहीं, स्ट्यूपा ! उन्हाने यह नहीं कहा। तुम्हे याद है मैं उस वक्त वहाँ मौजूद थी। वे कहते थे कि जब ज़रूरत पड़े और तुम बुलाये जाओ तब लाचारी की हालत में फ़ौजी खिदमत अन्जाम दे सकते हो। लेकिन इस तरह खुद बखुद अपनी इच्छा से भरती होना तो ठीक नहीं है।

स्ट्यूपा—लेकिन नौकरी करने मैं जाता हूँ, कुछ वह तो जाते नहीं ? वह खुद भी तो फौज में रहे थे।

लिसा—मगर उन्होंने यह तो नहीं कहा कि वह रुपया नहीं देंगे; बल्कि उन्होंने कहा था कि वह एक ऐसे काम में भाग नहीं ले सकते जो कि उनके विचारों के विरुद्ध है।

स्ट्यूपा—इसमें विचार और विश्वास का कोई काम नहीं है। कोई सेवा करना चाहता है—बस यही काफी है।

लिसा—मैंने जो कुछ सुना वह कह दिया।

स्ट्यूपा—मुझे मालूम है कि तुम हमेशा पिताजी से सहमत रहती हो।

आप जानती हैं मौसी, लिसा हर वात में पिताजी की तरफ़-दारी करती है।

लिसा—जो वात सच्ची है ....

अलेक्ज़ेण्डरा—मैं जानती हूँ कि लिसा हर तरह की वेवकूफी में भाग लेने को तैयार हो जाती है। वेवकूफी तो उसे वू आती है और वह उसे दूर से ही सूँघ कर पहचान लेती है।

(लाल कमीज़ पहने हुए एक हाथ में तार लिये वानिया का दौड़ते हुए प्रवेश। उसके पीछे कुत्ते भी आते हैं।)

वानिया—(ल्यूवा से वताओ देखें, कौन आता है ?

ल्यूवा—वताने से क्या फ़ायदा ? लाओ तार मुझे दो।

(तार लेने को वानिया की तरफ हाथ फैलाती है; वह तार नहीं देता है।)

वानिया—मैं तुम्हें यह तार नहीं दूंगा और न यही वतलाऊँगा किसने भेजा है। हाँ, यह एक ऐसे आदमी के पास से आया है, जिससे तुम शरमाती हो।

ल्यूवा—वाहियात ! किसने भेजा है ? मौसी, तार कहाँ से आया है ?

अलेक्ज़ेण्डरा—चेरमशनोव्स के पास से।

ल्यूवा—ओह !

वानिया—देखो देखो, तुम शरमाती क्यों हो ?

ल्यूवा—मौसी, ज़रा तार देखूँ ? (पढ़ती है) "हम तीनों जने डाकगाड़ी से आ रहे हैं—चेरमशनोव्स।" इसके मानी है शाहज़ादी साहवा वोरिस और टानिया; ठीक है, वड़ी ख़ुशी की वात है।

वानिया—अहा तुम्हें खुशी हो रही है; स्ट्यूपा, देखो तो वह कितनी शरमा रही है।

स्ट्यूपा—इतना बस है—बार-बार दिक करना ठीक नही।

वानिया—तुम टानिया को चाहते हो न ? तुम लोगों को लाटरी डालना होगी; क्योकि दो आदमी एक दूसरे की बहिन को नही ब्याह सकते।

स्ट्यूपा—चुप रहो, बको मत, कितनी बार तुम्हे मना किया है ?

लिसा—यदि वे डाकगाड़ी से ही आते हैं तब तो वे थोड़ी देर में आने वाले हैं।

ल्यूबा—यह ठीक है, तब हम फूल चुनने को नही जा सकते।

(पीटर सिगरेट लिये हुए आता है)

ल्यूबा—मौसाजी, अब हम लोग नही जांयगे।

पीटर—क्यों ?

ल्यूबा—चेरमशनोव्स आ रहे हैं। अच्छा है, आओ हम लोग तबतक टेनिस खेलें। क्यो स्ट्यूपा तुम भी खेलोगे न ?

स्ट्यूपा—हाँ, तैयार हूँ।

ल्यूबा—वानिया और मैं एक तरफ और तुम और लिसा दूसरी तरफ—क्यो राजी हो न ? अच्छा तो मै गेंद ले आऊँ और छोकरों को भी बुला लाऊं। (जाती है)

पीटर—तो आखिर मुझे यहीं ठहरना पड़ा।

पुरोहित—(जाना चाहता है) मेरा आदाब-अर्ज है।

अलेक्जेण्डरा—नहीं पुरोहितजी, जरा ठहरिए, मैं अभी आप से बात करना चाहती हूँ और दूसरे निकोलस भी अब आता होगा।

पुरोहित—(बैठता है और सिगरेट जलाता है) शायद उन्हें आने में देर लगे।

अलेक्जेण्डरा—वह देखिए, कोई आ रहा है। मैं समझती हूँ निकोलस ही है।

पीटर—चेरमशनोव खानदान के लोग हैं। कहीं गालिटजन की लड़की तो नहीं है?

अलेक्जेण्डरा—हाँ, हाँ, यह तो वही चेरमशनोव ही है जो अपना फूफी के साथ रोम में रहता था।

पीटर—ओहो! मुझे उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता होगी। मैं उनसे उस समय के बाद नहीं मिला हूँ जब हम रोम में साथ साथ गज़लें गाया करते थे। वह बहुत अच्छा गाती थीं। उसके दो बच्चे भी हैं न?

अलेक्जेण्डरा—हाँ, वे दोनों बच्चे भी आ रहे हैं।

पीटर—मुझे नहीं मालूम था कि सरियन्सव खानदान के साथ उन लोगों की इतनी घनिष्टता है।

अलेक्जेण्डरा—घनिष्टता तो नहीं लेकिन पारसाल वे लोग बाहर परदेश मे कहीं एक साथ ठहरे थे। शाहज़ादी ने ल्यूबा को अपने बेटे के लिए पसंद किया है, वह होशियार है, जानती है, कि इतना दहेज़ और कहां मिलेगा!?

पीटर—लेकिन चेरमशेनव ख़ानदान खुद भी तो अमीर था।

अलेक्जेण्डरा—अमीर था, किसी जमाने में। शाहज़ादा अब भी जिन्दा है मगर उसने सब कुछ बरबाद कर दिया है। वह शराबी है, और बिलकुल तबाह होगया है। शाहज़ादी ने बादशाह के पास अर्ज़ी भेजी, अपने पति को छोड़ दिया और

इस तरह से वह थोड़ा बहुत बचा सकी है। लेकिन उसने अपने बच्चो को शिक्षा अच्छी दी है, यह तो मानना पड़ेगा। लड़की गाने मे निपुण है। लड़का सुन्दर तथा होनहार है और उसने विश्वविद्यालय की शिक्षा भी समाप्त कर ली है। मगर मैं समझती हूँ कि मेरी बहुत खुश नही है। इस वक्त मिहमान का आना ज़रा कष्ट-प्रद है। यह लो निकोलस भी आगया। (निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—चित्त तो प्रसन्न है, अलीना (अलेक्जेण्डरा का छोटा नाम) और पीटर साहब आपका मिजाज़ तो मुबारक !' (पुरोहित को देखकर) ओहो ! वासिली साहब हैं।'

(सब से हाथ मिलाता है।)

अलेक्जेण्डरा—इसमें अभी कुछ काफी और बची है, क्या एक प्याले में दूँ ? ज़रा ठंढी होगई है मगर अभी गरम हुई जाती है। (घंटी बजाती है)

निकोलस—नहीं, कोई जरूरत नही, मैं कुछ खा-पी चुका हूँ मेरी कहाँ है ?

अलेक्ज़ेण्डरा—बच्चे को दूध पिलाने गई है।

निकोलस—वह अच्छी तरह तो है ?

अलेक्ज़ेण्डरा—हाँ अच्छी तरह है। तुम अपना काम कर आये ?

निकोलस—कर आया। देखो, अगर कुछ चाय या काफी बची हो तो मुझे दीजिए। (पुरोहित से) अच्छा आप पुस्तक वापस लाये हैं ? आपने उसे पढ़ लिया ? घर आते वक्त रास्ते में मैं आपके ही विषय में सोच रहा था। (एक नौकर प्रवेश करता है और सबको सलाम करता है। निकोलस उससे

हाथ मिलाता है। अलेक्ज़ेण्डरा अपनी आंख से पति को इशारा करती है।)

अलेक्ज़ेण्डरा—ज़रा इस सामवार को (केटली की तरह का तांबे का वर्तन जो चाय बनाने के काम में आता है) गरम करलो।

निकोलस—इसकी ज़रूरत नहीं। वास्तव में तो वह मुझे नहीं चाहिए; मैं जैसी है वैसी ही पिलूँगा।

(मिसी अपने पिता को देखकर गेंद खेलना छोड़ दौड़ती हुई आती है और उससे लिपट जाती है।)

मिसी—पिताजी हमारे साथ चलो।

निकोलस—(पीठ पर हाथ फेरते हुए) अभी चलता हूँ। ज़रा मैं कुछ खालूँ। तुम चलो, खेलो, मैं जल्दी आऊंगा।

(मिसी का प्रस्थान) (निकोलस मेज़ के पास बैठ जाता है और चाव के साथ खाता पीता है।)

अलेक्ज़ेण्डरा—हाँ तो क्या, उन्हे सज़ा होगई?

निकोलस—हाँ, सज़ा होगई। उन्होंने खुद जुर्म इक़बाल कर लिया (पुरोहित से) मैंने समझा था कि आपको रेनन के विचारों पर पूरा यकीन नहीं आयगा।

अलेक्ज़ेण्डरा—और तुमने फैसले को पसंद नहीं किया?

निकोलस—(झुंझलाकर) बेशक, मैं उसे पसंद नहीं करता। आपके सामने मुख्य प्रश्न ईसा के देवत्व या क्रिश्चियानिटी के इतिहास का नही बल्कि गिरजे का है.......

अलेक्ज़ेण्डरा—तो क्या हुआ; उन्होंने तो अपने जुर्म का इक़बाल किया और तुमने कहा कि नहीं यह ठीक नहीं है, तो उन्होंने लकड़ी चुराई नही बल्कि उसे ले लिया?

निकोलस—(पुरोहित से बोलते बोलते दृढ़ता के साथ अलेक्ज़ेण्डरा की ओर घूमकर) प्यारी आलीना, तुम इस तरह की चुटकियाँ लेकर मेरे दिलमें सूइयाँ क्यों चुभाती हो ?

अलेक्ज़ेण्डरा—बिल्कुल नहीं······

निकोलस—अगर आप वास्तव में जानना चाहती हैं कि मैं किसानों को, सिर्फ उस लकड़ी के लिए जिसकी उन्हें जरूरत थी और वे काट लाये थे, फंसाकर क्यों तकलीफ नहीं दे सकता········

अलेक्ज़ेण्डरा—मैं समझती हूँ कि शायद उन्हे इस सामवार की भी ज़रूरत होगी।

निकोलस—अगर आप जानना चाहती हैं कि मैं क्यों किसानों को महज़ इसी बात के लिए कि उन्होंने उस जंगल से दस दरख्त काट डाले जिसे लोग मेरा कहते हैं, कैद में डालने के लिए और उनकी जिंदगी बरबाद करने के लिए राज़ी नहीं होता···········

अलेक्ज़ेण्डरा—सब आदमी ऐसा कहते हैं।

पीटर—यह लो, फिर वही बहस करने लगीं।

निकोलस—यदि थोड़ी देर के लिए मान भी लूँ, जैसा कि मैं नहीं कर सकता, कि वह जंगल मेरा है, तो हम लोगों के पास ३००० एकड़ जमीन है जिसमें फी एकड़ १५० दरख्त होंगे। सब मिलाकर ४५०००० दरख्त हुए—ठीक है न ? अब देखो कि उन्होंने उसमें से १० पेड़ काट डाले—यानी ४५ हजारवां हिस्सा। जरा सोचिए तो सही कि क्या यह

मुनासिब है और क्या वास्तव में कोई मनुष्य इस बात को पसंद करेगा कि इस छोटी सी बात के लिए एक बेचारे ग़रीब आदमी को उसके परिवार से बेरहमी के साथ जुदा करके जेल मे डाल दिया जाय ?

स्ट्यूपा—लेकिन अगर आप इस ४५ हजारवें हिस्से को सुरक्षित नहीं रक्खेंगे तो बाकी ४४९९० दरख्त भी शीघ्र ही काट डाले जांयगे।

निकोलस—लेकिन यह तो मैंने मौसी को जवाब देने के लिए कहा था। वास्तव में तो मेरा इस जंगल पर कोई हक़ नहीं है। ज़मीन हरेक आदमी की है या यों कहिये कि वह किसी की मिलकियत नहीं है। हमने इस जंगल के लिए कभी कोई मिहनत नहीं की।

स्ट्यूपा—नहीं, लेकिन आपने रुपया बचाया और इस जंगल की रखवाली की जो ?

निकोलस—मैंने रुपया कहां से बचाया, और वह बचत कैसे हुई ? इसके अलावा मैंने जंगल की रखवाली नहीं की। लेकिन यह एक ऐसी बात है कि जो बहस के ज़रिये से साबित नहीं की जा सकती। उस शख्स को कि जो अपनी हरकत से खुद शरमिंदा नहीं होता है, जब कि वह किसी दूसरे आदमी को मारता है...............

स्ट्यूपा—लेकिन यहां तो कोई किसी को मारता नहीं।

निकोलस—लेकिन जिस तरह एक आदमी खुद कोई काम न करके दूसरों से अपनी गुलामी कराने में शर्म महसूस नहीं करता और कोई शख्स इस बात को उसके सामने साबित

नहीं कर सकता कि उसे अपनी हरकत पर लज्जित होना चाहिए; ठीक इसी तरह दूसरा आदमी इस बारे में हमारी भूल साबित करके हमें लज्जित नही कर सकता। और तुमने कॉलेज मे जो अर्थ-शास्त्र पढ़ा है उसका एकमात्र उद्देश्य यहीं है कि वह यह बात साबित कर दिखावे कि हम लोग जिस स्थिति में अपना जीवन व्यतीत करते हैं वह ठीक है।

स्ट्यूपा—लेकिन, इसके विपरीत, साइन्स हर तरह के वहमों को दूर करता है।

निकोलस—खैर, ये सब बातें जरूरी नहीं हैं। जरूरी यह है कि अगर मैं यक़ीम (किसान का नाम) की जगह होता तो मैं भी वैसा ही करता जैसा कि उसने किया है। और अगर मुझे कैद हो जाती तो मैं न जाने क्या कर बैठता? अ र चूँकि मैं दूसरो के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहता हूँ जैसा कि मैं चाहता हूँ कि वे मेरे साथ करें—इसलिए मैं उसे सजा नहीं दे सकता बल्कि जहां तक होगा बचाने की ही कोशिश करूँगा।

पीटर—मगर इस तरह से तो कोई आदमी किसी भी चीज़ को अपने पास नहीं रख सकता।

(अलेक्ज़ेण्डरा और स्ट्यूपा दोनों एक साथ बोलते हैं)

अलेक्ज़ेण्डरा—तब तो काम करने के बनिस्बत चोरी करना कहीं अधिक फायदेमन्द है।

स्ट्यूपा—आप किसी की दलीलों का उत्तर तो देते ही नहीं। मैं कहता हूँ, जो आदमी रुपया बचाता है उसे अपनी बचत से लाभ उठाने का अधिकार है।

निकोलस—(हँसकर) समझ में नहीं आता कि किसकी बातका मैं जवाब दूँ। (पीटर से) हाँ, यह सच है कि किसी को कोई भी चीज़ अपने पास नहीं रखनी चाहिए।

अलेक्ज़ेण्डरा—लेकिन कोई चीज़ अपने पास न रक्खी जाय इसका अर्थ तो यही होता है कि कोई भी आदमी कपड़ा लत्ता यहां तक कि रोटी का टुकड़ा भी अपने पास नहीं रख सकता—सब दूसरों को दे डालना चाहिए और तब तो मनुष्यों का जीवन भी असंभव हो जायगा।

निकोलस—लेकिन जीवन-निर्वाह असंभव तो यह होना चाहिए जैसी कि हम अपनी जिंदगी बसर करते हैं।

स्ट्यूपा—दूसरे शब्दों में इसका मतलब यह हुआ कि हम लोगों को मर जाना चाहिए और इसलिए यह शिक्षा जीवन के काम की नहीं........

निकोलस—नहीं, लेकिन शिक्षा इस लिए दी जाती है कि मनुष्य जीवित रहना सीख सकें। हाँ; यह भी ठीक है कि हम को सब कुछ दे डालना चाहिए न केवल जंगल ही, जिसका हम कोई उपयोग नहीं करते और शायद ही कभी जिसकी देखभाल करते हों, बल्कि अपने कपड़े और खाना तक दे डालना चाहिए।

अलेक्ज़ेण्डरा—और बच्चों का खाना भी ?

निकोलस—हाँ, हाँ, बच्चों का भी ! और सिर्फ खाना ही नहीं बल्कि खुद अपने आपको भी। यही तो ईसा की शिक्षा है। हमें अपने पूरे बल के साथ दूसरों के लिए अपने को कुर्बान करने की—संपूर्ण आत्मत्याग करने की चेष्टा करनी चाहिए।

स्ट्यूपा—इसके मानी होते हैं मरने के लिए।

निकोलस—हाँ, यदि तुम अपने मित्रों के लिए जान तक निसार कर दो तो यह भी तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तो के लिए अच्छा होगा। लेकिन असली बात तो यह है कि मनुष्य केवल आत्मा ही नही है बल्कि शरीर-स्थित आत्मा है। माँस-मज्जा का बना हुआ यह शरीर जहाँ उसे केवल अपने ही लिए जीने का अनुरोध करता है तहाँ आत्मा उससे ईश्वर के लिए तथा परोपकार-मय जीवन व्यतीत करने के लिए जीने का अनुरोध करती है। हमारा जीवन केवल पाशविक ही नहीं है बल्कि पाशविक और आत्मिक दोनों के बीच मे है। सो वह जितना ही ईश्वर के निकट होगा उतना ही अधिक अच्छा है। हमारी पशु-प्रवृत्ति तो शरीर की रखवाली करने से चूकने की नही।

स्ट्यूपा—तब बीच ही का रास्ता क्यों पसंद करें—अधर मे क्यों रहें—अगर ऐसा ही करना उचित है तो सभी चीजें देकर मर क्यों न जाना चाहिए ?

निकोलस—यह तो बहुत ही अच्छा और शानदार होगा। जरा करके देखो। और फिर तो यह तुम्हारे लिए और दूसरों के लिए—सभी के लिए—श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

अलेक्जेण्डरा—नहीं, यह ठीक नहीं। इसमें न तो स्पष्टता है, न सरलता। इसमें तो हद से ज्यादा बारीकी है।

निकोलस—इसके लिए तो अब और मैं कुछ नहीं कर सकता। और यह बात दलील देकर साबित नहीं की जा सकती। मगर जो कुछ हो अभी तो इतना ही काफी है।

स्ट्यूपा—हाँ, बिलकुल ठीक है। मेरी भी समझ में यह बात नहीं आती है।

(जाता है)

निकोलस—(पुरोहित की तरफ घूम कर) कहिए, किताब का आप के ऊपर कैसा असर पड़ा ?

पुरोहित—(उत्तेजित होकर) किस तरह बताऊँ ? सुनिए, पुस्तक का ऐतिहासिक भाग लिखा तो ठीक ठीक गया है, पर न तो उससे पूरा यकीन ही होता और न, कहना चाहिए वह पूरी तरह विश्वसनीय ही है। क्योंकि वास्तव में उसके लिए पर्याप्त सामग्री ही नहीं मिलती। रहा ईसा के देवत्व और अदेव-त्व का प्रश्न; सो यह इतिहास से कभी हल नहीं किया जा सकता। उसके लिए तो एक ही अकाट्य प्रमाण है।

(इसी बातचीत के बीच में पहले तो स्त्रियां और फिर पीटर बाहर चले आते हैं।)

निकोलस—आपका मतलब गिरजा से है ?

पुरोहित—हाँ, बेशक गिरजा तो हुई है, पर साथ ही विश्वसनीय लोगों के, जैसे कि साधु-सन्तों के प्रमाण भी है।

निकोलस—इसमें संदेह नहीं, कि अगर विश्वास करने के लिए कुछ भ्रम-रहित लोगो के समूह का अस्तित्व होता तो बहुत ही अच्छा होता—बहुत वांच्छनीय होता। लेकिन उनकी वांच्छ-

नीयता से यह सिद्ध नहीं होता कि ऐसे लोग मौजूद हैं।

पुरोहित—मगर में समझता हूँ कि उनके अस्तित्व की वांच्छनीयता और उपयोगिता ही उनके अस्तित्व का प्रमाण है। प्रभु ईसा मसीह ने अपने कानून को इसलिए संसार में प्रकट नहीं किया होगा कि वह नष्ट-भ्रष्ट होजाय वल्कि वास्तव में अपने सत्य की रक्षा के लिए और उसे नष्ट-भ्रष्ट होने से बचाने के लिए अवश्य ही कोई न कोई संरक्षक छोड़ गये होंगे।

निकोलस—अच्छा, समझा, पर अब तक तो हमने सत्य को सिद्ध करने की चेष्टा की और अब सत्य के संरक्षक के अस्तित्व की संभावना को सिद्ध करने का उद्योग करते हैं, और शायद भविष्य में हमें उसकी प्रामाणिकता साबित करनी होगी।

पुरोहित—इसके लिए सच पूछिए तो श्रद्धा की जरूरत है।

निकोलस—श्रद्धा की? हाँ, बेशक—श्रद्धा की ज़रूरत है। श्रद्धा के बिना काम नहीं चल सकता। मगर हमें श्रद्धा दूसरों के कहने पर नहीं, बल्कि हम खुद जो कुछ देखकर सोच विचार कर बुद्धि के द्वारा निश्चय करें, उसमे रखनी चाहिए। हमें श्रद्धा रखनी चाहिए ईश्वर में, सत्य और अविनाशी जीवन में।

पुरोहित—बुद्धि धोखा दे सकती है, क्योंकि हरेक का दिमाग जुदा जुदा होता है।

निकोलस—(तेज़ी से) यही तो बड़ा भारी कुफ़्र है। ईश्वर ने सत्य को जानने के लिए हमें यही तो एक पवित्र साधन दिया है; और यही एक साधन है सब को एकता के सूत्र में बांधने का और हम उसीका विश्वास नहीं करते हैं।

पुरोहित—जब कि उसके निश्चयो में ही पारस्परिक विरोध है तब हम उस पर किस तरह विश्वास करें ?

निकोलस—विरोध है कहाँ ? क्या इसमें विरोध है कि दो और दो मिलकर चार होते हैं या इसमें भी विरोध है कि हमें दूसरों के साथ वह काम नहीं करना चाहिए जिसे हम चाहते हैं कि दूसरे लोग हमारे साथ न करें ? और क्या इसमें भी किसी को विरोध है कि प्रत्येक कार्य के साथ कारण होता है ? इस प्रकार की सचाइयों को हम सब लोग मान लेते हैं क्योंकि यह हमारी बुद्धि के अनुकूल है। लेकिन यह कि खुदा कोहेनूर पर हजरते मूसा से मिला, बुद्धदेव एक सूर्य रश्मि पर चढ़कर आसमान में उड़ गये और मुहम्मद साहब आस्मान को चले गये और ईसा-मसीह भी उड़कर वहीं गये—इस किस्म की बातों पर हम लोगों में मतभेद है।

पुरोहित—नहीं, हम लोगो में मतभेद नही है। जो लोग सत्य धर्म में विश्वास रखते हैं वे सब सम्मिलित होकर ईसा और ईश्वर मे श्रद्धा और भक्ति रखते हैं।

निकोलस—नहीं, इस विषय में भी आप सब लोगो में एकता नहीं है। सब जुदा जुदा रास्ते पर जा रहे हैं। तब फिर मैं एक बुद्ध लामा के वचनों पर विश्वास न करके आपकी ही बातों पर क्यों विश्वास करूँ ? क्या सिर्फ इसीलिए मेरा जन्म आपके मजहब में हुआ है ?

(टेनिस खेलने वाले झगड़ते हैं)

"आउट !" "नाट आउट" !

वानिया—मैंने देखा········

(इसी बातचीत के दरम्यान नौकर लोग मेज पर चाय और काफी ला रखते हैं।)

निकोलस—आप कहते हैं कि गिरजा लोगों को परस्पर मिलाता है मगर इसके बरखिलाफ गिरजे के बदौलत तो भारी भारी झगड़े पैदा होते रहे हैं।

"कितनी बार मैंने तुम्हें एकत्र करना चाहा, जिस तरह कि एक मुर्गी अपने बच्चों को इकट्ठा करती है......"।

पुरोहित—यह तो ईसा के पहले की बात है, उसने तो फिर सब को इकट्ठा किया।

निकोलस—हाँ, मैं मानता हूँ कि ईसा ने उन्हे मिलाया—एकत्र किया, मगर हम लोगो ने फूटका बीज बोया, क्योंकि हमने उनकी शिक्षा का उल्टा मतलब समझा है। ईसाने तो गिरजा-घरो का नाश किया है।

पुरोहित—क्यों, उन्होंने एक जगह यह नही कहा है—

"जाओ गिरजा से कहो।"

निकोलस—यहां शब्दों का प्रश्न नही है। इसके अलावा इन शब्दों का तात्पर्य उससे नहीं है जिसे हम लोग आज कल "गिरजा" कहते हैं। हमें तो उपदेशो का जो भाव होता है उसी की आवश्यकता है। ईसा मसीह की शिक्षा विश्व-व्यापी है, उसमें सब धर्मों का समावेश है। वह किसी एकांत अद्भुत और असंगत बात को नहीं मानती है, न वह पुनरु-त्थान को मानती है और न ईसा के देवत्व ही में विश्वास

रखती है। वह मंत्र जंत्रादि ऐसी बातों का प्रचार नहीं करती जो आपस में फूट डालती हों।

पुरोहित—गुस्ताखी माफ करें, मैं समझता हूँ कि यह तो आपने ईसा की शिक्षा का यह अर्थ अपनी तरफ से ही मतलब निकाला है। प्रभु मसीह की शिक्षा की बुनियाद तो वास्तव में उनके देवत्व और पुनरुत्थान पर ही है।

निकोलस—गिरजाघरों के विषय मे यही तो वड़ी भयानक बात है। वे लोग इस बात की घोषणा करते हैं कि संपूर्ण अकाट्य और अचूक सत्य उनके अधिकार में है और लोगो में अन्तर डालते है। देखिए अगर मैं यह कहूँ कि ईश्वर एक है और वह इस समस्त विश्व का एक मूल कारण है तो प्रत्येक पुरुष मुझ से सहमत हो सकता है और ईश्वर की यह परिभाषा हमें एकत्र करने मे कारण भूत हो सकती है, लेकिन अगर मै यह कहूँ कि ईश्वर एक है परन्तु वह ब्रह्म है या जिहोवा है या त्रिमूर्ति है तो इस प्रकार के भाव से लोगों में भेद उत्पन्न होता है। मनुष्य मेल चाहते हैं एकता चाहते हैं और इसके लिए तरह-तरह की युक्तियां भी खोज निकालते हैं किन्तु मेल और एकता का मात्र असंदिग्ध साधन—सत्य और प्रेम कि खोज—को भूल जाते हैं। यह तो ऐसा ही है जैसे की सूरज की रोशनी को छोड़कर कोई घर की अंधेरी कोठरी में चिराग़ जलाकर एक दूसरे को पहचानने की चेष्टा करे।

पुरोहित—लेकिन जब तक कोई निश्चित सत्य न हो तब तक लोगो की रहनुमाई क्यों कर हो सकती है?

निकोलस—यही तो आफत है। हम में से प्रत्येक को अपनी अपनी आत्मा की रक्षा करनी है और स्वयं अपने आप ईश्वर का काम करना है। लेकिन इसके बजाय हम अपना समय लगाते हैं दूसरो को बचाने और उनको सिखाने में। और हम उन्हे इस उन्नीसवीं सदी के अन्त मे सिखाते क्या हैं? हम उन्हें सिखाते हैं कि ईश्वर ने छः दिन में दुनिया पैदा की, फिर एक तूफान आया और उसने सब जीवों को एक नाव में बिठाकर उन्हे बचाया आदि और ऐसी "ओल्ड-टेस्टामेन्ट" की तरह-तरह की भयंकर और वाहियात बातें सिखाई जाती हैं। इसके आगे फिर बताते हैं कि ईसा ने सब को पानी से बपतिस्मा दिया और इसके बाद पापो के निराकरण के भ्रम पूर्ण सिद्धान्तों पर यह कहकर विश्वास दिलाया जाता है कि वे मुक्ति के लिए आवश्यक हैं। और पश्चात् यह बताया जाता है कि वह उड़कर स्वर्ग मे चला गया कि जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व ही नहीं है, और वहां जाकर वह अपने स्वर्गीय पिता के दाहिनी तरफ बैठ गया। हम लोग इसके आदी होगये हैं वरना सच पूछिए तो यह बड़ी ही भयंकर बात है। एक बच्चा, जिसका दिमाग़ साफ और ताजा है और अच्छी शिक्षा को पाने के लिए तैयार है, पूछता है कि यह दुनिया कैसी है, इसके नियम क्या हैं? और हम लोग सत्य और प्रेम की शिक्षा का प्रकाश डालने के स्थान पर चालाकी के साथ उसके दिमाग़ मे तरह-तरह की वाहियात बातें भर देते हैं। क्या यह भयानक नहीं है? यह तो एक इतना बड़ा पाप और अप-

राध है कि जितना संसार में हो सकता है। और हम और आपका गिरजा यही करते हैं। बस माफ कीजिए !

पुरोहित—यदि ईसा की शिक्षा को बुद्धि की दृष्टि से देखा जाय तब तो वह ऐसी ही है।

निकोलस—चाहे जिस दृष्टि से देखिए यह बात ऐसी ही है।

(खामोश होजाता है)

(अलेक्जेण्डरा का प्रवेश, पुरोहित जाने के लिए उठता है और नमस्कार करता है)

अलेक्जेण्डरा—नमस्कार ! आप निकोलस की बातें न सुनिए वह आपको बहका देगा।

पुरोहित—धर्म पुस्तकों का मंथन कर हमें इस बात का निर्णय करना चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि यह मामला निहायत ज़रूरी है और योंही छोड़ देने लायक नहीं है।

(जाता है)

अलेक्जेण्डरा—सचमुच निकोलस तुम्हें उस पर ज़रा भी रहम नहीं आता। यद्यपि वह है पुरोहित लेकिन फिर भी अभी लड़का ही है ? क्या तुम उसे कोई निश्चित विचार नहीं दे सकते ?

निकोलस—क्या उसे माया जाल में फंसकर सर्वथा विनिष्ट हो जाने दूँ ? नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा। इसके अलावा वह एक नेक और इमान्दार आदमी है।

अलेक्जेण्डरा—लेकिन यदि वह तुम्हारी बातें मानले तो उसका क्या परिणाम होगा ?

निकोलस—उसे मेरी बात मानने की जरूरत नहीं। लेकिन यदि वह सत्य को खोज लेगा तो यह उसके तथा और अन्य लोगों के लिए भी अच्छा होगा।

अलेक्जेण्डरा—यदि वास्तव में यह बात ठीक होती तो प्रत्येक आदमी तुम्हारी बात मानने के लिए तैयार हो जाता; लेकिन इस वक्त तो कोई भी नहीं मानता, यहां तक कि खुद तुम्हारी पत्नी ही उसपर विश्वास नहीं करती।

निकोलस—यह आपसे किसने कहा ?

अलेक्जेण्डरा—अच्छा, उसे समझा कर देखो तो ? वह कभी इस बात को न समझ सकेगी। और दुनिया का कोई आदमी इस बात पर यकीन नहीं कर सकता कि दूसरे लोगो की तो खबरगीरी रखनी चाहिए और अपने बाल-बच्चों को छोड़ देना चाहिए। ज़रा जाकर मेरी को यह बात समझाओ तो सही !

निकोलस—हां, हां, मेरी अवश्य इस बात को समझेगी। मगर माफ करना अलीना, सच्ची बात तो यह है कि अगर दूसरे लोग अपना प्रभाव डाल कर उसे न भड़काते तो वह अवश्य इस बात को समझती, इस पर विश्वास करती और मेरे कहने के अनुसार काम भी करती।

अलेक्जेण्डरा—यफिम और उसके जैसे नशेबाज लोगों की खातिर तुम्हारे बच्चो को भिखारी बनाने के लिए ? कभी नहीं ! अगर तुम इससे नाराज़ हो गये हो तो मुझे माफ करना। मुझ से बोले बग़ैर रहा नहीं जाता।

निकोलस—नहीं, मुझे गुस्सा नहीं आया। उल्टा मुझे खुशी है कि आपने ये सब बातें कह कर मौका दिया कि मैं मेरी को जीवन-सम्बन्धी अपने विचार खुलासा बतलाकर सब बातें समझा दूँ। घर आते वक्त मैं रास्ते भर यही सोचता रहा था। और अभी मैं उससे इस विषय पर बातचीत करूँगा। और आप देखेंगी कि वह मेरी बात पर राजी हो जायगी; क्योंकि वह नेक और बुद्धिमती है।

अलेक्जेण्डरा—परन्तु इस विषय में मुझे तो पूरा सन्देह है।

निकोलस—लेकिन मुझे तो बिलकुल सन्देह नहीं है। आप इतना तो जानती ही हैं कि यह बात मैंने अपनी तरफ से तो निकाली ही नहीं है। यह तो वही बात है कि जिसे हम सब ज... हैं और जिसको ईसा-मसीह ने हम लोगों के वास्ते प्रकट किया है।

अलेक्जेण्डरा—अच्छा, तुम समझते हो कि ईसा-मसीह ने इ... बात को प्रकट किया है; लेकिन मैं समझती हूँ कि ... कोई दूसरी ही बात प्रकट की है।

निकोलस—दूसरी बात तो हो ही नहीं सकती।

(टेनिस के मैदान से आवाज़े आती हैं।)

ल्यूबा—'आउट'!

वानिया—नहीं, हमने देखा।

लिसा—मैंने देखा कि गेंद यहाँ गिरी थी।

ल्यूबा—'आउट'! 'आउट'!! 'आउट'!!!

वानिया—यह बात ठीक नहीं है।

ल्यूबा—हमेशा याद रक्खो कि किसी से यह कहना कि "यह बात ठीक नहीं है" एक उजड्डपन है।

वानिया—और जो बात ठीक नहीं है उसे ठीक बतलाना भी उजड्डपन है।

निकोलस—ज़रा ठहरिए! मेरी बात सुनिए। क्या यह सच नहीं है कि हम किसी भी क्षण मौत के मुंह में चले जा सकते हैं और तब हम उस परम पिता के सामने पेश किये जायँगे जो यह आशा रखता है कि हम उसके आज्ञानुसार बर्तेंगे।

अलेक्ज़ेण्डरा—अच्छा?

निकोलस—तो भला, इस जीवन मे इसके सिवा और मैं क्या कर सकता हूँ कि मैं वही काम करूँ जो मेरी आत्मा के अंतस्तल में सर्वोत्कृष्ट विचार के रूप में रमा हुआ ईश्वर मुझ से करने को कहता है। मेरा शुभ विवेक—मेरा ईश्वर चाहता है कि मैं हरेक आदमी को एक-समान समझूँ—सब से प्रेम करूँ और सब की सेवा करूँ।

अलेक्ज़ेण्डरा—अपने बच्चों के साथ भी वैसा ही वर्ताव करना?

निकोलस—बेशक, अपने बच्चों के साथ भी, मगर अन्तरात्मा की आज्ञाओं का पालन करते हुए। और इन सब के अतिरिक्त मुझे यह ध्यान रखना चाहिए कि मुझे अपने जीवन पर कोई अधिकार नहीं है—न आपको अपने जीवन पर; उस पर केवल ईश्वर ही का अधिकार है, जिसने हमें इस दुनिया में भेजा और जो चाहता है कि हम उसकी आज्ञा का पालन करें। और उसकी आज्ञा है कि············

अलेक्ज़ेण्डरा—क्या तुम समझते हो कि तुम मेरी को इस बात पर राज़ी कर लोगे?

निकोलस—बेशक !

अलेक्ज़ेण्डरा—और क्या तुम्हारा यह भी खयाल है कि वह अपने बच्चों को शिक्षा देना बन्द कर देगी और उन्हे छोड़ देगी ? कभी नहीं !

निकोलस—न केवल वही इस बात को समझ लेगी, बल्कि तुम खुद समझने लग जाओगी कि यही एक चीज़ है जो करनी चाहिए ।

अलेक्ज़ेण्डरा—नहीं, कभी नहीं ।

(मेरी का प्रवेश)

निकोलस—क्यो मेरी, मेरे उठने से तुम जग तो नही पड़ीं ?

मेरी—नहीं, मैं तो उस समय जगती थी । क्यो तुम्हारा काम हो गया ?

निकोलस—हाँ, हो गया ।

मेरी—यह क्या, तुम्हारी काफी तो इतनी ठण्डी हो गई है ? ऐसी क्यों पीते हो ? हाँ, हमें मिहमानो के स्वागत के लिए तैयार हो जाना चाहिए । तुम्हें मालूम है न कि चेरमशेनव लोग आ रहे हैं ?

निकोलस—अगर तुम उनके आने से संतुष्ट हो तो मैं बड़ा प्रसन्न हूँ ।

मेरी—मैं शाहज़ादी और उसके बच्चों को चाहती हूँ, मगर वे लोग जरा बेवक्त आ रहे हैं ।

अलेक्ज़ेण्डरा—(उठ कर) अच्छा तुम लोग बातें कर लो तब तक मैं जाकर टेनिस देख आऊँ ।

(ख़ामोशी, कुछ देर बाद दोनों बातचीत करते है)

मेरी—उनका आना बे-वक्त है; क्योंकि हमें कुछ बातचीत करना है।

निकोलस—मैं अभी अलीना से कह रहा था······

मेरी—क्या ?

निकोलस—नहीं, पहले तुम ही कहो।

मेरी—मैं तुम से स्ट्यूपा के सम्बन्ध में बात करना चाहती थी ? आख़िर कुछ-न-कुछ तय तो करना ही पड़ेगा। वह बेचारा दु:खी और निरुत्साही होता जाता है। उसे यह मालूम ही नहीं पड़ता कि भविष्य में क्या होगा ? वह मेरे पास आया, मगर मैं क्या बताऊँ ?

निकोलस—बताने की ज़रूरत क्या है ? वह खुद इस बात को तय कर सकता है।

मेरी—वह अश्व-रक्षकों में बतौर एक स्वयं-सेवक के भरती होना चाहता है और इसके लिए उसे तुम्हारे हस्ताक्षर की ज़रूरत है। इसके अलावा उसे अपने निर्वाह के लिए खर्चे की भी ज़रूरत होगी। मगर तुम उसे कुछ देते ही नहीं।

(कुछ उत्तेजित हो जाती है)

निकोलस—मेरी, भगवान् के लिए ज़रा उत्तेजित मत हो। मैं न तो कुछ देता हूँ और न रोकता हूँ। अपनी इच्छा से फौज में नौकरी करना, मेरी राय में, एक विवेक और विचारहीन कार्य है जो वहशी आदमी के लायक है; क्योंकि वह उसकी बुराई को समझ नहीं सकता और अगर कोई मनुष्य उसे किसी लोभ की दृष्टि से करना चाहता है तो फिर तो वह एक महा-घृणित व्यवहार है।

मेरी—मगर आजकल तो तुम्हे हरेक बात वहशियाना और विवेकहीन दिखाई देती है। आखिरकार उसे भी दुनिया में रहना है न ? और तुम भी तो इसी तरह रहे हो।

निकोलस—(ज़रा तेज़ होकर) हाँ, मैं इसी तरह रहा था, जब कि मैं कुछ भी समझता नहीं था और जब मुझे किसी ने नेक सलाह नहीं दी थी। मगर यह सब तय करना उसी के हाथ में है, मेरे हाथ में नहीं।

मेरी—तुम्हारे हाथ में कैसे नहीं ? तुम्हीं तो उसको खर्च नही देते हो।

निकोलस—जो चीज़ मेरी नहीं है उसे मैं नहीं दे सकता।

मेरी—तुम्हारी नहीं है ? तुम कह क्या रहे हो ?

निकोलस—दूसरों की मिहनत-मजूरी पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। मुझे उसे रुपया देने के लिए पहले दूसरों से लेना पड़ेगा। मुझे ऐसा करने का कोई हक नहीं है और मैं यह कर नही सकता। जब तक जायदाद का इन्तिजाम मेरे हाथों में है तब तक मुझे अपनी विवेक-बुद्धि के अनुसार ही उसका प्रबन्ध करना चाहिए। दूसरे मै थके-मांदे किसानो का फल फ़ौजी रक्षकों की वाहियात भ्रष्टता-पूर्ण नालायकियो पर खर्च होने के लिए नहीं दे सकता। जायदाद मेरे हाथों में से ले लो, फिर मैं उसका ज़िम्मेवार न रहूंगा।

मेरी—यह तुम अच्छी तरह जानते हो कि मै उसे लेना नहीं चाहती और न ले ही सकती हूँ। मुझे बच्चों को खिला पिलाकर परवरिश करने के अलावा उन्हें लिखाना-पढ़ाना भी तो है। यह तो बड़ी निठुरता है !

निकोलस—प्यारी मेरी, यह बात नहीं है। जब तुम इस तरह बोलने लगीं तो मैं भी साफ-साफ बातें कहने लगा। हमें इस तरह नहीं रहना चाहिए। हम लोग एक-साथ और एक-जगह रहते हैं, लेकिन फिर भी एक-दूसरे को समझ नहीं पाये। कभी-कभी तो ऐसा मालूम होता है मानों हम लोग जान-बूझकर-एक दूसरे को समझना नहीं चाहते।

मेरी—मैं समझना चाहती हूँ, लेकिन समझ नहीं पाती। सचमुच मैंने तुम्हें बिलकुल ही नहीं पहचाना है। आज-कल तुम्हें न जाने क्या हो गया है ?

निकोलस—अच्छा तो ज़रूर कोशिश करके समझो। लेकिन इसके लिए यह वक्त ठीक नहीं है। ईश्वर जाने, हम लोगों को कब ठीक मौका मिलेगा। तुम्हें मुझको समझने की जरूरत नहीं। तुम खुद अपने को ही समझ लो। और सोचो कि तुम्हारे जीवन का अर्थ क्या है ? ईश्वर ने तुमे पैदा क्यों किया है ? बिना इस बात के जाने कि हम लोग जो किस लिए रहे हैं, इस तरह हम अपना जीवन नहीं बिता सकते ?

मेरी—हम लोग इसी तरह जीवन व्यतीत कर रहे थे और बडे आराम से थे, (खिजलाहट का भाव देखकर) अच्छी बात है, अच्छी बात है, कहिए मैं सुनती हूं।

निकोलस—बेशक, मैं भी इसी तरह जीवन व्यतीत कर रहा था, बिना इसका ख्याल किये कि मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? मगर एक वक्त ऐसा आया जब कि मैं अपने जीवन और अपनी परिस्थिति को देखकर दङ्ग रह गया। ज़रा सोचो

तो सही, हम लोग दूसरों की मिहनत पर अपना निर्वाह करते हैं। दूसरों से अपने लिए काम करवाते हैं, दुनिया में रहकर बच्चे पैदा करते हैं और उनको भी इसी तरह का जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते हैं। बुढ़ापा आयगा और मौत का सामना होगा, तब मन में विचार आवेंगे—मैंने संसार में रहकर क्या किया? यही न कि अपने जैसे और अनेक मुफ्त के टुकड़े-खोर पैदा किये! इसके अलावा, इतना होते हुए भी, हम अपने जीवन का आनन्द नहीं पाते हैं। यह जीवन, तुम जानती हो, हमें तभी तक सहज प्रतीत होता है जब तक हमारे अन्दर वानिया की तरह जीवन में स्फूर्ति रहती है।

मेरी—मगर सब कोई इसी तरह का जीवन व्यतीत करते हैं!

निकोलस—और वे सब दुःखी हैं।

मेरी—बिलकुल नहीं।

निकोलस—खैर, मैंने देख लिया कि मैं बहुत दुःखी हूँ, और मैंने तुम्हें और तुम्हारे बच्चो को भी दुःखी बना रक्खा है। तब मेरे दिल में विचार उठा कि क्या यह संभव है कि ईश्वर ने हमे इसी लिए पैदा किया है। और जिस वक्त मेरे दिल में विचार उठा उसी दम मुझे मालूम हुआ कि नहीं ऐसा नहीं है। तब मैंने पूछा "फिर ईश्वर ने हमें किस लिए पैदा किया है?" (एक नौकर का प्रवेश)

मेरी—(निकोलस की बात को अनसुनी करके नौकर से) कुछ गरम मलाई ले आओ।

निकोलस—और बाइबिल में मुझे इस बात का जवाब मिला कि हमें अपने ही लिए नही जीना चाहिए—अपना सारा जीवन स्वार्थ में ही नहीं व्यतीत करना चाहिए। जब बगीचे में मज़-दूरों के इस सिद्धान्त पर विचार कर रहा था तब मुझे यह बात स्पष्ट मालूम हो गई। तुम समझीं ?

मेरी—हाँ, मज़दूरों के सम्बन्ध की न ?

निकोलस—मुझे ऐसा मालूम हुआ कि इस दृष्टान्त ने मेरी और बातों की अपेक्षा मेरी भूलों को अधिक स्पष्ट दिखलाया। उन मज़दूरों के समान मैं भी यह मानने लगा था कि वह बगीचा खुद मेरा है और यह जीवन भी मेरा अपना ही है। इससे सब चीजें मुझे बड़ी भयंकर मालूम होतीं। मगर ज्यों ही मैंने यह समझ लिया कि यह जीवन मेरा नहीं है; बल्कि इस दुनिया में मैं उस ईश्वर के इच्छानुसार कार्य करने के लिए भेजा गया हूँ……।

मेरी—लेकिन इससे क्या ? यह तो हम सब जानते हैं।

निकोलस—हाँ, यदि हम इतना जानते तो हम जिस प्रकार रहते हैं, न रहते होते; क्योंकि हमारा वर्तमान जीवन तो उसके बिलकुल विरुद्ध है। और हम क्षण-क्षण पर उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हैं।

मेरी—मगर जब हम किसी दूसरे को हानि ही नहीं पहुँचाते तो अपराध कैसा ?

निकोलस—मगर क्या सचमुच हम किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते ? तुम्हारी यह दलील बिलकुल लचर है—अन-पढ लोगों के जैसी है। हम दूसरों की मज़दूरी से अपना

फायदा नहीं करते ? तो फिर यह अमीरी क्या है ? यह ठाट-बाट साज़-सामान आदि कहाँ से आये ? नंगे बदन रहकर ठंढ में ठिठुरने वाले उन गरीब लोगों के शरीर का कपड़ा छीनकर हम अपने लिए बेशकीमती पोशाकें बनाते है, उनकी झोपड़ियों को उजाड़कर हम अपने आलीशान महल बनवाते हैं और निरीह भूखों मरते लोगों के मुंह का कौल छीनकर हम लोग तरह-तरह के लज़ीज़ पक्वान्नों की दावते उडाते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी चीज़ का अधिक उपभोग करता है तो निस्संदेह यह समझ लेना चाहिए कि अवश्य ही कहीं सैकड़ों मनुष्य भूखो मरते होंगे।

मेरी—हाँ, दृष्टांत तो मेरी समझ में आगया। ईश्वर ने सभी को बराबर दिया है।

निकोलस—(थोड़ी देर ठहरकर) नहीं यह ऐसा नहीं है। मगर मेरी, जरा इस बात को सोचो कि मनुष्य दुनिया में केवल एक ही बार आता है। तो फिर क्या यह उचित है कि हम उस जीवन को नष्ट कर दें ? नहीं, हमें उसका अच्छा से अच्छा उपयोग करना चाहिए।

मेरी—ना जी, मैं तुम से बहस नहीं कर सकती। समझ मे नहीं आता क्या करूँ ? रात को बच्चों के मारे पूरी तरह सो भी नहीं पाती। मुझे घर का सब काम-काज देखना पड़ता है उस पर तुम सहायता देने के बजाय मुझे ऐसी नई-नई बातें कहते हो जो मैं समझ ही नहीं सकती।

निकोलस—मेरी !

मेरी—और यह लो मिहमान लोग भी आ रहे हैं।

निकोलस—नहीं, पहले हम लोगों को आपस में एक समझौते पर आ जाना चाहिए। (प्यार से) क्यों ठीक है न ?

मेरी—हाँ, बस तुम पहले जैसे हो जाओ।

निकोलस—नहीं, यह तो नहीं हो सकता। मगर सुनो तो।

(घण्टियों और गाड़ियों के आने को आवाज़)

मेरी—नहीं, अब नहीं—वे लोग आ गये हैं। मुझे उनसे मिलने के लिए जाना चाहिए।

(घर के पीछे के दरवाज़े से जाती है। स्टूपा और ल्यूबा उसके पीछे-पीछे जाते हैं। वानिया भी।)

वानिया—हम लोग इसे यों ही नहीं छोड़ेंगे। हम लोग बाद में खेल कर फैसला कर लेंगे। क्यों, ल्यूबा, क्या है? अब तो तुम बड़ी खुश होगी ?

ल्यूबा—(गम्भीरता से) चुप रहो, बकवाद न करो।

(अलेक्ज़ेण्डरा अपने पति और लिसा के साथ बराम्दे से बाहर आती है। निकोल्स विचार-मग्न होकर इधर-उधर घूमता है)

अलेक्जेण्डरा—क्यो, तुमने उसे समझा कर राज़ी कर लिया ?

निकोलस—अलीना, हम लोगो मे परस्पर जो कुछ चल रहा है वह बड़ा गंभीर मामला है। इस वक्त मज़ाक बे-मौके है। कुछ मैं उसे थोड़े ही समझा रहा हूँ; बल्कि जीवन, सत्य और स्वयं ईश्वर उसे सन्मार्ग दिखाने की चेष्टा कर रहे हैं। इसलिए वह इसके बिना समझे और बिना यकीन किये रह ही नहीं सकती। अगर आज नही तो कल और कल नही तो परसो—एक न एक दिन वह सचाई को अवश्य समझेगी।

मगर खेद है, ऐसे मौके पर उसे समय नहीं मिलता। अभी कौन आये हैं ?

पीटर—चरेमशेनव लोग आये हैं। कैटिचि चेरमशेनव भी हैं। मुझे उनसे मिले १८ साल हो गये। पिछली बार जब हम लोग मिले थे तब हम लोगों ने यह गजल गाई थी।—

"दर्द मिन्नत कशे दवा न हुआ।"

अलेक्जेण्डरा—मेहरबानी करके हमारी बातो में दखल न दो। और यह मत समझ बैठो कि मैं निकोलस से झगड़ पडूँगी। मैं तो सच-सच बात कहती हूँ। (निकोलस से) मैं तुम से हँसी बिलकुल नहीं करती हूँ। लेकिन मुझे यह बात बड़ी अजीब मालूम हुई कि तुम मेरी को उस वक्त यह बात समझा कर राज़ी करना चाहते थे जब कि वह तुम से जी खोलकर बातें करने को तैयार हुई थी !

निकोलस—अच्छा, लो वे लोग आ गये हैं। कृपा करके मेरी से कह दीजिएगा कि मैं अपने कमरे में हूँ।

(प्रस्थान)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

(उसी घर में एक सप्ताह बाद । एक बड़े भोजनालय में मेज़ के पास मेरी, शाहज़ादी और पीटर बैठे हैं; दीवाल के पास एक पियानो भी रक्खा हुआ है ।)

पीटर—शाहज़ादी, अब की दफे बहुत दिनो बाद हम लोगो की मुलाक़ात हुई । उस बार तो आपने खूब गाया था । कहिए, अब भी क्या आपको कुछ गाने का शौक़ है ।

शाहज़ादी—मुझे तो अब उतना शौक नहीं रहा, मगर हमारे बच्चे गा सकते हैं ।

पीटर—बेशक, आपकी लड़की बहुत अच्छा गाती है और पियानो भी अच्छा बजाती है । सब बच्चे कहां गये हैं ? क्या अभी तक सोते हैं ?

मेरी—हाँ, कल रात को चांदनी में वे लोग बाहर सैर करने निकल गये थे और रात को बड़ी देर से वापस आये, मैं उस समय बच्चे को दूध पिलाती थी । इससे मैंने उनकी आवाज़ सुनी थी ।

पीटर—लेकिन हमारी अर्धांगिनी जी कब पधारेंगी ? क्या आपने उनके लिए गाड़ी भेज दी है ?

मेरी—हां, गाड़ी बड़े सवेरे ही चली गई थी, मैं समझती हूँ वह अब आती ही होगी ।

शाहजादी—क्या सचमुच, अलीना बीबी बाबा जिरैसियम को बुलाने गई हैं ?

मेरी—जी हाँ, यह बात कल उनके ध्यान में आई और उसी वक्त वे रवाना हो गईं।

शाहज़ादी—ओहो ! कितनी फुर्ती है। इसके लिए मैं उनकी तारीफ करती हूँ।

पीटर—ऐसे मामलों में हम लोग पीछे नहीं रहते। (सिगार निकालता है) अच्छा तो अब इजाज़त दीजिए; मैं ज़रा जाकर सिगार पीऊँगा और कुत्तों के साथ पार्क की सैर करूँगा।

(जाता है)

शाहज़ादी—पता नहीं, कहाँ तक सच है, मगर मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि आप फिजूल में उस बात का इतना ख़्याल करती हैं। मैं उनकी दशा को समझती हूँ। उनके दिमाग़ की हालत इस वक्त बहुत ही बढ़ी-चढ़ी और ऊँची है। ख़ैर, मान भी लो कि वह ग़रीबों को कुछ दे देते हैं तो इससे क्या होता है ? क्या हम को सदा ही जरूरत से ज्यादा अपनी फिक्र नहीं लगी रहती है ?

मेरी—मगर इतना ही हो तब न ? अभी आपको मालूम नहीं कि वह क्या करना चाहते हैं ? सिर्फ ग़रीबों को मदद देने का ही सवाल नहीं है, बल्कि यह तो एक तरह की क्रांति है—सब चीज़ों का सर्वनाश है।

शाहज़ादी—मैं आपके पारिवारिक जीवन में व्यर्थ हस्तक्षेप करना नहीं चाहती, मगर आप·······

मेरी—आप और व्यर्थ हस्तक्षेप ? बिलकुल नहीं। मैं तो आप को अपना ही समझती हूँ, आप कोई ग़ैर थोड़े ही हैं और ख़ास कर अब—इस वक्त।

शाहज़ादी—मै तो कहूँगी कि आप जी खोल कर उनसे साफ़-साफ़ इस विषय में बातें करें और आपस में तय करके एक हद बाँध लें।

मेरी—(आवेश में) हद कहां ? यहां तो कोई हद नहीं है। वह तो सब-कुछ दे डालना चाहते हैं। वह तो चाहते हैं कि मैं अब इस उम्र में रसोइये और धोबिन का काम करूँ।

शाहज़ादी—नहीं जी, भला यह भी कहीं मुमकिन है ? यह तो बिलकुल अजीब बात है।

मेरी—(ज़ेब से ख़त निकालते हुए) हम लोग यहाँ अकेले ही हैं, इसलिए मैं आप से सब बातें कह देती हूँ ! उन्होंने कल मुझे यह ख़त दिया था, मैं पढ़ कर सुनाती हूँ।

शाहज़ादी—क्या ? वह आपके साथ एक ही घर में रहते हुए ख़त भेजते हैं ? कैसे ताज्जुब की बात है ?

मेरी—नहीं, इसका कारण मुझे मालूम है। वह बोलते-बोलते बहुत उत्तेजित हो जाते है। मुझे तो उनके स्वास्थ्य की बड़ी चिंता हो गई है।

शाहज़ादी—उन्होंने क्या लिखा है ?

मेरी—पढ़ती हूँ, सुनिए—(पढ़ती है।) "तुम मुझे अपना पूर्व-जीवन उलट-पुलट कर डालने और उसके बजाय कोई नई चीज़ न देने के लिए बार-बार झिड़कती हो और कहती हो कि मै यह नहीं बताता कि हम लोग अपना पारस्परिक जीवन

किस तरह संगठित करें जब हम इस विषय पर बहस करते हैं तो दोनों ही उत्तेजित हो उठते हैं; इसीलिए मैं यह चिट्ठी लिख रहा हूँ। मैंने तुम्हें अक्सर बतलाया है कि मैं किस लिए उस तरह का जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, जैसा कि हम अब तक करते आये हैं और कर रहे हैं। लेकिन इस चिट्ठी में लिख कर तो मैं यह नहीं समझा सकता कि ऐसा क्यों है। और न मैं यही बतला सकता हूँ कि किस लिए हमें ईसा-मसीह की शिक्षा के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए। तुम दो में से एक बात कर सकती हो; या तो सत्य में विश्वास रख कर स्वेच्छा से मेरे साथ-साथ चलो या मुझ में विश्वास रख कर, मेरे ऊपर पूरा भरोसा करके मेरा अनुसरण करो।" (पढ़ना बंद करके) मैं न तो यही कर सकती हूँ और न वही। वह जिस तरह रहने को कहते हैं, वह मैं ज़रूरी नहीं समझती। मुझे बच्चों का ख्याल रखना है और उन पर भरोसा नहीं कर सकती। (फिर पढ़ती है) "मेरा विचार तो यह है कि हम लोग ज़मीन किसानों को दे डालें और बाग, फुलवारी और नदी के चारागाह वाली ज़मीन के अलावा १३५ एकड़ ज़मीन अपने पास रक्खें। हम लोग ख़ुद मिहनत करने की कोशिश करें। मगर बच्चों को या एक-दूसरे को काम करने के लिए मजबूर न करें। हमारे पास जो-कुछ ज़मीन बचेगी उससे भी तो ५० पौण्ड सालाना आमदनी होगी।

शाहज़ादी—५० पौण्ड सालाना पर ज़िन्दगी बसर करना—सात बच्चों को लेकर? बिलकुल असंभव।

मेरी—देखिए तो, उनकी सारी तजवीज तो यह है कि हम अपना सारा घर भी दे डालें और उसे एक मदरसे के रूप में परिवर्तित कर दें और हम लोग एक मामूली दो कमरेवाली झोंपड़ी मे रहें।

शाहज़ादी—हाँ, अब मुझे मालूम हुआ कि इसमे कुछ विलक्षणता है। अच्छा, आपने क्या उत्तर दिया?

मेरी—मैंने तो कह दिया कि यह नहीं हो सकता। यदि मैं अकेली होती तो निधड़क उनके पीछे चली जाती। मगर मेरे पास बच्चे हैं। ज़रा सोचो तो सही। छोटा बच्चा तो अभी दूध ही पीता है। मैंने तो उन्हें कहा कि हम सब चीज़ों को इस प्रकार दूर नहीं कर सकते। और क्या इसी बात पर व्याह के वक्त मैं उनके साथ राज़ी हुई थी? दूसरे, अब न मैं जवान ही हूँ और न मेरे शरीर में ताक़त है। भला मैं किस तरह इस बात को मान लूँ?

शाहज़ादी—यह तो मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि बात इतनी बढ गई है।

मेरी—बस, यही हाल है। मालूम नहीं क्या होनेवाला है! कल उन्होंने एक गाँव के किसानों का लगान माफ कर दिया! और वह जमीन भी उन्हीं को दे डालना चाहते हैं।

शाहज़ादी—मैं समझती हूँ कि ऐसा तो नहीं होने देना चाहिए। अपने बच्चो की रक्षा करना आपका कर्तव्य है। अगर वह जायदाद का इन्तिज़ाम नहीं कर सकते तो उन्हे चाहिए कि उसे वे आपके हवाले कर दें।

मेरी—मगर यह तो मैं नहीं चाहती।

शाहज़ादी—बच्चों की ख़ातिर आपको लेना चाहिए। बेहतर है कि वह जायदाद आपके नाम कर दें।

मेरी—बहन अलीना ने उससे ऐसा कहा था; लेकिन वे कहते थे कि उन्हे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि ज़मींन उन लोगों की है जो उसे जोतते हैं, बोते हैं, और उन्होंने यह भी कहा था कि यह उनका कर्तव्य है कि वह उसे किसानों को दे दें।

शाहज़ादी—हाँ, अब मुझे मालूम होता है कि मामला बेढब और संजीदा है।

मेरी—और पुरोहित ! वह भी उन्हीं का पक्ष लेता है।

शाहज़ादी—हाँ, कल मैंने देखा था।

मेरी—इसीलिए अलीना बहिन मास्को गई है। वह इस मामले में वकील से सलाह लेना चाहती थीं। मगर खास तौर से तो वह बाबा जिरैसियन को बुलाने गई है कि जिससे वह अपना प्रभाव डाल कर उन्हें रास्ते पर ले आवें।

शाहज़ादी—हाँ, मैं नहीं समझती कि हज़रत ईसा का सिद्धान्त हमें पारिवारिक जीवन नष्ट करने की आज्ञा देता है।

मेरी—मगर वह बाबा जिरैसियन की बात भी नहीं मानेंगे। वह अपनी धुन के पक्के हैं। और जब वह मुझ से बहस करते हैं, तब आप जानती हैं, मैं कुछ जवाब नहीं दे सकती। यह तो और भी भयानक है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वह जो कुछ कहते हैं वह सब सच है।

शाहज़ादी—यह इसलिए कि आप उन्हें प्यार करती हैं।

मेरी—मालूम नहीं। मगर है यह बड़ी गड़बड़—और यही इसाई-धर्म है।

(दाई का प्रवेश)

दाई—छोटा निकोलस जग पड़ा है। वह आप के लिए रोता है।

मेरी—अभी आती हूँ। (शाहज़ादी से) जब मैं उत्तेजित होकर अधिक बहस करती हूँ तो उनकी तबियत बिगड़ जाती है।

(दूसरे द्वार से हाथ में कागज़ लिए निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—नहीं, यह तो असंभव है।

मेरी—क्यों, क्या हुआ ?

निकोलस—हुआ क्या ! कुछ शीशम के दरख्तों की वजह से पीटर को कैद हो जायगी।

मेरी—सो कैसे ?

निकोलस—बिलकुल सीधी-सी बात है। उसने कुछ पेड़ काट डाले, इसकी शिकायत मजिस्ट्रेट के पास की गई और मजिस्ट्रेट ने उसे तीन मास की सज़ा दी है। उसकी औरत उसके लिए आई है।

मेरी—क्या वह किसी तरकीब से बच नही सकता ?

निकोलस—नही, अब नहीं बच सकता। बस, यही एक रास्ता है कि हम जंगल ही न रक्खें और मैं ऐसा ही करूँगा। भला इसके सिवा और क्या हो सकता है ? मगर जाकर देखता हूँ कि किसी तरह उस बेचारे का छुटकारा हो सकता है।

ल्यूबा—प्रणाम पिताजी, (हाथ चूमती है) अब कहाँ जाते हैं ?

निकोलस—मैं अभी गांव से लौटा था और फिर गांव को जा रहा हूँ। वे एक भूखे आदमी को जेल में डालने के लिए घसीटे लिये जा रहे हैं। क्योंकि उसने······

ल्यूबा—शायद पीटर है ?

निकोलस—हाँ, पीटर ही है।

(जाता है। उसके पीछे-पीछे मेरी भी जाती है।)

ल्यूबा—(सामघार के पास बैठती है) तुम कॉफी चाहते हो या चाय ?

बोरिस—कुछ भी नहीं।

ल्यूबा—सदा ही यह लगा रहता है, आखिर इसका कोई अंत भी है ?

बोरिस—मेरी समझ में नहीं आता। मै जानता हूँ कि किसान ग़रीब और अपढ़ हैं और उनकी सहायता अवश्य करनी चाहिए; मगर इस तरह चोरो को उत्साहित करके नहीं।

ल्यूबा—फिर कैसे ?

बोरिस—अपने समस्त कार्यों से। उनके लिए अपना समस्त ज्ञान काम में लाकर और अपने जीवन की कुर्बानी करके।

ल्यूबा—और पिताजी कहते हैं कि इसी बात की तो ज़रूरत है।

बोरिस—कुछ समझ मे नही आता। एक आदमी अपना जीवन नष्ट किये बिना ही लोगों की सेवा कर सकता है। इसी तरह मैं अपने जीवन को ढालना चाहता हूँ। सिर्फ अगर तुम············

ल्यूबा—जो तुम्हे पसंद है वही मुझे पसंद है। और मुझे किसी चीज का डर नहीं है।

बोरिस—उन बालियो का और उस पोशाक का क्या किया जाय ?

ल्यूबा—बालियां बेच डाली जा सकती हैं और पोशाक में तब-
दीली होनी चाहिए। बिलकुल छैल-छबीली भी बनना ठीक
नहीं है।

बोरिस—मैं तुम्हारे पिता जी से एक बार फिर बातचीत करना
चाहता हूँ। क्या तुम समझती हो कि यदि मैं उनके साथ
गांव तक जाऊँ तो कुछ हर्ज होगा।

ल्यूबा—नहीं, बिलकुल नहीं। मैं देखती हूँ, कि वह तुमको पसंद
करने लगे हैं और कल रात को तो वह ज्यादातर तुम्हीं को
मुख़ातिब करके बात करते रहे थे।

बोरिस—(काफी पी लेता है) अच्छा तो मैं जाऊँगा।

ल्यूबा—हाँ, जाओ, और मैं जाकर लिसा और टानिया को जगाती हूँ।

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

(गॉव की गली, आहवन एक झोंपड़ी के पास लेटा हुआ है)

आहवन—मालाशका ! (एक छोटी सी लड़की बच्चों को गोद में लिये
हुए आती है; बच्चा रोता है) थोड़ा-सा पानी तो ले आ।

(मालाशका झोंपड़े में वापस जाती है; बच्चे का रोना सुनाई
देता है; मालाशका एक लोटे में पानी लिये आती है)

आहवन—बच्चे को क्यों मारती है ? उसे हमेशा रुलाती रहती है ?
तेरी माँ से कह दूँगा।

मालाशका—अच्छा तो उससे कह दो। वह भूख के मारे रोता है।

आहवन—(पानी पीता है) जाओ और डेमकिन से कुछ दूध
माँग लाओ।

मालाशका—मैं गई थी, मगर वहाँ कोई नही था।

आह्वन—ओह, क्या ही अच्छा हो यदि मैं मर जाऊँ। क्या खाना तैयार है?

मालाशका—हाँ, तैयार है। यह देखो, जमींदार साहब आ रहे हैं।

(निकोलस प्रवेश करता है)

निकोलस—क्यों, यहाँ बाहर क्यों लेटे हो?

आह्वन—अन्दर बहुत मक्खियाँ भिनभिनाती हैं और बड़ी गर्मी है।

निकोलस—यहाँ तुम्हे ठंढ तो नहीं लगती?

आह्वन—नहीं, मेरा जिस्म गरमी के मारे झुलस रहा है।

निकोलस—और पीटर कहाँ है? क्या घर में है?

आह्वन—घर में! और इस वक्त? वह तो खेत मे अनाज ढोने के लिए गया है।

निकोलस—मैंने सुना है कि वे लोग उसे जेल डालने वाले हैं।

आह्वन—हाँ, यही बात है, पुलिस का आदमी उसे पकड़ने खेत पर गया है।

(एक गर्भवती स्त्री का प्रवेश, सर पर अनाज का गट्ठा है और हाथ में हंसिया है, मालाशका को देखते ही सिर पर एक चपत लगाती है)।

स्त्री—क्योरी, बच्चे को अकेला क्यो छोड़ दिया? सुनती नहीं, वह चिल्ला रहा है। बस इधर-उधर फिरना ही जानती है?

मालाशका—(चिल्लाती हुई) मैं अभी तो बाहर आई हूँ। पिता जी ने पानी मांगा था।

स्त्री—देख बताती हूँ अभी तुझे। (निकोलस को देख कर) वन्दे ठाकुर साहब। बच्चों की बड़ी आफत है। मैं तो बड़ी

हैरान हो रही हूँ। सारा बोझ मेरे ही सिर पर है। हमारे घर में एक ही कमाई करने वाला आदमी है। उसे भी वे लोग जेलखाने लिये जाते हैं और यह काम-चोर इधर निठल्ला पड़ा हुआ है।

निकोलस—क्या बोलती हो ? देखो तो यह बेचारा कितना बीमार है।

स्त्री—यह बीमार है और मैं कैसी हूँ ? क्या मैं बीमार नहीं हूँ ? जब काम का वक्त होता है तब वह बीमार पड़ जाता है; मगर हँसने-बोलने और मेरे सिर के बाल नोचने के लिए बीमार नहीं होता। मरे, कुत्ते की मौत मरे ! मुझे क्या ?

निकोलस—ऐसी खराब बातें तुम्हारे मुँह से कैसे निकलती हैं ?

स्त्री—मैं जानती हूँ, यह पाप है। मगर मेरी जुबान काबू में नही रहती। मेरे एक और बच्चा होने वाला है। और अभी दो को संभालना पड़ता है। और सब लोगों की फसल तो कट कर घर में आ गई है, मगर हमारी चौथाई कटाई भी अभी नहीं हो पाई है। मुझे जौ के गट्ठे बांधने थे, मगर नहीं बाँध सकी। बच्चो को देखने के लिए मुझे काम छोड़ कर आना पड़ा।

निकोलस—जौ कट जायँगे। मैं मजदूरों को लगा दूँगा। वे काट कर गट्ठे बाँध डालेंगे।

स्त्री—गट्ठे बाँधने में कुछ नही है, यह तो मै खुद कर सकती हूँ, बस किसी तरह कटाई हो जाती। क्यो निकोलस साहब, आप क्या समझते हैं—क्या यह मर जायगा ? यह बहुत बीमार है।

निकोलस—मालूम नहीं, मगर बीमार तो सचमुच बहुत है। उसे अस्पताल भेजना चाहिए।

स्त्री—हरे राम! (रोती है) ईश्वर के लिए उसे कहीं मत ले जाओ, यहीं मर जाने दो। (अपने पति से, जो कुछ कहता है) क्या कहते हो?

आइवन—मैं अस्पताल जाना चाहता हूँ, यहाँ तो मैं कुत्ते से भी बदतर हूँ।

स्त्री—ख़ैर जो कुछ हो। मेरा तो इस वक्त जी ठिकाने नहीं है। मालाशका! खाना परोस।

निकोलस—तुम्हारे खाने में क्या-क्या चीज़ें हैं?

स्त्री—क्या-क्या चीज़ें हैं? रोटी और आलू, और वह भी काफी नहीं है। (झोंपड़े के अन्दर जाती है, एक सूअर का बच्चा चिल्लाता है, अन्दर बच्चे रोते हैं)

आइवन—हे ईश्वर, अब तो बस मौत दो। (कराहता है)

(बोरिस का प्रवेश)

बोरिस—क्या मैं कुछ सहायता कर सकता हूँ?

निकोलस—यहाँ कोई किसीकी सहायता नहीं कर सकता। ख़राबी की जड़ गहरी पहुँच चुकी है। यहाँ बस हम अपनी सहायता कर सकते हैं—यह देख कर कि हम किन चीज़ों से अपने जीवन के सुख का निर्माण करते हैं। यह देखो, एक परिवार है, पांच बच्चे हैं; स्त्री गर्भवती है, पति बीमार है, आलुओं के सिवा घर मे खाने के लिए कुछ नहीं है। और इस वक्त इस बात का निर्णय किया जा रहा है कि अगले साल भी उन्हे खाने के लिए काफी अनाज मिलेगा या नहीं?

माना कि मैं एक मजदूर कर दूँ; मगर वह मजदूर होगा कौन ? बस ऐसा ही एक दूसरा आदमी होगा कि जिसने शराब पीने या पैसा न होने की वजह से अपनी खेतीबारी का काम छोड़ दिया है।

बोरिस—माफ कीजिएगा। मगर ऐसी बात है तो फिर आप यहां क्या कर रहे हैं ?

निकोलस—मैं अपनी स्थिति को समझने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं यह देख रहा हूँ कि वह कौन है जो हमारे बागों में काम करता है, हमारे मकान बनाता है, हमारे कपड़े बनाता है और हमें खिलाता-पिलाता है। (किसान हँसिये लिये हुए और स्त्रियाँ रस्सी लिये हुए जाते है और सलाम करते हैं। निकोलस एक किसान को रोक कर) एरमिल, क्या तुम इन लोगों के जौ काटकर नहीं ला सकते ?

एरमिल—(सिर हिलाकर) मैं बड़ी खुशी से करता लेकिन, इस वक्त मैं यह काम नहीं कर सकता। मैंने खुद अभी तक अपना खेत नहीं काट पाया है। हम लोग अब खेत काटने जाते हैं। मगर आइवन का क्या हाल है।

दूसरा किसान—यह देखो सिबेश्चियन है, शायद यह राजी हो जाय। शिबा काका, यह लोग जौ काट कर लाने के लिए एक आदमी चाहते हैं।

शिबा—तुम्हीं इस काम को ले लो; इस वक्त तो एक दिन की मिहनत से साल भर का खाना मिलता है।

(किसान जाते हैं)

निकोलस—यह सब नंगे-भूखे हैं। इन्हें आधा पेट खाने को

मिलता है। इसी लिए सब रोगी से हो रहे हैं। और कई बुड्ढे हैं। देखो, वह बुड्ढा आदमी बीमारी से अधमरा हो रहा है। लेकिन फिर भी वह सुबह चार बजे से लेकर रात के दस बजे तक काम करता है। और हम लोग ? यह सब देख कर क्या यह संभव है कि हम लोग शान्ति-पूर्वक दिन बितावें और फिर भी अपने को धार्मिक मनुष्य समझें ? धार्मिक मनुष्य न सही, केवल पशु न समझें ?

बोरिस—लेकिन इसके लिए क्या करना चाहिए ?

निकोलस—इस बुराई में भाग नहीं लेना चाहिए। न ज़मीन को अपने कब्जे में रखना और न दूसरो की मिहनत से फायदा उठाना चाहिए। इन सब बातों का क्या प्रबन्ध होना चाहिए यह तो मैं अभी नहीं बता सकता। दर-असल बात यह है कि हम लोग यह कभी सोचते नहीं कि हमारा जीवन किस तरह गुजर रहा है। मैंने यह कभी नहीं समझा कि मै ईश्वर का पुत्र हूँ, और हम सब ईश्वर के पुत्र हैं, भाई भाई हैं। लेकिन जिस वक्त मैंने यह अनुभव किया था, जिस वक्त यह जान लिया कि हम सब एक—बराबर हैं, सब को इस दुनिया में जिदा रहने का हक है, उसी वक्त मेरे दिल में हल-चल मच गई। लेकिन यह सब बातें मैं इस वक्त नहीं बता सकता। इस वक्त तो मैं यही कहूंगा कि मै बिलकुल चक्षु-हीन था, जैसा कि इस वक्त मेरे घर के लोगों का हाल है। मगर अब मेरी आंखें खुल गई हैं और अब मैं इन बातों को देखे बिना नहीं रह सकता। लोगो की इस हीनावस्था को देखकर और उसका कारण जानकर अब

मैं उसी तरह अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। खैर यह तो फिर देखा जायगा। इस वक्त किसी तरह इनको मदद देनी चाहिए।

(पुलिस का आदमी, पीटर उसकी स्त्री और बच्चे का प्रवेश)

पीटर—(निकोलस के पैर पकड़कर) माफ करो, ईश्वर के लिए, मुझे माफ कर दो। नहीं तो मैं बिलकुल बरबाद हो जाऊंगा। अकेली औरत किस तरह अनाज काटकर घर में ला सकेगी कम-से-कम ज़मानत पर ही मैं छूट जाता !

निकोलस—मैं अर्ज़ी लिखता हूँ। (पुलिस मैन से) क्या तुम इसे अभी नहीं छोड़ सकते ?

पुलिसमैन—मुझे पुलिस स्टेशन ल जाने का हुक्म मिला है।

निकोलस—अच्छा तो जाओ, मुझसे जो हो सकेगा मैं करूंगा। यह सब मेरी करतूत है। भला, इस तरह कोई कैसे रह सकता है ?

(जाता है।)

तीसरा दृश्य

(उसी घर में। वर्षा हो रही है, एक कमरे में पियानो रखा हुआ है। टानिया पियानो के पास बैठी है, उसने अभी एक गीत समाप्त किया है, स्ट्यूपा पियानो के पास खड़ा है। बोरिस बैठा है। ल्यूबा लिसा, मित्राफेन, और वासिली, पुरोहित सब गीत से प्रभावित और प्रसन्न हैं)

ल्यूबा—अहा ! यह गीत कितना प्यारा है ?

स्टयूपा—सचमुच बड़ी खूबसूरती से गाया।

लिसा—बहुत ही अच्छा है।

स्ट्यूपा—मगर मुझे मालूम नहीं था कि तुम गान-विद्या में इतनी निपुण हो। कोई उस्ताद भी इस तरह से शायद ही बजा पायगा। ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में स्वर्गीय भावो की अक्षय्य निधि है। उसमें से एक-एक करके वह चुने हुए सुन्दर दिव्य-भाव कुछ ललित किशोर स्वरों की सवारी पर बैठकर आकाश की तरफ उड़ते हैं और अपनी ज्योतिर्मयी प्रभा की स्फूर्ति से समस्त संसार को आच्छादित और आल्हादित करते हुए अन्त में दूर, बहुत दूर, आसमान में झिलमिलाते हुए सितारों की रोशनी में लीन हो जाते हैं, और देखते-ही-देखते वह सितारे और भी अधिक उज्वल, और भी अधिक सजीव और और भी अधिक चञ्चल हो उठते हैं।

ल्यूबा—बस स्ट्यूपा ने मेरे मन की बात कही है। सचमुच टानिया तुम अप्सरा हो।

टानिया—मगर मैं तो समझती थी कि मै पूरी तरह से अपने भावो को व्यक्त नहीं कर सकी। बहुत-कुछ अभी अव्यक्त ही रह गया है।

लिसा—भला, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है? गाना आश्चर्य-जनक था।

ल्यूबा—तानसेन और बैजूबावरे की याद आती है। सुनते हैं, बैजू बावरे के गाने का दिलपर अधिक असर पड़ता है।

स्टयूपा—हां, उसमे भक्ति के भाव अधिक भरे होते हैं।

टानिया—हम लोग उन दोनो का एक-दूसरे से मुकाबिला नहीं कर सकते।

ल्यूबा—भक्ति के गानों में तो मीराबाई भी अद्वितीय हैं। क्या तुम्हें कोई गीत याद है?

टानिया—कौनसा गीत चाहती हो? "मेरे मन राम नाम दूसरा न कोई" (बजाना शुरू करती है)

ल्यूबा—नहीं, यह नहीं, यह भी बहुत अच्छा है; मगर उसे सब कोई गाता फिरता है। देखिए यह गीत—

(जितना मालूम है उतना बजाती है, फिर छोड़ देती है)

टानिया—ओह, यह। यह तो बहुत ही अच्छा है···गाते गाते मन खुशी से नाच उठता है।

स्ट्यूपा—हां, हां, जरा गाइए तो सही। मगर नहीं तुम थक गई होगी। यो भी आज की सुबह हम लोगों ने बड़ी खुशी से बिताई, इसके लिए आपको धन्यवाद है।

टानिया—(उठकर खिड़की मे से देखती है) बाहर कुछ किसान बैठे इंतिजार कर रहे हैं।

ल्यूबा—इसी लिए तो गान-विद्या की इतनी कदर है, और कोई चीज़ इस तरह मनुष्य के सुख-दुःख को नही भुला सकती जिस तरह कि गान-विद्या करती है। (खिड़की के पास जाकर किसानों से) तुम किसे चाहते हो?

किसान—निकोलस साहब से मिलने हम लोग आये हैं।

ल्यूबा—वह घर पर नहीं है। तुम लोग जरा ठहरो।

टानिया—और फिर भी तुम वोरिस से व्याह करना चाहती हो कि जिसे गान-विद्या का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

ल्यूबा—जी नही, हरगिज़ नहीं।

बोरिस—गाना ? नही, नहीं, मैं उसे पसंद करता हूँ, या यों कहिए कि मैं उसे नापसंद नहीं करता। गाने की बनिस्वत मैं गीतों को अधिक पसंद करता हूँ। क्योंकि उनमें सादगी है, उनमें इतनी कृत्रिमता-जनक उलझन नहीं होती।

टानिया—मगर क्या यह राग अच्छा नही है ?

बोरिस—ख़ास बात यह है कि यह चीज़ इतनी ज़रूरी नहीं है और मुझे यह देखकर दुःख होता है कि लोग गान-विद्या को इतना जरूरी समझते हैं जब कि हजारों आदमी बड़ी मुसीबत से अपने दिन काटते हैं।

(सब लोग मिठाई खाते हैं, मिठाई मेज़ पर सजी हुई है)

लिसा—यह कितने मज़े की बात है कि प्रेमी मौजूद हो और मिठाइयां तय्यार हों।

बोरिस—यह मेरा काम नहीं है, मांजी का है।

टानिया—और बिलकुल ठीक और मुनासिब है।

ल्यूबा—गाने की खूबी इसीमें है कि वह हमारे दिल पर जादू का सा असर कर रहा है, हमें अपने वश में करके दुनिया के सुख-दुःख से दूर, बहुत दूर, ले जाता है, जहां थोड़ी देर के लिए हम संसार की स्थूल वास्तविकता को भूल जाते हैं। अभी थोड़ी देर पहले हर-एक चीज़ सुस्त और बे-मज़ा मालूम होती थी, मगर तुम्हारे गाने ने मानो सब में जीव डाल दिया है।

लिसा—तुम्हें कोई कबीर के गीत भी मालूम हैं ?

टानिया—यह…… (बजाती है)

(निकोलस का प्रवेश । बोरिस, टानिया, स्ट्यूपा, लिसा, मित्राफेन और पुरोहित से हाथ मिलाता है ।)

निकोलस—तुम्हारी मां कहां है ?

ल्यूबा—मैं समझती हूँ, वह पालनेवाले घर मे होंगी ।

(स्ट्यूपा नौकर को बुलाता है—अफ़नासी !)

ल्यूबा—पिताजी, टानिया कितना अच्छा गाती-बजाती है । और तुम कहां थे ?

निकोलस—गांव में । (अफ़नासी का प्रवेश)

स्ट्यूपा—दूसरा सामवार लाओ ।

निकोलस—(नौकर को सलाम करके उससे हाथ मिलाता है) नमस्कार।

(नौकर गड़बड़ा जाता है । प्रस्थान । निकोलस भी जाता है।)

स्ट्यूपा—ग़रीब अफनासी ! वह कितना गड़बड़ा गया था; पिताजी की बातें मेरी समझ में नही आतीं, इससे तो ऐसा मालूम होता है मानों हमने कोई जुर्म किया है ।

(निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—मैं अपने दिल की बात कहे बिना ही अपने कमरे को वापस जा रहा था । (टानिया से) तुम हमारे मेहमान हो, अगर मेरा कहना तुम्हे नागवार गुजरे तो मुझे माफ करना। लिसा, तुम कहती हो कि टानिया बहुत अच्छा गाती-बजाती है । तुम सात-आठ नौजवान—तन्दुरुस्त औरत और मर्द दस बजे तक पड़े सोते रहे और उसके बाद उठकर खाया पिया और अब भी खा रहे हो । तुम सब मिल कर यहां

गाते-बजाते और आपस में गाने के सम्बन्ध में बातचीत करते हो, और वहां, जहां से कि मैं आ रहा हूँ, गाँव के सब लोग सवेरे तीन बजे से उठ बैठे और जो लोग कोल्हू चलाते हैं वह बिलकुल सोये ही नहीं। बूढ़े और जवान, रोगी और दुर्बल, बच्चे और दूध पिलानेवाली मातायें और गर्भवती स्त्रियां अपनी-अपनी शक्ति-भर मेहनत करती हैं और वह सिर्फ इसलिए कि हम लोग उनकी मेहनत से लाभ उठा कर मौज उड़ाया करें। इतना ही नहीं, अभी इसी वक्त उनमे से एक आदमी जो अपने कुटुम्ब में अकेला ही कमानेवाला है, जेल मे डाल दिया गया है; क्योंकि उसने एक शीशम का पेड़ हमारे जंगल से काट लिया है; और हम लोग सजधज कर, यहां आराम से बैठे हुए हैं और बहस कर रहे हैं कि कबीर के गीत अधिक प्रभावशाली है या मीरा बाई के। यही मेरे दिल में विचार थे सो मैंने प्रकट कर दिये। तुम लोग ज़रा सोचो तो सही, कि क्या इस तरह जिंदगी बिताना ठीक और मुनासिब है ?

लिसा—सच, बिलकुल सच्च है।

ल्यूबा—मगर इन बातों का ख्याल किया जाय तब तो फिर जीना ही दूभर हो जाय।

स्ट्यूपा—मगर मेरी समझ में नही आता कि कुछ लोग ग़रीब हैं इसीलिए हम लोग गान क्यो न गॉय ? दोनो में पारस्परिक विरोध तो नहीं है। मगर......

निकोलस—(क्रोध से) अगर कोई निर्दयी है, अगर कोई पत्थर का बना है।......

स्टयूपा—अच्छी बात है, मैं नही बोलूँगा।

टानिया—यह बहुत ही कठिन प्रश्न है, यह हमारे जमाने की समस्या है और हमें उससे डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसे हल करने की कोशिश करनी चाहिए।

निकोलस—हम लोग चुपचाप बैठ कर इस बात का इन्तिजार नही कर सकते कि एक ऐसा वक्त आयगा कि जब खुद-बखुद यह मुश्किल हल हो जायगी। हर एक आदमी को मरना है, आज नहीं तो कल। एक न एक दिन सभी को ईश्वर के समक्ष अपने कर्मों का जवाब देना है। ऐसी हालत में, मैं किस तरह इन सब बातों को देखते हुए अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाकर चुपचाप मौज और मजे से योंही अपना जीवन बिताता रहूँ?

बोरिस—सच है, इस मुश्किल को हल करने का एक ही रास्ता है; और वह यह कि हम इन बातो में बिलकुल ही भाग न लें।

निकोलस—अगर तुम्हे बुरा लगा हो तो मुझे माफ करना, मुझसे कहे बिना रहा नहीं गया। (प्रस्थान)

स्टयूपा—इसमें भाग न लें? मगर हमारा समस्त जीवन इन्हीं बातो से बँधा हुआ है।

बोरिस—इसीलिए तो वह कहते हैं कि सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि हम लोग कोई जायदाद ही न रक्खें, और अपने जीवन की गति को इस तरह बदल डालें कि हम दूसरों से अपनी सेवा न करायें; बल्कि खुद दूसरों की सेवा किया करें।

टानिया—अच्छा, तुम भी निकोलस की सी बातें करने लगे हो !

बोरिस—हाँ, गाँव में जाकर अपनी आँखों से देखने के बाद, मैं सब-कुछ समझ गया। बेचारे ग़रीब किसानों और दीन-दरिद्र मजदूरों की मुसीबतो और हम लोगों की आराम-तलबी और ऐशो-अशरत मे क्या संबन्ध है, इस बात को जानना हो तो बस इतना काफी है कि हम अपनी आंखों से रंगीन चश्मा उतार कर एक बार सहृदयता के साथ आंखें खोलकर उनकी हीन, निस्सहाय और निर्जीव दशा को देखें और फिर अपनी निर्लज्ज निर्दय ऐयाशियों पर भी एक बार दृष्टिपात करें।

मित्रोफन—मगर उनकी मुसीबतो का इलाज यह नहीं है कि हम अपनी जिंदगी यों बरबाद कर दें।

स्ट्यूपा—ताज्जुब है कि मित्रोफन और मेरा मत इस सम्बन्ध में एक ही है, यद्यपि हम दोनों के विचारों में जमीन और आस्मान का फर्क है।

बोरिस—यह बिलकुल ही स्वाभाविक है। तुम दोनो आराम के साथ अपनी जिन्दगी गुजारना चाहते हो। (स्ट्यूपा से) इसलिए तुम वर्तमान स्थिति को बनाये रखना चाहते हो और मित्रोफन एक नई प्रथा चलाना चाहते है।

(ल्यूबा और टानिया आपस में काना-फूसी करते हैं, टानिया पिआनो के पास जाकर कबीर का एक गीत गाती है और ख़ामोश हैं।)

स्ट्यूपा—बहुत अच्छा है, बस यही सब बातों को हल कर देता है।

बोरिस—इससे हल कुछ भी नहीं होता; बल्कि यह उसको और भी अस्पष्ट बनाकर अनिश्चित-रूप में छोड़ देता है।

(टानिया गाती है, मेरी और शाहज़ादी चुपचाप आकर बैठ जाती हैं और गाना सुनती हैं। गीत ख़तम होने से पहले गाड़ी की घंटियां सुनाई पड़ती हैं)

ल्यूबा—मौसीजी आगईं। (उससे मिलने जाती है)

(गाना जारी है, अलेक्ज़ेन्डरा का प्रवेश, उसके साथ बाबा जिरैसियन (एक पुरोहित जिसकी गर्दन में क्रास लटक रहा है) और एक मुहर्रिर वकील है। सब उठ खड़े होते हैं।)

फ़ादर जिरैसियन—आप गाइए, यह तो बहुत ही अच्छा है।

(शाहज़ादी और युवक पुरोहित आशीर्वाद लेने के लिए उसके पास जाते हैं)

अलेक्जेण्डरा—मैंने जैसा कहा था वैसा ही किया; मैं फादर जिरैसियन से जाकर मिली और उनसे प्रार्थना करके उन्हें यहां ले आई हूँ—बस मैंने अपना काम पूरा कर दिया। यह देखो, मुहर्रिर भी मौजूद है। उसने दस्तावेज़ तय्यार कर लिया है, सिर्फ दस्तखत करने की ज़रूरत है।

मेरी—आप कुछ नाश्ता तो कीजिए।

(मुहर्रिर कागज़ों को मेज़ पर रखकर बाहर जाता है)

मेरी—मैं फादर जिरैसियन की बहुत ही कृतज्ञ हूँ।

फादर जिरैसियन—भला मैं क्या कर सकता था—यद्यपि मुझे दूसरी जगह जाना था; फिर भी ईसाई होने की हैसियत से मैंने यह अपना कर्तव्य समझा कि मैं उनसे मिलूँ।

(अलेक्ज़ेण्डरा उन नौजवानों से कानाफूसी करती है, वे एक दूसरे की राय लेते हैं और बोरिस के सिवा बाकी सब बरामदे मे चले जाते है। नवयुवक पुरोहित भी जाना चाहता है।)

फ़ादर जि०—नही, आपको पुरोहित और धार्मिक गुरु होने की हैसियत से यहाँ ठहरना चाहिए। आप खुद उससे लाभ उठा कर दूसरो को लाभ पहुँचा सकते हैं। अगर मेरी को कुछ आपत्ति न हो तो आप ज़रा ठहरिए।

मेरी—नहीं, मैं फादर वासिली को अपने घर का सा समझती हूँ। मैंने उनसे इस बारे मे सलाह भी ली थी। मगर कम उम्र होने की वजह से उनकी बात प्रमाण नही हो सकती।

फ़ादर जि०—बेशक, बेशक।

अलेक्ज़ेण्डरा—(पास आकर) फादर जिरेसियन! आप ही मेरी नज़र में एक ऐसे आदमी हैं; जो निकोलस को समझा बुझा कर सीधे रास्ते पर ला सकते हैं। वह बहुत ही पढ़ा लिखा और होशियार आदमी है; लेकिन आप जानते हैं कि इस तरह की विद्वत्ता से सिर्फ हानि ही पहुँचती है। वह एक तरह से भ्रम में पड़ा हुआ है। उसका विचार है कि ईसाई-धर्म इस बात को मान्य करता है कि कोई आदमी निजी जायदाद न रक्खे—लेकिन यह भला किस तरह मुमकिन हो सकता है?

फ़ादर जि०—यह सब कुछ नही, बड़ा कहलाने का लोभ, आत्म-श्लाघा और अहम्मन्यता है। गिरजा के महंतो ने इस बात

का संतोषजनक निर्णय कर दिया है। पर यह सब उसके मन में समाया कैसे ?

मेरी—अरे साहब न पूछिए। जब हमारी शादी हुई तब धर्म-कर्म की तरफ़ उनका कोई खयाल न था और हम शुरू के बीस बरसों तक बड़े सुख-चैन से रहे। बाद को उनके मन में कुछ विचार आने लगे। या तो उनकी बहन के विचारों का प्रभाव उन पर पड़ा हो या शायद पुस्तकों का। जैसे भी हो, उनके मन मे बहुत उथल-पुथल होने लगा और उन्होंने बाइबिल पढ़ना शुरू किया और एकाएक उनके अन्दर धर्म का अंकुर जाग उठा—वे अपने जीवन को अत्यन्त धार्मिक बनाने लगे। गिरजा जाने लगे और साधु-सन्तों से धर्म-चर्चा करने लगे। फिर एकाएक उन्होंने यह सब बन्द कर दिया और अपने जीवन-क्रम को बिलकुल ही बदल डाला। अपना काम हाथ से करने लगे—नौकरों को अपना काम करने से मना कर दिया और नौबत यहाँ तक आई कि अब तो वे अपनी जायदाद भी छोड़ रहे हैं। कल उन्होंने एक जंगल दे डाला—पेड़ और जमीन दोनो। यह सब देख कर मेरी तो रूह काँप उठती है; क्योंकि मुझे छः सात बच्चे हैं। मेहरबानी करके उन्हें कुछ जरूर समझाइए। मैं जाकर पूछती हूँ कि वे आपसे मिलेंगे या नहीं।

(प्रस्थान)

फ़ादर जि०—आजकल बहुत लोग इसी तरह अएट-शएट कर रहे हैं। और यह तो बताओ, जायदाद किसकी है, उसकी या उसकी बीवी की ?

शाहज़ादी—उसकी है ! यही तो मुसीबत है।

फादर जि०—और उसका ओहदा क्या है ?

शाहज़ादी—कोई बहुत ऊँचा पद नही है। मेरा ख़याल है, घुड़-सेना का कमान है। फौज़ मे भी रह चुका है।

फ़ादर जि०—आज-कल बहुत से लोग इसी तरह बहक रहे हैं। मास्को मे एक महिला थी, उस पर आध्यात्मिकता की धुन सवार हो गई और वह बड़ा नुक्सान पहुँचाने लगी। आख़िर बड़ी मुश्किल से हम उसे रास्ते पर लाये।

शाहज़ादी—ख़ास बात आपके समझ लेने की यह है कि मेरा लड़का उसकी लड़की से व्याह करने वाला है। मैंने अपनी सम्मति दे दी है। लड़की को मौज-शौक से रहने की आदत पड़ी हुई है और मैं नही चाहती कि मेरे लड़के को ही उसकी सारी जरूरते पूरा रखने का बोझ अपने सिर लेना पड़े। मैं यह मानती हूँ कि वह मेहनती है और नवयुवको में अपने ढंग का एक ही है।

(मेरी और निकोलस का प्रवेश)

निकोलस—कहिए शाहज़ादी साहबा, आपका मिजाज़ कैसा है ? और आपका मिजाज शरीफ ? (फादर जिरैसियन से) माफ कीजिए मुझे आपका नाम मालूम नही है।*

---

* वह जानता है कि पुरोहित फादर जिरैसियन है। परन्तु वह उन्हे पुरोहित समझ कर बात नहीं करना चाहता, बल्कि उनका असली नाम लेकर करना चाहता है—जैसा कि आदमी दूसरे से आम तौर पर बात करता है।

फ़ादर जि०—क्या तुम मेरा आशीर्वाद लेना नही चाहते ?

निकोलस—जी, नही ।

फ़ादर जि०—मेरा नाम है जिरैसियन सिडोरों लिच, आपसे मिल कर मुझे बड़ी खुशी हुई ।

(नौकर लोग नाश्ते का सामान लाते हैं ।)

फादर जि०—यह मौसिम बहुत ही सुहावना और फसल के लिए अच्छा है ।

निकोलस—मैं समझता हूँ कि आप मेरी भूल बतला कर मुझे सन्मार्ग पर लाने के लिए ही अलेक्जेण्डरा के बुलाने से यहाँ आये हैं । अगर यह सच है, तो आप इधर-उधर की बातें छोड़कर अपना काम शुरू कीजिए । मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि मैं गिरजा की शिक्षा को नही मानता । किसी ज़माने में, गिरजा की शिक्षा को मानता था । मगर उसके बाद से ऐसा करना छोड़ दिया । लेकिन मैं तहेदिल से सचाई को पाने की कोशिश करता हूँ और अगर आप सचाई मुझे दिखला देंगे तो मैं फौरन् बड़ी खुशी के साथ उसे कबूल कर लूँगा ।

फादर जि०—यह भला तुम कैसे कहते हो कि तुम गिरजा की शिक्षा पर विश्वास नही रखते ? अगर गिरजा नही तो फिर दूसरी कौन सी चीज़ विश्वास करने के लिए है ।

निकोलस—ईश्वर और बाइबिल में लिखा हुआ उसका क़ानून ।

फादर जि०—गिरजा उसी क़ानून की तो तालीम देता है ।

निकोलस—अगर ऐसा होता तो मैं गिरजा मे विश्वास रखता; लेकिन दुर्भाग्य से वह इसके विरुद्ध शिक्षा देता है ।

फादर जि०—गिरजा विरुद्ध शिक्षा नहीं दे सकता है। क्योंकि स्वयं ईसा-मसीह ने उसकी स्थापना की है।

निकोलस—अगर यह भी मान लें कि ईसा-मसीह ने गिरजा को स्थापित किया तब यह कैसे मालूम हो कि वह 'आप ही' का गिरजा है।

फादर जि०—भला गिरजा से कोई इन्कार कर ही कैसे सकता है? वही तो एक-मात्र मुक्ति का द्वार है।

निकोलस—यह तो मैं आप से कही चुका हूँ कि मैं इस बात को स्वीकार नहीं करता, उसे इसलिए स्वीकार नहीं करता, क्योंकि मुझे मालूम हो गया है कि गिरजा कसम खाना, हत्या करना, और फांसी देना जायज़ समझता है।

फादर जि०—ईश्वर ने जो अधिकार दिये हैं गिरजा उनको पाक और जायज़ करार देता है।

(बातचीत के वक्त, स्ट्यूपा, ल्यूबा, लिसा और टानिया एक-एक करके आते हैं और बैठ कर या खड़े होकर उनकी बातें सुनने लगते हैं।)

निकोलस—मैं जानता हूँ कि बाइबिल सिर्फ यही नहीं कहती है कि "मारो मत" बल्कि उसका उपदेश है कि 'क्रोध मत करो' फिर भी गिरजा फौज को जायज़ मानता है। बाइबिल कहती है "कभी कसम मत खाओ" मगर फिर भी गिरजा कसम खिलाता है, बाइबिल कहती है............

फादर जि०—माफ कीजिएगा, एक बार खुद ईसा-मसीह ने पाइलेट की कसम को स्वीकार किया था।

निकोलस—अरे ग़जब ! आप क्या कह रहे हैं ! यह तो बिलकुल ही असंगत और असंभव है ।

फ़ादर जि०—इसीलिए तो गिरजा हर किसी को गास्पल की व्याख्या करने की आज्ञा नहीं देता है कि लोग कहीं बहक न जाँय; बल्कि खुद बच्चे की खबरगिरी करनेवाली माँ की तरह बच्चों की शक्ति के अनुसार गास्पल की व्याख्या करता है । नही, ठहरिए, मुझे कह लेने दीजिए । गिरजा अपने बच्चो पर इतना भारी बोझ नहीं रखता है कि जिसे वह संभाल न सके और सिर्फ यही चाहता है कि वह लोग इन आज्ञाओं का पालन करें—प्रेम करो, हत्या न करो, चोरी मत करो, व्यभिचारी मत बनो ।

निकोलस—हाँ ! मुझे मत मारो, मैंने जो चीज़ दूसरों से चुरा कर जमा की है उसे मेरे पास से मत चुराओ । हमने दूसरों को लूटा है, उनकी ज़मीन ज़बरदस्ती चुरा ली है और उसके बाद यह क़ानून बना दिया है कि फिर कोई न चुराये, और गिरजा इन सब बातों को मंजूर करता है ।

फ़ादर जि०—कुफ्र और आध्यात्मिक अभिमान तुम्हारी वाणी द्वारा बोल रहे हैं । तुम्हे अपने इस पाण्डित्याभिमान को वश में रखना चाहिए ।

निकोलस—यह गर्व या अभिमान नहीं है । मैं सिर्फ आपसे यह पूछता हूँ कि जब मुझे इस बात का ज्ञान हो गया है कि मैं लोगों को लूटने और ज़मीन के द्वारा उन्हें गुलामी में फँसाने का पाप कर रहा हूँ तब, ऐसी दशा में, मुझे क्या क्या करना चाहिए ? क्या मैं ज़मीन को अपने अधिकार में

रख कर भूखो मरने वाले लोगों के परिश्रम से लाभ उठाता रहूँ या मैं यह ज़मीन उन लोगों को वापस दे दूँ कि जिनसे मेरे बुजुर्गों ने उसे किसी तरह से चुराया या छीन लिया था।

फादर जि०—तुमको वही करना चाहिए जो गिरजा के भक्त के उपयुक्त है। तुम्हारे कुटुम्ब परिवार है, बाल–बच्चे हैं, तुम्हे उनकी हैसियत के मुताबिक उनका भरण-पोषण और उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए।

निकोलस—क्यो ?

फादर जि०—क्योकि ईश्वर ने तुम्हें उस स्थिति मे रक्खा है। अगर तुम दानी और उदार बनना चाहते हो तो तुम अपनी जायदाद का कुछ हिस्सा दान देकर और ग़रीब लोगो की सहायता करके अपनी उदारता को विकसित कर सकते हो।

निकोलस—लेकिन फिर हज़रत ईसा ने उस नौजवान अमीर-जादे से यह क्योंकर कहा था कि अमीर लोग स्वर्ग नही जा सकते। "अमीर आदमी के स्वर्ग में जाने की बनिस्बत कही ज्यादा आसान है कि ऊँट सुई के नकुए मे से होकर निकल जाय"।

फादरजिरे०—यह कहा है "अगर तू पूर्णता प्राप्त करना चाहता है।"

निकोलस—मगर मै तो पूर्णता प्राप्त करना चाहता हूँ। बाइबिल कहती है, "अपने स्वर्गस्थ पिता की भांति पूर्ण बनो।"

फादरजिरे०—मगर हमें यह भी तो देखना चाहिए कि किस सम्बन्ध में यह बात कही गई है।

निकोलस—मैं यह समझने की कोशिश करता हूँ और "पर्वत पर के उपदेश" मे जो कुछ कहा गया है वह बिलकुल स्पष्ट-बुद्धि-गम्य है।

फ़ादरजिरे०—यह आध्यात्मिक अभिमान है।

निकोलस—अभिमान कैसा ? जब कि यह कहा है कि जो बात बुद्धिमानो से गुप्त है वह बच्चो के लिए प्रकट की है।

फ़ादरजिरे०—नम्र लोगो पर प्रकट और व्यक्त है न कि घमंडियों के लिए।

निकोलस—लेकिन घमंड किसे है ? मैं अपने को मानव-जाति का एक साधारण मनुष्य समझता और इस लिए विश्वास करता हूँ कि मुझे भी दूसरे भाइयो की तरह महनत करके गरीबी और सादगी से जीवन-निर्वाह करना चाहिए। कहिए, मैं घमंडी हूँ या वे जो अपने को विशेष रूप से पवित्र समझते हैं. अपने को सर्वथा भ्रम-रहित और सारी सच्चाई का ठेकेदार समझते हैं, और जो ईसा-मसीह के शब्दों का मनमाना अर्थ लगाते हैं।

फ़ादरजिरे०—(क्षुब्ध होकर) माफ कीजिएगा, निकोलस साहिब, मै आपसे इस बात की बहस करने नहीं आया था कि हम मे कौन ठीक है, और न आपसे भर्त्सना-पूर्ण शिक्षा लेने आया था। मैं तो अलेक्ज़ेण्डरा के बुलाने से आपके साथ बात-चीत करने चला आया। लेकिन चूंकि तुम हर एक बात मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानते हो इस लिए यही अच्छा है कि हम बात-चीत बन्द कर दें। बस, एक बार और मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर के लिए तुम होश

सम्हालो। तुम बे-तरह बहक गये हो और अपने को बरबाद कर रहे हो। (उठता है)

मेरी—क्या आप कुछ नाश्ता नहीं करेंगे?

फ़ादिरजिरे०—नही मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

(अलेक्जेण्डरा के साथ प्रस्थान)

मेरी—(नवयुवक पुरोहित से) कहिए, आप क्या कहते हैं?

पुरोहित—मेरी राय में निकोलस सा० का कहना सत्य था, और फादर जिरैसियन ने अपने पक्ष में कोई प्रमाण नहीं दिया।

शाहज़ादी—उन्हें बोलने ही नहीं दिया और उन्होंने सबके सामने इस प्रकार बहस करना पसन्द नहीं किया। उन्होंने शिष्टता के विचार से वहस बन्द कर दी।

बोरिस—यह किसी प्रकार शिष्टता या नम्रता नहीं थी। यह स्पष्ट है कि उनके पास कुछ कहने को था ही नहीं।

शाहज़ादी—हां, तुम अपनी स्वाभाविक अस्थिरता के कारण हर बात में निकोलस से सहमत होने लगे हो। यदि तुम्हें ऐसी बातों पर विश्वास है तो तुम्हे शादी नहीं करनी चाहिए।

बोरिस—मैं तो केवल यही कहता हूँ कि सच्चाई सदा सच्चाई है और मैं उसे कहे बिना नही रह सकता।

शाहज़ादी—कोई कुछ कहे, मगर तुमको तो ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए।

बोरिस—सो क्यों?

शाहज़ादी—क्यों कि तुम ग़रीब हो और तुम्हारे पास दे डालने को कुछ भी नहीं है। लेकिन, हमें इन बातों से क्या मतलब? (जाती है। पीछे पीछे मेरी और निकोलस के सिवा-सब बाहर जाते हैं,

निकोलस—(बैठा हुआ विचार करता है, फिर अपने ही आप मुस-कराता है।) मेरी! यह सब तुम क्या करती हो? तुमने उस बदबख्त गुमराह आदमी को क्यों बुला भेजा? यह शोर मचाने वाली औरत और यह पुरोहित हमारे अत्यन्त आन्तरिक जीवन में क्यों दख़ल देते है? क्या हम लोग खुद अपने मामलों को तय नहीं कर सकते?

मेरी—मगर तुम बच्चों को भिखारी बना देना चाहते हो तो मैं क्या करूं? इसको तो मैं चुपचाप सहन नहीं कर सकती। तुम्हे मालूम है कि तुम्हारी बातें मेरी समझ में नही आतीं और तुम यह भी जानते हो कि मैं अपने लिए कुछ भी नहीं चाहती।

निकोलस—जानता हूँ। मैं यह जानता और विश्वास करता हूँ। मगर दुर्भाग्य तो यह है कि तुम सत्य पर विश्वास नहीं करती। मुझे विश्वास है कि तुम सत्य को देखती हो, मगर अपने मन को उस पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं कर पाती। तुम न तो सत्य पर विश्वास करती हो, न मुझ पर। तुम विश्वास करती हो भीड़ पर, शाहज़ादी का और उसीके जैसे दूसरे लोगों का।

मेरी—मैं तुम में विश्वास रखती हूँ, सदा से रखती हूँ, मगर जब तुम बच्चो को भिखारी बनाना चाहते हो।

निकोलस—इसके मानी हैं कि तुम मुझ पर विश्वास नही करतीं। क्या तुम समझती हो कि मेरे भी दिल में इस तरह द्वन्द्व-युद्ध और शंकाओं का तूफान नहीं उठा था? मेरे दिल में भी इसी तरह की आशङ्कायें पैदा हुई, मगर बाद को मुझे

पूर्ण निश्चय हो गया कि यह मार्ग सम्भव ही नहीं; वरन् नितान्त आवश्यक है और इस मार्ग का अनुसरण स्वयं बच्चो के लिए भी आवश्यक और उपयोगी है । तुम हमेशा कहा करती हो कि अगर बच्चों का खयाल न होता तो तुम खुशी से मेरे कहने के मुताबिक काम करतीं, मगर मैं कहता हूँ कि अगर हमारे पास सम्पत्ति न होती तो हम लोग इसी ला-परवाही से जिन्दगी बिता देते, जैसे अब तक हम अपनी ज़िन्दगी बसर करते थे, क्यों कि उस हालत मे तो हम सिर्फ अपने ही आपको नुकसान पहुँचाते, मगर अब तो हम बच्चो को भी हानि पहुँचा रहे हैं ।

मेरी—मगर मैं क्या करूं, जब कि तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती।

निकोलस—मैं ही क्या करूं ? क्या मैं यह नहीं जानता कि वह बदबख्त मनुष्य क्यों बुलाया गया था।? और अलेक्जेण्डरा उस-मुहर्रिर को बुलाकर क्यों लाई ? तुम चाहती हो कि मैं जायदाद तुम्हे दे दूं, लेकिन मैं नहीं दे सकता। तुम जानती हो कि मैं तुम्हे बीस साल से, जब से हम साथ रहते आये हैं, प्यार करता हूँ । मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और तुम्हारा भला चाहता हूँ इसी लिए जायदाद तुम्हारे नाम नहीं कर सकता ।, यदि मैं दूं ही, तो उन किसानों को ही जिनसे मैंने ली है ।। अच्छा है, मुहर्रिर आही गया है, सब काम अभी हो जायगा ।

मेरी—नहीं यह भयानक है । यह निष्ठुरता किस लिए ? यद्यपि तुम इसे पाप समझते हो, फिर भी अपनी जायदाद मेरे हवाले कर दो । (रोती है)

निकोलस—तुम नहीं जानतीं कि तुम क्या कह रही हो ? यदि अपनी जायदाद तुम्हें दे दूं तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। मुझे चला जाना पड़ेगा। किसानों का खून, मेरे नहीं तो तुम्हारे नाम पर चूसा जायगा और वे जेल भेजे जावेंगे। मैं यह देख नहीं सकता। तुम क्या पसन्द करती हो ?

मेरी—तुम कितने निठुर हो ? क्या यही ईसाई-धर्म है ? यह कठोरता है। जिस तरह तुम मुझे रखना चाहते हो मैं उस तरह नहीं रह सकती। मैं अपने बच्चों से छीनकर सारी जायदाद दूसरों को नहीं लुटा सकती, इसीलिए तुम मुझे छोड़ देना चाहते हो। अच्छा वही करो। मैं देखती हूँ कि तुमने मुझे प्यार करना छोड़ दिया, और यह भी जानती हूँ कि क्यों ?

निकोलस—अच्छी बात है—मैं हस्ताक्षर किये देता हूँ, मगर तुम मुझसे असम्भव बात करा रही हो (मेज़ के पास जाकर सही कर देता है।) तुमने जो चाहा, मैंने कर दिया; मगर मैं इस तरह अपनी जिन्दगी नहीं बिता सकता।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

(एक बड़े कमरे में बढ़ईगीरी का सामान रक्खा हुआ है, एक मेज़ पर कुछ कागज़ात हैं, किताबों की एक अल्मारी है, दीवाल से तख्ते टिके हुए हैं, एक बढ़ई और निकोलस बढ़ईगीरी का काम कर रहे हैं।)

निकोलस—(एक तख्ते को रन्दते हुए) यह ठीक है न ?

बढ़ई—(रन्दा हाथ में लेकर) नहीं इसमें खुरदरापन है, रन्दे को इस तरह मजबूती से पकड़िए।

निकोलस—मजबूती से पकड़ो, यह कह देना तो आसान है। मगर मुझ से फिर यह चलता नहीं।

बढ़ई—लेकिन हुजूर, बढ़ई का काम सीखने का कष्ट क्यों उठाते हैं ? आज-कल योंही इतने बढ़ई बढ़ गये हैं कि हमे पेट भरना मुश्किल हो गया है।

निकोलस—(फिर काम करता है।) मुझे निकम्मा जीवन बिताते लज्जा आती है।

बढ़ई—आपकी हैसियत ही ऐसी है। ईश्वर ने आपको जायदाद दी है।

निकोलस - यही तो भूल है। मैं इस बात का नहीं मानता कि वह जायदाद ईश्वर की दी हुई है। मेरा ख़याल है कि हमने उसे ले लिया है और अपने ही भाइयो से लिया है।

बढ़ई—(आश्चर्य से) यह बात है। लेकिन फिर भी आपको यह काम करने की जरूरत नहीं है।

निकोलस—मैं समझता हूँ कि तुम्हें ताज्जुब मालूम होता है कि मैं एक ऐसे घर में रह कर, जो ग़ैर-ज़रूरी चीजों से भरा हुआ है, मेहनत-मज़दूरी करके कुछ कमाना चाहता हूँ।

बढ़ई—(हँस कर) नहीं; सब कोई जानता है कि भले घराने के लोग हरफ़न-मौला बनना चाहते हैं। हाँ, अब ज़रा रन्दे को तेज़ी से चलाइए।

निकोलस—तुम मेरी बात का विश्वास नहीं करते और हँसते हो; मगर फिर भी मैं कहता हूँ कि पहले इस तरह की ज़िन्दगी से मुझे शर्म नहीं लगती थी, अब, चूंकि, मैं ईसा की शिक्षा पर विश्वास रखता हूँ, मुझे अपने निकम्मे जीवन पर लज्जा आती है। क्योंकि उनका उपदेश है कि हम सब मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं।

बढ़ई—अगर आपको उससे शर्म लगती है तो अपनी जायदाद दूसरों को दे डालिए।

निकोलस—मैं करना तो यही चाहता था, मगर कर न सका। मैं वह जायदाद अपनी स्त्री को दे बैठा।

बढ़ई—मगर बहर-हाल आपको ऐसा करना मुमकिन नहीं; क्योंकि आप आराम के आदी हैं।

(दरवाजे के बाहर से आवाज़) पिताजी, क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ ?

निकोलस—आओ बेटी, तुम जब चाहो आ सकती हो।

(ल्यूबा का प्रवेश)

ल्यूबा—बन्दगी, जैकब।

बढ़ई—बन्दगी अर्ज़ है, साहबज़ादी!

ल्यूबा—बोरिस अपनी पलटन को गये हैं। मालूम नहीं, वह वहाँ क्या कहे या कर बैठें? मुझे तो बड़ा भय लगता है। आप क्या कहते हैं?

निकोलस—मैं भला क्या बताऊँ। वह जो मुनासिब समझता है वही करेगा।

ल्यूबा—यह बड़े दुःख की बात है। उन्हे थोड़े ही दिन नौकरी करनी होगी। मगर डर है कि वहाँ जाकर वह अपने समस्त जीवन को बरबाद न करवा लें।

निकोलस—उसने यह अच्छा ही किया कि वह मुझसे मिलने नहीं आया। वह जानता है कि मैं उस सच्ची बात के सिवाय और कुछ नही कह सकता कि जिसे वह खुद जानता है। उसने मुझसे कहा था कि उसके इस्तीफ़े देने का केवल यही कारण नहीं है, कि उसकी दृष्टि में इससे बढ़कर नीति-भ्रष्ट नियम-रहित, क्रूर और हिंसक वृत्ति कोई और नहीं है; क्योंकि उसका उद्देश्य ही हत्या करना है; वरन् इस बात को भी भ्रष्टता और नीचता की पराकाष्ठा समझता है कि एक आदमी अपने अफसर की आज्ञा को चुपचाप, बिना चूँ-चपड़ किये मानने को बाधित किया जाता है—फिर वह आज्ञा कितनी ही कठोर, कितनी ही निर्दय अथवा आत्मा, बुद्धि और विवेक विरुद्ध ही क्यो न हो। बोरिस इन सब बातों को जानता है।

ल्यूबा—मुझे यही तो डर है। वह इन बातों को जानते हैं। कही कुछ कर न बैठें।

निकोलस—उसकी आत्मा और आत्मा मे रहने वाला परमात्मा उसका फैसला करेगा। अगर बोरिस मेरे पास आता तो मैं उसे सिर्फ एक सलाह देता। मैं बस यही कहता कि कोई ऐसा काम मत करो जिसमे केवल बुद्धि की ही प्रेरणा हो-इससे बढकर बुरी बात कोई नही है--बस उसी वक्त किसी महत्व के काम में हाथ डालो कि जब तुम्हारा मन, तुम्हारी आत्मा प्राण-पण से उस काम मे लग जाने के लिए प्रेरित करे। मिसाल के तौर पर, मुझे ही लो। मैं ईसा-मसीह के उपदेश का स्मरण करने के लिए माता-पिता स्त्री और बच्चो को छोड़ देना चाहता था। मैंने घर छोड़ भी दिया, किन्तु उसका परिणाम क्या हुआ? मैं वापिस आकर शहर में तुम लोगों के साथ ऐशो-आराम से रहने लगा। मेरी इस निरर्थक और लज्जा-जनक स्थिति का कारण यही है कि मैं अपनी शक्ति से बाहर का काम करना चाहता था। मै सादगी के साथ रहकर और अपने हाथ से मेहनत करके खाना चाहता हूँ; किन्तु इस परिस्थिति में कि जहां नौकर और दरबान हैं, किसी तरह की मेहनत-मजदूरी करना एक तरह की बनावट और दिखावा मालूम होता है। देखो न, अभी तक जैकब मुझ पर हँस रहा है।

बढ़ई—मैं क्या हँसूँगा? आप मुझे वेतन देते हैं और पीने के लिए चाय देते हैं, मैं आपका कृतज्ञ हूं।

ल्यूबा—मैं समझती हूँ, शायद यह अच्छा होगा कि मै उनके पास हो आऊँ।

निकोलस—मेरी बेटी, मेरी प्यारी बच्ची, मुझे मालूम है कि तुम्हें यह देखकर बड़ा कष्ट और भय होता है, हालां कि ऐसा होना नही चाहिए। तुम डरो मत। ईश्वर सब भला करेगा। जो बात ज़ाहिरा बुरी मालूम होती है, हकीकत में वही ज्यादा खुशी देती है। तुम्हे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो मनुष्य इस मार्ग पर चलता है उसे दो बातो में से एक बात पसन्द करनी होती है, और कभी-कभी ऐसा होता है कि ईश्वर और शैतान का पक्ष बिलकुल एक समान होता है, दोनों पलड़े एक-बराबर तुले रहते हैं, और ऐसे हो समय पर मनुष्य को महत्व-पूर्ण निश्चय करना पड़ता है। उस वक्त, किसी तरह का बाहरी हस्त-क्षेप अत्यंत भयावह और कष्ट-प्रद होता है। इस वक्त उसकी हालत ऐसी ही है जैसे कोई आदमी किसी तंग पगडंडी पर एक भारी बोझ ले जाने की कोशिश कर रहा हो और उसकी हालत ऐसी नाज़ुक हो कि अगर कोई ज़रा भी छू दे तो वह मुँह के बल गिरकर हाथ-पैर तोड़ ले।

ल्यूबा—उसे इतना दुःख उठाने की क्या ज़रूरत है?

निकोलस—यह बात ऐसी है, जैसे कोई कहे, मां प्रसव-पीड़ा क्यो सहती है? प्रसव-पीड़ा के बिना सन्तानोपत्ति हो ही नहीं सकती और यही हाल आध्यात्मिक जीवन का है। मैं तुमसे एक बात कहता हूँ। बोरिस सच्चा ईसाई है, और इसी लिए वह स्वतंत्र है। अगर तुम खुद अभी उसकी तरह नहीं बन

सकती, या उसकी तरह ईश्वर में विश्वास नहीं कर सकतीं तो उसके द्वारा ईश्वर में विश्वास करना सीखो।

मेरी—(दरवाजे के पीछे) क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ ?

निकोलस—हाँ, तुम जब चाहो आ सकती हो, आज तो यहां मेरा खूब स्वागत हो रहा है।

मेरी—हमारे पुरोहित, वासिली महोदय, आये हैं। वह बिशप के पास जा रहे हैं और उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया है।

निकोलस—असम्भव है।

मेरी—वह यहीं हैं। ल्यूबा, जाओ, उन्हे बुला तो लाओ। वह तुमसे मिलना चाहते हैं। (ल्यूबा का प्रस्थान) मेरे आने का एक और कारण है। मैं तुमसे वानिया के विषय में बात चीत करना चाहती थी। उसके लक्षण कुछ अच्छे नहीं दिखाई पड़ते। वह अपना सबक भी याद नहीं करता। मुझे आशा नहीं कि वह इस साल पास हो। और जब मैं उससे कुछ कहती हूँ तो वह मेरे सिर चढ़ता है।

निकोलस—मेरी, तुम जानती हो कि मैं उस प्रकार के जीवन को पसंद नहीं करता जिस प्रकार तुम लोग अपना जीवन व्यतीत कर रहे हो। और न उस शिक्षा ही से मुझे सहानुभूति है कि जो तुम बच्चों को दे रही हो। यह मेरे सामने एक भयंकर समस्या है कि क्या मैं बच्चों को इस तरह बरबाद होते हुए देखता रहूँ।

मेरी—तो तुम इसके सिवाय कोई दूसरी बात निश्चित रूप से बताओ। तुम क्या चाहते हो ?

निकोलस—सो, मैं कुछ नहीं कह सकता। मगर मैं इतना जरूर

कहूँगा कि सबसे पहले हमे इस निकृष्ट बनाने वाले सुख-संभोग से छुटकारा पाना चाहिए।

मेरी—ताकि वह लोग किसान बन जाव। यह तो मै नही मान सकती।

निकोलस—तब फिर मुझसे कुछ मत पूछो। जो बातें तुम्हे बुरी मालूम होती हैं, जिनसे तुम्हे दुःख होता है वह बिलकुल स्वाभाविक और अपरिहार्य हैं।

(पुरोहित और ल्यूबा का प्रवेश, पुरोहित और निकोलस मिलते है)

निकोलस—क्या यह सच है कि आपने उन सब बातों से हाथ धो लिया।

पुरोहित—हां, मुझसे अधिक नही सहा गया।

निकोलस—मुझे आशा नहीं थी कि यह बात इतनी जल्दी हो जावेगी।

पुरोहित—मगर वास्तव मे मेरे लिए यह बिलकुल असम्भव हो गया था। इस पेशे के अन्दर उदासीन होकर नही रह सकते। हमे लोगो की पाप-स्वीकृतियां (Confessions) सुननी पड़ती, और मंत्र देने पड़ते हैं और जब एक बार इस बात का विश्वास होगया कि यह सब असत्य है .....

निकोलस—हां, तो अब आप क्या करेंगे ?

पुरोहित—मैं अब बिशप के पास जाता हूँ, उसने जवाब-तलब किया है। मालूम होता है वह मुझे जिलावतन करके साले-वेट्स मठ में भेज देगा। पहले तो मैंने सोचा कि मैं आपसे कही बाहर भाग जाने के लिए मदद मॉगूँ, मगर फिर मैंने

सोचा कि इसमें कायरता प्रकट होगी। बस, मुझे अपनी पत्नी का ख्याल है।

निकोलस—वह कहां है ?

पुरोहित—वह अपने बाप के घर गई है। मेरी सास आई थी, वह मेरे बच्चे को अपने साथ ले गई। इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं चाहता हूँ।........

(ठहरता है, आँसू रोकने की कोशिश करता है।)

निकोलस—ईश्वर आपकी सहायता करे। क्या आप आज हमारे यहां ठहरेंगे ?

शाहज़ादी—(कमरे में दौड़ती आती है) आखिर, वही हुआ। उसने नौकरी करने से इन्कार कर दिया और वह गिरफ्तार कर लिया गया। मैं वहां गई थी, मगर मुझे अन्दर नहीं जाने दिया। निकोलस, तुम्हे चलना पड़ेगा।

ल्यूबा—क्या उन्होंने इनकार किया है ? आपको कैसे मालूम हुआ ?

शाहज़ादी—मैं खुद वहां मौजूद थी। आन्द्रीविच ने, जो कौंसिल का मेम्बर है, मुझसे सारा हाल बयान किया। बोरिस ज्यों ही अन्दर गया उसने कह दिया कि न वह नौकरी करेगा और न हलफ़ उठायेगा, गर्ज़ेकि उसने वह सारी बातें कहीं कि जो निकोलस ने सिखाई थीं।

निकोलस—शाहज़ादी ! क्या यह बातें किसी को सिखाई जा सकती है ?

शाहज़ादी—मुझे नहीं मालूम, मगर यह ईसाई-धर्म नहीं हो सकता। क्यों बाबा, आपकी क्या राय है ?

पुरोहित—अब मैं पादरी नहीं रहा।

शाहजादी—लेकिन बात एक ही है...... । हां, तुम उनसे सहमत हो। सो यह तुम्हारे लिए तो ठीक है। पर मैं सब बातें इस दशा में नहीं छोड़ सकती। यह कैसा बदबख्त ईसाई-धर्म है, जो लोगो को दुःख देकर तबाह और बरबाद करता है। मैं तुम्हारे इस ईसाई-धर्म से घृणा करती हूँ। यह चोचले तुम्हे भले ही अच्छे हो क्यों कि तुम्हारा उनसे कुछ नहीं बिगड़ता। मगर मेरे तो एक ही लड़का है, और तुमने उसको बरबाद कर दिया।

निकोलस—शान्त होओ, शाहजादी।

शाहजादी—हां, हां, तुम्हीने उसके जीवन को नष्ट किया है। तुमने उसे आफत मे फँसाया, इस लिए तुम्ही को उसकी रक्षा करनी होगी। जाओ और समझाओ कि वह इन सब वाहियात बातों को छोड़ दे। अमीरो के लिए यह सब ठीक हो सकता है, मगर हम लोगो के लिए नही।

ल्यूबा—(रोती हुई) पिताजी अब क्या होगा ?

निकोलस—मैं जाता हूँ, शायद मैं कुछ कर सकूं।

(चादर उतारता है)

शाहजादी—(कोट पहनाते हुए) वह मुझे अन्दर नहीं जाने देते, मगर अब हम दोनों साथ-साथ जायँगे। (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(एक सरकारी दफ्तर। एक क्लर्क मेज़ के पास बैठा है और एक सिपाही इधर से उधर घूम रहा है। एक जनरल का अपने सेक्रेटरी के साथ प्रवेश। क्लर्क उठ खड़ा होता है, सिपाही फौजी सलाम करता है)

जनरल—कर्नल कहां है ?

क्लर्क—हुजूर, वह उस नये सिपाही को देखने गये हैं, जो अभी भर्ती हुआ है।

जनरल—हां, ठीक है, जाओ, उन्हें यहां बुला लाओ।

क्लर्क—बहुत अच्छा हुजूर।

जनरल—और तुम क्या नकल कर रहे हो ? नये सिपाही का बयान है न ?

क्लर्क—जी हां, जनाब।

जनरल—लाओ, जरा मुझे दो।

(क्लर्क कागज़ जनरल के हाथ में देकर बाहर जाता है, जनरल अपने सेक्रेटरी को देता है)

जनरल—जरा उसे पढ़िए तो सही।

सेक्रेटरी—"मुझसे तीन प्रश्न पूछे गये हैं कि (१) मैं कसम क्यों नहीं खाता ? (२) मै सरकार की आज्ञाओं का पालन क्यों नहीं करता ? (३) किस वजह से मैंने ऐसे शब्द लिखे कि जो न केवल फौज का ही बल्कि उच्च पदाधिकारियों का भी विरोध और अपमान करते हैं। पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि मैं ईसा-मसीह के उपदेश को मानता हूँ, जिसमे कसम खाने की साफ़ २ मनाई की गई है। देखिए

मेथ्यू की गास्पल मे परिच्छेद ५, पद ३३-३७ और जेम्स के एपिशेल में परिच्छेद ६५, पद १२······

जनरल—नुकताचीनी करता है। अपना मन-माना अर्थ निकालता है।

सेक्रेटरी—(पढ़ना जारी है) "गास्पल में लिखा है, कसम कभी मत खाओ, जो बात है उसके लिए बस हां बोलो और जो नहीं है उसके लिए सिर्फ नहीं कह दो, और इससे अधिक जो कुछ होता है वह बुरा है। सेंट जेम्स के एपिशेल में है "भाइयो, किसी के सामने आसमान या जमीन की कसम मत खाओ और न किसी दूसरी तरह की कसम खाओ, बस हां के लिए हां कहो और नहीं के लिए नहीं, जिससे तुम लोभ मे न फँसो। अव्वल तो बाइबिल में ही बिलकुल साफ तौर पर कसम खाने को मनाई है, लेकिन बाइबिल में अगर ऐसी आज्ञा न भी होती, तो भी, मैं मनुष्य की आज्ञा पालन करने की कसम नहीं खा सकता, क्यो कि ईसाई होने की हैसियत से मुझे हमेशा ईश्वर की मर्जी पर चलना चाहिए और उसकी मर्जी हमेशा ही आदमी की मर्जी के अनुकूल हो, ऐसा नहीं होता।········

जनरल—बहस करता है। अगर मेरा बस चलता तो ऐसा कोई आदमी रहने नहीं पाता।

सेक्रेटरी—"मैं उन आदमियो के आज्ञा-पालन करने से इनकार करता हूँ कि जो अपने आपको गवर्नमेन्ट के नाम से पुकारते हैं, क्यो कि ··

जनरल—कितनी बड़ी गुस्ताखी है ?

सेक्रेटरी—"क्यो कि वे आज्ञायें पाप-मय और दुष्टता--पूर्ण हैं, उनकी आज्ञा है कि मै फोज़ मे भरती होऊँ और फौजी शिक्षा प्राप्त कर मनुष्यों की हत्या करने के लिए तैयार हो जाऊँ। हालां कि यह बात पुराने और नये दोनो ही टेस्टा-मेन्टों में मना की गई है और खुद मेरी आज्ञा उसके विरुद्ध है। तीसरे सवाल

(कर्नल का प्रवेश, जनरल उससे हाथ मिलाता है।) .

कर्नल—आप उसका बयान सुन रहे हैं।

जनरल—उसकी गुस्ताखी बेहद बढ़ी हुई है। हां, पढ़ो।

सेक्रेटरी—"तीसरा सवाल है कि किस वजह से मैंने अदालत के सामने ऐसे तीव्र और अरुचिकर शब्दों का प्रयोग किया। इसका जवाब है कि मैंने ईश्वर-सेवा के विचार से और उस के नाम पर जो धोखे-बाजी हो रही है उसकी पोल खोलने के उद्देश्य से ही उनका प्रयोग किया था, और मैं अपने इस विचार और उद्देश्य का आजन्म पालन करूंगा, और इसी लिए।

जनरल—बस, इतना काफी है। मै इन वाहियात बातों को नही सुन सकता। ज़रूरत है कि इस तरह की बातों को जड़-मूल से उखाड़कर नष्ट कर दिया जाय। और इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि लोगों मे यह बात न फैले और वह बहकने न पावे (कर्नल से) क्या आपने उससे बात-चीत की थी ?

कर्नल—मैं अब तक उसी से बातें करता था। मैंने उसे शर्मिन्दा करने की कोशिश की और उसे बताया कि यह हरकत

उसके हक़ मे निहायत मुज़िर साबित होगी और उससे कोई फायदा उसे न मिलेगा। इसके अलावा मैंने उसके रिश्तेदारों का भी ख्याल उसे दिलाया। वह बहुत ही उत्तेजित हो गया, मगर अपनी बात पर डँटा रहा।

जनरल—अफ़सोस है, आपने उससे इतनी बातचीत की। हम फौजी लोग हैं, हमें बहस नहीं, काम करना चाहिए। उसे बुलाओ तो इधर।

(सेक्रेटरी और क्लर्क का प्रस्थान)

जनरल—(बैठ जाता है) नहीं कर्नल साहब, यह तरीका नहीं है। इस तरह के लोगों के साथ दूसरी तरह का सलूक करना चाहिए। सड़े हुए अङ्ग को काटने के लिए ज़बरदस्त और पुर-असर तरीका इख्तियार करना चाहिए। एक रोगी भेड़ सारे गल्ले में संक्रामक रोग फैला देगी। ऐसे मामलों में किसी तरह लिहाज़ नहीं रखना चाहिए। वह शाहज़ादा है, उसके एक माँ है और एक प्रेमिका है—इन बातों से हमें कोई मतलब नहीं। हमारे सामने तो, बस, वह एक सिपाही है, और हमे ज़ार का हुक्म बजा लाना है।

कर्नल—मैंने समझा था कि शायद हमारे समझाने से वह रास्ते पर आ जावे।

जनरल—समझाने से! नहीं, कभी नहीं। सख्ती, बस सख्ती से ही ऐसे लोग राह पर आते हैं। मुझे ऐसे लोगो का तजुर्बा हो चुका है। उसे इस बात का अनुभव करा देना चाहिए कि वह बिलकुल ना-चीज़ है, अपदार्थ है—रथ के पहिए

के नीचे वह केवल एक रज-कण है और वह इस रथ की गति मे बाधा नही डाल सकता।

कर्नल—अच्छा, हम लोग कोशिश करके देखेंगे।

जनरल—(नाराज़ होकर) कोशिश करके देखने की ज़रूरत नहीं है। मुझे इस बात के आज़माने की ज़रूरत नहीं। मैंने चवालीस वर्ष जार की ख़िदमत मे गुज़ारे हैं। मैंने जान हथेली पर रखकर ख़िदमत की है और अब भी कर रहा हूँ। अब यह छोकरा आकर मुझे शिक्षा देना चाहता है। और मेरे सामने धार्मिक लेक्चर झाड़ता है। वह किसी पादरी के पास जाकर ऐसी बातें करे। मेरे सामने तो वह सिपाही, और या फिर एक कैदी है।

(बोरिस का प्रवेश। साथ में दो सिपाही हैं, सेक्रेटरी और क्लर्क पीछे पीछे आते हैं।)

जनरल—(उँगली से दिखा कर) लाओ, इसे उधर खड़ा करो।

बोरिस—मुझे कही आने की ज़रूरत नहीं है। जहाँ जी चाहेगा वहाँ मैं खड़ा रहूँगा, या बैठ जाऊँगा; क्योंकि मैं तुम्हारे शासन को नही मानता।

जनरल—चुप रहो! तुम शासन को नही मानते! देखो मैं अभी मनवाता हूँ।

बोरिस—(एक स्टूल पर बैठ जाता है) तुम्हारा इतना चिल्लाना कितना अनुचित है?

जनरल—इसे उठा कर खड़ा कर दो (सिपाही उसे उठाते हैं।)

बोरिस—हाँ, यह तुम कर सकते हो। तुम मुझे मार डाल सकते हो, मगर तुम मुझसे कुछ मनवा नहीं सकते।

जनरल—खामोश, तुमसे एक बार कह दिया। मैं तुमसे जो कुछ कहता हूँ उसे सुनो।

बोरिस—तुम्हें जो कुछ कहना है उसे मैं बिलकुल नहीं सुनना चाहता।

जनरल—यह पागल है। शफाखाने में ले जाकर इसकी जाँच करनी चाहिए।

कर्नल—इसे जेण्डरमीन के दफ्तर में भेज कर जाँच कराने का हुक्म हुआ था।

जनरल—अच्छा, तो इसे वहीं भेज दो। मगर इसे वर्दी पहना दो।

कर्नल—वह पहनता ही नहीं है। ज़ोर करता है।

जनरल—इसे बांधदो। (बोरिस से) मैं जो कुछ कहता हूँ मेहरबानी करके उसे सुनो। मुझे इस बात की पर्वा नहीं कि तुम्हारी क्या गति होगी, मगर मैं तुम्हारी खातिर तुम्हे सलाह देता हूँ, कि ज़रा सोच समझ देखो। तुम किसी किले में सड़ते रहोगे और किसी को कुछ भी फायदा नहीं पहुँचा सकोगे। इन बातों को छोड़ दो। तुमने बिगड़ कर बातें कीं, इसी लिए मैं भी बिगड़ पड़ा। (कन्धे पर हाथ रखकर) जाओ, कसम खा लो, और इस वाहियातपन को छोड़ दो। (सेक्रेटरी से) क्या पादरी सा० मौजूद हैं? (बोरिस से) क्यों, क्या कहते हो? (बोरिस खामोश है) तुम उत्तर क्यों नही देते? बहतर है, तुम मेरे कहने के मुताबिक काम करो। तुम कोडा मार कर डण्डे को नहीं तोड़ सकते। तुम उन विचारों को दिल में रखकर किसी तरह मियाद पूरी कर दो। तुम्हारे साथ बल-प्रयोग नहीं करेंगे। क्यो?

बोरिस—मुझे जो कुछ कहना था, कह दिया। अब मुझे कुछ नहीं कहना।

जनरल—देखो, तुमने लिखा है कि बाइबिल में इस बात का वर्णन है। पादरी लोग इन सब बातो को अच्छी तरह से जानते हैं। तुम उनसे बात-चीत करके निर्णय कर सकते हो। बस यही ठीक है। अच्छा, वन्दे। मै आशा करता हूँ, कि दुबारा मिलने पर, मै तुम्हे, जार की फौज में भरती होजाने पर बधाई दे सकूंगा। पादरी साहब को यहां बुला लाओ।

(प्रस्थान, साथ ही कर्नल और सेक्रेटरी जाते हैं।)

बोरिस—(क्लर्क और सिपाहियों से) देखो, वह तुम्हें किस तरह धोखे मे डालते हैं। उनकी बात मत मानो। अपनी बन्दूकें रख दो और नौकरी छोड़कर चले जाओ। वह शायद तुम्हे कोठरी में बन्द करके कोड़े लगायेंगे। लगाने दो। यह कोड़े खाना इतना बुरा नहीं जितना कि इन धोखे-बाजों की नौकरी करना।

क्लर्क—मगर भला, फौज के विना काम किस तरह चलेगा? यह तो असम्भव है।

बोरिस—यह सोचना हमारा काम नहीं है। हमें तो यही देखना है कि ईश्वर की क्या आज्ञा है, और वह हमसे किस बात की आशा रखता है?

एक सिपाही—मगर फिर लोग "ईसाई-फौज" का नाम कैसे लेते हैं?

बोरिस—बाइबिल में इसका कहीं जिक्र नहीं है। यह सब इन लोगों की मन-गढन्त और चालबाजी है।

(क्लर्क के साथ एक जेन्डरमी अफ़सर का प्रवेश)

अफसर—क्या प्रिन्स-चेरमशेनव नाम का नया सैनिक यहीं है ?

क्लर्क—जी हां, यहीं हैं।

अफ़सर—मेहरबानी करके इधर आइए। क्या आपही वह प्रिन्स बोरिस चेरमशेनव हैं कि जो शपथ खाना अस्वीकार करते हैं।

बोरिस—हां, मैं हां हूँ।

अफ़सर—(बैठता है और सामने बैठ जाने का इशारा करता है।) मेहरबानी करके बैठ जाओ।

बोरिस—मैं समझता हूँ, हमारी बात-चीत बिलकुल बेकार होगी।

अफसर—मै तो ऐसा नहीं समझता। कम से कम आपके हक में बेकार साबित नहीं होगी। देखिए, बात यह है, मुझे सूचना मिली है कि आप फौजी नौकरी करना और कसम खाना अस्वीकार करते हैं, इस लिए आप पर क्रान्तिकारी होने का सन्देह है और मैं इसी बात का अनुसन्धान करना चाहता हूँ। अगर यह बात सच है, तो हमें आपको नौकरी से हटाकर बग़ावत मे आपने जैसा हिस्सा लिया उसके मुताबिक आपको कैद या जिला-वतन करना पड़ेगा। और अगर यह बात ठीक नहीं है, तो हम आपको फ़ौजी अफ़सरों के हाथ में छोड़ देंगे। देखिए, मैं आपसे बिलकुल साफ़-साफ़ बातें करता हूँ। और, आशा है, आप भी मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे।

बोरिस—अव्वल तो मैं उन लोगों का विश्वास नही कर सकता जो इस तरह की वरदी वगैरः पहनते हैं। दूसरे, आपका

पेशा ऐसा है कि जिसकी मैं इज्जत नहीं कर सकता और जिससे मुझे सख्त नफरत है। मगर मैं आपके सवालो का जवाब देने से इन्कार नही करता। आप क्या पूछना चाहते हैं ?

अफ़सर—अव्वल तो, आप अपना नाम, पेशा और मज़हब बताइए।

बोरिस—आपको यह सब मालूम है, इस लिए मैं जवाब नही दूंगा। हां सिर्फ एक सवाल ज़रूरी है। मै "कट्टर-ईसाई" नहीं हूँ।

अफसर—तब आपका क्या मज़हब है ?

बोरिस—मैंने उसका कोई नाम नहीं रक्खा है।

अफ़सर—मगर फिर भी······?

बोरिस—अच्छा तो, ईसाई-धर्म; 'पर्वत पर के उपदेश' के अनुसार।

अफ़सर—लिख लो (क्लर्क लिखता है) आप किसी जाति या राष्ट्र से सम्बन्ध रखते हैं ?

बोरिस—किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं अपने को केवल मनुष्य और ईश्वर का सेवक समझता हूँ।

अफसर—तुम अपने को रूसी-राष्ट्र का एक सदस्य क्यो नहीं मानते हो ?

बोरिस—क्योकि मैं किसी राष्ट्र को स्वीकार नही करता।

अफसर—स्वीकार नहीं करने से आप का क्या मतलब है ? क्या आप उन्हें नष्ट कर देना चाहते हैं।

बोरिस—बेशक, मैं उन्हें नष्ट कर देना चाहता हूँ और इसके लिए कोशिश कर रहा हूँ।

अफसर—(क्लर्क से) इसे भी लिख लो (बोरिस से) आप किस तरह की कोशिश करते हैं ?

बोरिस—मैं धोखेबाज़ी और चालबाजियों की पोल खोलता हूँ और सत्य का प्रचार करता हूँ। आप जिस वक्त आये मैं इन सिपाहियों को यही समझा रहा था कि इनकी चाल-बाज़ियों में मत फँसो।

अफसर—मगर समझाने और पोल खोलने के सिवा क्या आप दूसरे तरीकों से भी काम लेना पसन्द करते हैं ?

बोरिस—नहीं, मैं सिर्फ नापसन्द ही नहीं करता, बल्कि हर तरह की हिंसा को पाप समझता हूँ। और सिर्फ हिंसा अथवा बल-प्रयोग को ही नहीं, बल्कि हर तरह के गुप्त-कार्यों को और चाल-बाज़ियो·····

अफ़सर—इसको लिख लो। अच्छी बात है। अब मेहरबानी करके आप बताइए कि आप किस-किस को जानते हैं ? क्या आप आइवशेन्को से परिचित हैं ?

बोरिस—नहीं।

अफ़सर—क्लीनको ?

बोरिस—मैंने उसका नाम सुना है, मगर कभी उससे मिला नहीं।

(पादरी का प्रवेश, पादरी बूढ़ा है, क्रास पहिने हुए हैं, हाथ में बाइबिल है। क्लर्क उसके पास जाकर आशीर्वाद ग्रहण करता है।)

अफसर—बस, इतना ही काफ़ी है। मैं समझता हूँ कि आप

खतरनाक आदमी नहीं हैं, और हमारे शासन-विभाग के अन्दर नहीं आते हैं। मैं चाहता हूँ, आप जल्द रिहा हो जायँ। अच्छा वन्दे। (हाथ मिलाता है)

बोरिस—मैं एक बात आप से कहना चाहता हूँ। माफ़ कीजिए; मगर मुझ से कहे बिना नहीं रहा जाता। आपने इस दुष्टता-पूर्ण क्रूर-वृत्ति को क्यों पसन्द किया है ? मैं आपको सलाह दूंगा कि आप इसे छोड़ दें।

अफ़सर—(मुस्कराता है) आपकी मेहरबानी का मैं शुक्रिया-अदा करता हूँ। इस बारे में मेरी राय आप से नहीं मिलती। मैं आदाबअर्ज़ करता हूँ। (पादरी से) पादरी सा० मैं अपनी जगह आपको सौंपता हूँ।

(क्लर्क के साथ प्रस्थान)

पादरी—तुम अपने ईसाई-धर्म का पालन न करके और ज़ार तथा मातृ-भूमि की सेवा से इनकार करके हाकिमों को क्यों इतना नाखुश करते हो ?

बोरिस—चूँकि मैं ईसाई-धर्म का पालन करना चाहता हूँ, इस लिए मैं सैनिक नहीं बनना चाहता।

पादरी—क्यों नहीं चाहते हो ? देखो, यह लिखा है, "दोस्त के लिए जान दे देना" सच्चे ईसाई का धर्म है।

बोरिस—हां, "अपनी जान दे देना" न कि दूसरे आदमी की जान लेना। बस, यही तो मैं करना चाहता हूँ—मैं अपनी जान देने को तय्यार हूँ।

पादरी—ऐ नौजवान आदमी, तुम्हारा कहना ठीक नहीं है। ज़ान ने सिपाहियों से कहा था—

बोरिस—इससे तो सिर्फ यह साबित होता है कि उन दिनों में भी सिपाही लोग लूटते थे और जान ने उन्हें ऐसा करने से मना किया।

पादरी—अच्छा, तुम कसम क्यो नहीं खाते ?

बोरिस—आप जानते हैं; बाइबिल में कसम खाना मना है।

पादरी—बिलकुल नहीं। तुम जानते हो, एक बार पाइलेट ने ईसा-मसीह को कसम दिला कर पूछा था कि वह सचमुच ईसा-मसीह है। ईसा-मसीह ने जवाब मे कहा था, "हां, मैं वही हूँ।" इससे सिद्ध होता है कि कसम खाना मना नही है।

बोरिस—तुम्हे, बूढ़े होकर, ऐसी बात करते लज्जा नही आती ?

पादरी—मेरा कहा मानो, हठ मत करो। हम और तुम दुनिया को बदल नहीं सकते। बस, शपथ ले लो और आराम से रहो। यह बात जानने का काम गिरजा को ही सौंप दो कि पाप किस मे है और किसमें नही ?

बोरिस—तुम्हे सौंप दें ! क्या तुम्हें अपने सिर पर इतना पाप का बोझा लादते डर नही लगता है ?

पादरी—कैसा पाप ? बचपन से ही मैं धर्म मे श्रद्धा रखता हूँ और तीस साल से मैं पादरी का कार्य कर रहा हूँ। इस लिए मुझे कोई पाप लग ही नही सकता।

बोरिस—तुम इतने सारे लोगों को जो धोखा देते हो इसका पाप फिर किसको लगता है ? इन बेचारों के दिमाग़ में क्या भरा हुआ है ? (सिपाहियों की ओर)

पादरी—ऐ नौजवान आदमी, हम तुम कभी इस बात का फ़ैसला

नहीं कर सकते। हमारा काम यही है कि हम अपने से बड़ों की आज्ञा मानें।

बोरिस—मुझे अकेला रहने दो। मुझे तुम पर अफ़सोस आता है और मैं कहता हूँ कि तुम्हारी बातें सुन कर मुझे घृणा होती है। अगर तुम इस जनरल की तरह होते तो कुछ परवा नहीं थी, मगर तुम क्रास लटका कर, बाइबिल लेकर ईसा-मसीह के नाम की दुहाई देकर, ईसा-मसीह की शिक्षा के विरुद्ध मुझे चलाना चाहते हो! जाओ, (उत्तेजित होकर) हटो! मेरे पास से चले जाओ। सिपाहियो, मुझे कोठरी में बन्द कर दो। मैं किसी से मिल न सकूं। मैं थक गया हूँ—बेहद थक गया हूँ।

पादरी—यह बात है, तो मैं जाता हूँ, वन्दे।

(सेक्रेटरी का प्रवेश)

सेक्रेटरी—कहिए?

पादरी—बड़ा ही हठ-धर्मी और बड़ा ही उद्दण्ड है।

सेक्रेटरी—तो वह शपथ लेने और नौकरी करने से इनकार करता है?

पादरी—वह किसी तरह राजी नहीं होगा।

सेक्रेटरी—तब फिर उसे शफाखाने में भेजना होगा।

पादरी—और कह दिया जायगा कि वह बीमार है? बेशक यह ठीक होगा, नहीं तो उसकी देखा-देखी और लोग भी बहक जायँगे।

सेक्रेटरी—मुझे हुक्म मिला है कि इसे मस्तिष्क-विकार वाले विभाग में निरीक्षण के लिए रक्खा जाय।

पादरी—ठीक है, आदाब अर्ज करता हूँ। (प्रस्थान)

सेक्रेटरी—(बोरिस के पास जाकर) आइए, मुझे हुक्म मिला है कि मैं आपको पहुँचा दूँ....

बोरिस—कहां ?

सेक्रेटरी—अव्वल तो शफाखाने में जहां आप शान्ति से रहेंगे और अच्छी तरह से सोच-विचार सकेंगे।

बोरिस—मैंने बहुत पहले ही सब-कुछ सोच-विचार लिया है। मगर आइए, हम लोग चलें।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

(शफ़ाख़ाने का कमरा, हेड डाक्टर, असिस्टेण्ट डाक्टर और एक अफ़सर, रोगी चारपाई पर बैठा है, वार्डर वर्दी पहिने खड़े हैं।)

डाक्टर—देखो, तुम्हे उत्तेजित नहीं होना चाहिए। मैं खुशी से तुम्हे शफाख़ाना छोड़ कर चले जाने की आज्ञा देता, मगर तुम खुद ही जानते हो, आजादी तुम्हारे लिए ख़तरे से ख़ाली नही है। अगर मुझे विश्वास होता कि बाहर तुम्हारी अच्छी तरह ख़बरगिरी.....

रोगी—आप समझते हैं, मैं फिर शराब पीने लगूँगा ? नहीं, मैं काफी शिक्षा पा चुका हूँ। मगर जो दिन मैं अब यहां गुज़ारता हूँ वह मुझे हानि ही पहुँचाता है। (उत्तेजित होकर) आपका जो कर्तव्य है आप बिलकुल उसके विरुद्ध कार्य कर रहे हैं। आप बड़े ही निर्दयी हैं। आप जो करें सो थोड़ा है।

डाक्टर—उत्तेजित मत होओ।

(वार्डरों को इशारा करता है, वह लोग पीछे से आते हैं।)

रोगी—आप स्वतंत्र हैं, इसलिए आप मज़े से बहस कर सकते हैं; मगर हम क्या करें, जब कि हमें पागलों के बीच रहने को मजबूर किया जाता है। (वार्डरों से) तुम क्या करना चाहते हो? चलो, हटो यहां से।

डाक्टर—मैं आप से प्रार्थना करता हूँ, आप ज़रा शान्त रहिए।

रोगी—मगर मैं आपसे प्रार्थना और अनुरोध करता हूँ कि आप मुझे स्वतंत्र कर दीजिए!

(चिल्लाता है, और डाक्टर पर झपटता है, मगर वार्डर उसे पकड़ लेते है, झगड़ा होता है, उसके बाद उसे बाहर ले जाते हैं)

असिस्टेण्ट-डाक्टर—यह देखिए फिर शुरू हो गया। इस वक्त तो वह आप पर झपट ही पड़ा।

हेड-डाक्टर—नशे का असर है, कुछ भी नहीं किया जा सकता। मगर अब हालत कुछ बेहतर है।

(सेक्रेटरी का प्रवेश)

सेक्रेटरी—आदाबअर्ज़ है, जनाब।

हेड-डाक्टर—आदाबअर्ज़।

सेक्रेटरी—मै प्रिन्स बोरिस चेरमशेनव नाम के एक मज़ेदार आदमी को आपके पास लाया हूँ, वह हाल में ही फौज मे भरती हुआ है, मगर धार्मिक कारणों से सैनिक-सेवा करना अस्वीकार करता है। वह जेण्डरमीस के पास भेजा गया था, मगर वह कहते हैं कि राजनैतिक षड्यन्त्रों मे सम्मिलित न होने के कारण वह हमारे शासन-विभाग मे नहीं आता है। पादरी ने भी समझाया, मगर सब बेकार हुआ।

हेड-डाक्टर—(हँस कर) और उसके बाद, हस्व-मामूल आप उसे यहाँ ले आये कि जिसे शायद आप अपील की सबसे ऊँची अदालत समझते हैं। अच्छा, लाइए।

(असिस्टेण्ट डाक्टर का प्रस्थान)

सेक्रेटरी—कहते हैं कि वह एक उच्च-शिक्षा प्राप्त मनुष्य है और एक अमीर लड़की के साथ उसका विवाह होने वाला है। यह बिलकुल अजीब बात है। मैं वास्तव में समझता हूँ कि यह स्थान उसके योग्य ही है।

हेड-डाक्टर—उस पर किसी बात की धुन सवार है।

(बोरिस अन्दर लाया जाता है)

हेड-डाक्टर—आइए, आइए। मेहरबानी करके तशरीफ रखिए। हम लोग कुछ बात-चीत करेंगे। (सेक्रेटरी से) आप मेहरबानी करके जाइए। (सेक्रेटरी जाता है)

बोरिस—मैं आपसे एक प्रार्थना करता हूँ कि यदि आप मुझे कहीं बन्द करना चाहते हैं तो मेहरबानी करके शीघ्र ही बन्द कर दीजिए ताकि मैं कुछ आराम कर सकूँ।

हेड-डाक्टर—माफ़ कीजिए, हमें नियमानुसार काम करना पड़ता है। बस, मैं थोड़े से ही सवाल करूँगा। आपको क्या हुआ? आपको किस बात की शिकायत है?

बोरिस—मुझे कुछ भी नहीं हुआ है, न मुझे कोई शिकायत है। मैं बिलकुल भला-चंगा हूँ।

हेड-डाक्टर—मगर आप दूसरे लोगों का सा व्यवहार तो नहीं करते?

बोरिस—मैं अपनी आत्मा के आज्ञानुसार व्यवहार करता हूँ।

हेड-डाक्टर—देखिए, आपने फ़ौजी नौकरी करने से इन्कार कर दिया। आखिर, आपने किस वजह से ऐसा किया ?

बोरिस—मैं ईसाई हूँ, इसलिए हत्या नहीं कर सकता।

हेड-डाक्टर—मगर दुश्मनों से अपने देश की रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है, और सामाजिक शृंखला का विध्वंस करनेवाले को रोकना भी ज़रूरी है।

बोरिस—कोई हमारे देश पर आक्रमण नहीं कर रहा है; और गवर्नर अथवा राज-कर्मचारी ही अधिक संख्या में सामाजिक शृंखला को विध्वंस करनेवाले होते हैं, बनिस्बत उन लोगों के कि जिन्हें वह पकड़ कर कैद करते हैं और सताते हैं।

हेड-डाक्टर—जी, आपका मतलब क्या है ?

बोरिस—मेरा मतलब यह है। सब बुराइयों की जड़ शराब है, इसे खुद गवर्नमेंट बेचती है; झूठे और जालिम मज़हब का प्रचार भी गवर्नमेंट ही करती है और यह फौजी नौकरी, जो वह मुझसे कराना चाहते हैं और जो लोगों को नीति-भ्रष्ट और पतित बनाने का मुख्य साधन है—यह भी इसी गवर्नमेंट के हाथ में है।

हेड-डाक्टर—तब आपकी राय में गवर्नमेंट अर्थात् शासन-संस्था और राष्ट्र अनावश्यक है।

बोरिस—यह तो मैं नहीं जानता; मगर यह बात मैं खूब अच्छी तरह से जानता हूँ कि मुझे किसी बुराई में भाग नहीं लेना चाहिए।

हेड-डाक्टर—मगर फिर दुनिया का क्या हश्र होगा ? क्या ईश्वर ने हमें बुद्धि इसीलिए नही दी है कि हम दूरदर्शिता से काम लें ?

बोरिस—ईश्वर ने बुद्धि इसलिए भी दी है कि हम इस बात को समझें कि सामाजिक श्रृंखला की रक्षा हिंसा के द्वारा नहीं बल्कि नेकी के द्वारा करनी चाहिए; और इसलिए भी कि एक आदमी का किसी बुराई में भाग लेने से इन्कार कर देना किसी तरह खतरनाक नहीं हो सकता।

हेड-डाक्टर—अच्छा, अब जरा मुझे जाँच करने दीजिए। क्या आप मेहरबानी करके लेट सकते हैं ? (उसको छूकर) यहाँ दर्द तो नही होता ?

बोरिस—नही।

हेड डाक्टर—और न यहां ?

बोरिस—न।

हेड-डाक्टर—ज़रा गहरी सांस तो लीजिए। अब ज़रा दम साध लीजिए। गुस्ताखी माफ हो। (एक फ़ीता लेकर उसकी पेशानी और नाक नापता है।) अब मेहरबानी करके आप जरा आंख बन्द करके चलिए।

बोरिस—आपको यह सब करते हुए शर्म नही आती ?

हेड-डाक्टर—आप कह क्या रहे हैं ?

बोरिस—यह सब वाहियात है। आप जानते हैं कि मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ और मै यहां इसलिए भेजा गया हूँ कि मैं उनके दुष्कर्मों में सम्मिलित होना नही चाहता। और चूंकि मैंने जो कुछ कहा है वह बिलकुल सच है और उसका यह कोई जवाब नहीं दे सकते, इसीलिए वह मुझे पागल समझने

का बहाना करके लोगो को भुलावे मे डालना चाहते हैं।
और आप उनको इन वाहियात बातों में मदद देते हैं। यह
बहुत ही घृणित और लज्जास्पद है।

हेड-डाक्टर—तो आप टहलना नहीं चाहते ?

बोरिस—नही, कभी नहीं ! आप ज़बरदस्ती से चाहे जो कराइए,
मगर मैं अपने-आप कुछ नही करूँगा। (तेज़ी से) मुझे
अकेले में रहने दीजिए।

(डाक्टर घंटी बजाता है, दो वार्डरों का प्रवेश)

हेड-डाक्टर—उत्तेजित मत होओ। मैं जानता हूँ कि आप बहुत
थक गये हैं। क्या आप मेहरबानी करके अपने वार्ड को जायँगे ?

(असिस्टेण्ट डाक्टर का प्रवेश)

असिस्टेण्ट—चेरमशेनव से मिलने के लिए कुछ लोग आये हैं।

बोरिस—कौन लोग है ?

असिस्टेण्ट—निकोलस और उनकी लड़की।

बोरिस—मै उनसे मिलना चाहता हूँ।

हेड डाक्टर—न मिलने की कोई वजह भी नहीं है। उन्हे अन्दर
बुलालो। आप उनसे यही मिल लीजिए।

(प्रस्थान, पीछे-पीछे असिस्टेण्ट और वार्डर जाते हैं. निकोलस
और ल्यूबा का प्रवेश, शाहज़ादी दरवाजे से झांकती है
और कहती है—"तुम चलो, मैं पीछे से आऊँगी")

ल्यूबा—(सीधी बोरिस के पास जाती है, उसका हाथ अपने हाथो
में लेकर चूमती है) अभागे बोरिस ?

बोरिस—तुम मेरे लिए दुःख न प्रकट करो ! मुझे अत्यन्त हर्ष,
अत्यन्त आनन्द और अत्यन्त आल्हाद है। आप कैसे हैं ?

(निकोलस का हाथ चूमता है)

निकोलस—मैं तुमसे ख़ासकर एक बात कहने को आया हूँ। सबसे पहली बात यह है कि ऐसे मामलों में हद से ज्यादा बढ़ जाना काफी दूर न जाने से भी अधिक बुरा है। इस मामले में तुम्हे वही करना चाहिए जो बाइबिल में लिखा है, और पहले से ही इस तरह पेश-बन्दी नहीं करना चाहिए, कि मैं यह कहूँगा या ऐसा करूँगा। "जब वे तुम्हें गिरफ्तार कर लें, तो तुम यह मत सोचो, कि तुम क्या बोलोगे और किस तरह बोलोगे; क्योंकि ऐसे मौके पर तुम नहीं बोलते हो बल्कि तुम्हारे स्वर्गीय पिता की आत्मा ही तुम्हारे द्वारा बोलती है।" अर्थात् तुम किसी कामको महज़ इसलिए मत करो कि तुमने खूब सोच विचार कर उस काम को करने का निश्चय कर लिया है, बल्कि उसी वक्त उस काम में हाथ लगाओ कि जब तुम्हारा अन्तःकरण और तुम्हारा आत्मा उस काम के करने की प्रेरणा करे, और तुम्हे ऐसा महसूस हो कि तुम उस काम को किये बिना रह ही नहीं सकते।

बोरिस—मैंने ऐसा ही किया है। मैंने यह सोचा नही था कि मै नौकरी करने से इनकार कर दूँ, मगर जब मैंने यह धोखे-बाजियाँ और पुलिस की चालाकियाँ देखी, जब मुझे न्याय की नृशंसता और अफसरों की निरंकुशता मालूम हुई तब मैंने जो कुछ कहा वह मुझसे कहे बिना रहा नही गया। पहले, शुरू शुरू में तो, मुझे भय लगा, मगर बाद को तो मेरा दिल हिम्मत और खुशी से भर गया।

(ल्यूबा बैठ जाती है और रोती है)

निकोलस—सब से मुख्य बात यह है कि प्रशंसा के लिए और लोगों की सुसम्मति प्राप्त करने के लिए कोई काम न करना। अपने बारे में तो मै साफ़ तौर से कहता हूँ कि अगर तुम इसी वक्त शपथ लेकर नौकरी में भरती हो जाओ, तो मैं तुम्हे पहले से किसी तरह कम नही, बल्कि, अधिक ही प्यार करूँगा और पहले से अधिक आदर की दृष्टि से देखूँगा; क्योंकि बाह्य-जगत मे जो कुछ होता है वह महत्व-पूर्ण नहीं है, महत्व तो उसी का है कि जो आत्मा के अन्दर विस्फूर्ति-मय विकास होता है।

बोरिस—बेशक, क्योंकि आत्मा के अन्दर जो कुछ होता है, उसका प्रभाव पढ़कर बाह्य-जगत् मे परिवर्तन अवश्य होगा।

निकोलस—मुझे जो कुछ कहना था, वह मैं कह चुका। तुम्हारी माँ आई है। वह बहुत परेशान हैं। वह जो कुछ कहती हैं, अगर तुम कर सकते हो तो करो— बस, यही मैं तुमसे कहना चाहता था।

(नेपथ्य में रोने की आवाज़, एक पागल अन्दर घुस आता है। वार्डर उसे पकड़ ले जाते हैं।)

ल्यूबा—कितनी भयानक जगह है! और तुम्हे यही रहना होगा? (रोती है) ।

बोरिस—मुझे इस बात का डर नहीं है और सच पूछो तो अब मुझे किसी बात का डर नही रहा। मेरा दिल ख़ुशी से भरा हुआ है; बस, मुझे तुम्हारा ही ख्याल है। क्या तुम मेरी ख़ुशी बढ़ाने में सहायता दोगी?

ल्यूबा—क्या मैं यह देख कर ख़ुश हो सकती हूँ?

निकोलस—नहीं, खुश नहीं, खुश होना असम्भव है। मैं खुद खुश नहीं हूँ। मैं उसकी वजह से दुखी हूँ और खुशी से उसकी जगह लेने को तैयार हूँ। मगर, यद्यपि मैं दुःखी हूँ, फिर भी मैं जानता हूँ कि इसमें भलाई है।

ल्यूबा—हो सकती है। मगर वह इन्हे छोड़ेंगे कब ?

बोरिस—यह कोई नहीं कह सकता। मैं तो भविष्य का ध्यान भी नहीं करता। वर्तमान ही बहुत सुखदायक है और तुम उसे और भी सुखदायक बना सकती हो।

(शाहज़ादी का प्रवेश)

शाहज़ादी—मैं अधिक देर नही ठहर सकती। (निकोल्स से) क्या तुमने इसे समझाया ? वह राज़ी है न ? बोरिस, मेरे लाल, ज़रा मेरी तरफ देख, मुझ पर रहम कर। तीस वर्ष से मैं तेरा मुँह देख कर जीती हूँ। मैंने पाल पोस कर इतना स्याना किया, और अब, जब कि सब ठीक-ठाक हो गया, तू निर्मोही होकर हम सब को छोड़ता है। जेलखाना और बेइज्जती ! अरे नहीं, बोरिया !

बोरिस—मां, मेरी बात सुनो।

शाहज़ादी—(निकोल्स से) तुम कहते क्यों नहीं ? तुमने ही इसे बरबाद किया है और तुम ही इसे समझाओ। यह सब चोचले तुम्हारे लिए ठीक है। ल्यूबा, कुछ बोलो। इसे समझाओ तो सही।

ल्यूबा—मैं कुछ नहीं बोल सकती।

बोरिस—सुनो, मां, दुनिया में कुछ ऐसी भी बातें हैं जो बिलकुल ही असम्भव हैं। मै फौजी नौकरी नहीं कर सकता।

शाहज़ादी—तुम समझते हो कि तुम नहीं कर सकते। यह सब वाहियात है। सभी ने फौजी नौकरी की है और अब भी कर रहे हैं। तुमने और निकोलस ने मिल कर एक नई तरह का ईसाई-धर्म निकाला है। यह ईसाई-धर्म नहीं, बल्कि शैतानी-सिद्धान्त है जो सब को दुःख देता है।

बोरिस—जो कुछ बाइबिल में लिखा है, वही हमारा मत है।

शाहज़ादी—बाइबिल में यह कुछ नहीं है और अगर है तो वह मूर्खता-पूर्ण है। मेरे प्यारे बोरिस! मुझ पर रहम करो। (गर्दन से लिपट कर रोती है) मेरा सारा जीवन दुःखमय है। मेरे जीवन मे केवल एक ही आशा और सुख की किरण है, तुम उसी को नष्ट किये डालते हो। बोरिस मुझ पर दया करो।

बोरिस—मां, यह मुझे बहुत ही कठिन और असह्य है। मगर, मैं तुम्हे कैसे बताऊँ?

शाहज़ागी—देखो, अब इन्कार मत करो। कह दो, तुम नौकरी करोगे।

निकोलस—कह दो, तुम इस पर विचार करोगे। और तुम ज़रूर इस पर एक बार विचार करना।

बोरिस—अच्छी बात है। मगर मां, तुम्हें भी मुझ पर तरस खाना चाहिए। यह मेरे लिए असह्य है। (नेपथ्य में फिर रोने की आवाज़) तुम जानती हो कि मैं पागलखाने में हूँ और डर है कि कही सचमुच ही पागल न हो जाऊँ।

(हेड डाक्टर का प्रवेश)

हेड डाक्टर—श्रीमती जी इसका खराब असर हो सकता है। आपका लड़का बहुत ही उत्तेजित अवस्था में है। मैं समझता हूँ कि इस मुलाकात को खत्म करना चाहिए। आप बृहस्पतिवार और रविवार को मिलने के लिए आ सकती हैं। मेहरबानी करके बारह बजे से पहले आइए।

शाहज़ादी—अच्छी बात है, अच्छी बात है, मैं जाती हूँ। बोरिया, मुझ पर रहम खाकर इस पर फिर से विचार करो और गुरुवार को खुश-ख़बरी सुनाने के लिए तैयार रहना।

निकोलस—(बोरिस से हाथ मिला कर) ईश्वर का नाम लेकर और यह समझ कर कि जैसे तुम कल ही मरने वाले हो, इस विषय पर फिर से विचार करके देखो। सत्य निर्णय पर पहुँचने का यही मार्ग है। अच्छा, वन्दे।

बोरिस—(ल्यूबा के पास जाकर) और तुम मुझसे क्या कहती हो?

ल्यूबा—मैं झूठ नही बोल सकती, और मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्यो अपने को और दूसरे सब लोगों को दुःख देते और सताते हो। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं—और मैं तुम्हें कुछ कह नही सकती।

(रोती हुई बाहर जाती हैं। बोरिस के सिवाय सब का प्रस्थान)

बोरिस—(अकेला) मोह कितना कठिन, कितना असत्य है? ईश्वर मेरी सहायता करो। (प्रार्थना करता है)

(चोग़ा लेकर वार्डर आते हैं)

चौथा अंक

पहला दृश्य

(एक साल बाद निकोलस के मास्को वाले घर मे नाच का इंत
ज़ाम हो रहा है। पियानों के चारों तरफ़ प्यादे गमले
रखते हैं। मेरी, एक शानदार रेशमी पोशाक पहने
अलेक्ज़ेण्डरा के साथ आती है।)

मेरी—बॉल ? नहीं, नहीं, दिल बहलाने के लिए कुछ नाचना गाना होगा। नौजवानों के लिए एक भोज भी होना चाहिए। मेरे बालकों ने जब से मेकफ वाले नाटकों में पार्ट लिया था तब से उन्हे हर कही नाच-पार्टियों में जाने के लिए निमंत्रण आते हैं। निमंत्रणों के बदले मुझे भी तो एक बार उन्हें निमंत्रित करना चाहिए।

अलेज्ज़ेण्डरा—मुझे भय है, निकोलस इसे पसन्द नहीं करता।

मेरी—इसके लिए भला मैं क्या करूँ? (प्यादे से) उसे इधर रक्खो। (अलेक्जेण्डरा से) ईश्वर जानता है, मेरी खुशी इसी में है कि मैं उन्हें सुखी देखूँ और किसी तरह का रंज न होने दूँ। मगर मैं देखती हूँ कि अब वह इन बातों पर इतना ज़ोर नही देते।

अलेक्जेण्डरा—नही, नहीं, सिर्फ अपने दिल की बात अब उस तरह ज़ाहिर नहीं करता है। भोजन के बाद जिस वक्त वह

अपने कमरे में चला गया, मैंने देखा कि वह बहुत ही अप्रसन्न और असन्तुष्ट था।

मेरी—मैं क्या कर सकती हूँ ? आखिर, हम आदमी हैं और हमें आदमियों की तरह रहना होगा। हमारे सात बच्चे हैं; अगर घर में उनके हँसने-खेलने और जी बहलाने का कोई इन्तज़ाम न होगा तो ईश्वर जाने वह क्या न कर उठायेंगे। खैर, ल्यूबा की तरफ़ से मैं अब बिलकुल निश्चिन्त और सन्तुष्ट हूँ।

अलेक्ज़ेण्डरा—क्या सब तय हो गया ? क्या उसने विवाह का प्रस्ताव किया था ?

मेरी—हाँ, बस तय ही समझिए। वह उससे बोला था और ल्यूबा ने स्वीकार कर लिया।

अलेज़ेण्डरा—इससे उसके दिल को और भी चोट पहुँचेगी।

मेरी—वह सब जानते हैं, उनसे कुछ छिपा थोड़े ही है।

अलेक्ज़ेण्डरा—वह उसे पसन्द नहीं करता है।

मेरी—(प्यादे से) फल को अलमारी में रख दो। किसे पसन्द नहीं करता ? अलेक्ज़ेण्डर मिकालोविच को ? जी, वह उसे कभी पसन्द नहीं कर सकते; क्योंकि वह उनके प्रिय सिद्धान्तों के खण्डन की जीती-जागती मूर्ति है। वह बहुत ही हँस-मुख, नेक और दयालु-प्रकृति है और दुनिया के रंग-ढंग को अच्छी तरह जानता है। मगर बोरिस चेरमशनव ! ओह, उसके मारे तो मुझे नींद नहीं आती; स्वप्न देख कर सोते से चौंक उठती हूँ। मालूम नहीं, उस बेचारे की क्या गति हुई ?

अलेक्ज़ेण्डरा—लिसा उसे देखने गई थी। वह (बोरिस) अब भी वहीं है। वह कहती है कि बोरिस बहुत ही दुबला हो गया है और डाक्टरों को उसकी जान जाने और दिमाग़ में ख़लल पड़ जाने का डर है।

मेरी—हाँ, उनके विचारो के ही वजह से उसने अपनी ज़िन्दगी को कुर्बान कर दिया है। भला, उसके जीवन को नष्ट करने से क्या फायदा है! मैं तो इसे कभी पसन्द नही करती।

(पियानो बजाने वाले का प्रवेश)

मेरी—क्या आप पियानो बजाने के लिए आये हैं?

पियानोवाला—हाँ, मैं पियानो बजाने वाला हूँ।

मेरी—मेहरबानी करके बैठ जाइए। अभी कुछ देर है। थोड़ी चाय पीजिए न?

पियानोवाला—नहीं, इस वक्त तो माफ़ कीजिए (पियानो के पास जाता है।)

मेरी—मैं इन बातों को पसन्द नही करती। मैं बोरिस को चाहती थी; मगर फिर भी वह ल्यूबा के योग्य वर नही था—ख़ास तौर से जब वह उनके कहे के मुताबिक काम करने लगा।

अलेक्ज़ेण्डरा—मगर फिर भी उसके विश्वास की दृढ़ता को देख कर आश्चर्य होता है। इस वक्त वह कैसी मुसीबतें सह रहा है? कर्मचारी कहते हैं कि जब तक वह सैनिक सेवा करना अस्वीकार करेगा तब तक वह या तो उसी जगह बन्द रक्खा जायगा, या, फिर किसी किले के तहखाने मे डाल दिया जायगा। मगर उसकी ज़बान से वही जवाब निकलता

है। लिसा कहती है कि इस हालत मे भी वह बहुत प्रसन्न और आनन्द से परिपूर्ण है।

मेरी—केवल अन्ध-विश्वास है। यह देखो, अलेक्जेण्डरा मिकालोविच आ गये।

(अलेक्जेण्डर मिकालोविच का प्रवेश)

मिकालोविच—मालूम होता है, मैं बहुत जल्दी आ गया हूँ।

(दोनों महिलाओं के हाथ चूमता है।)

मेरी—अच्छा ही हुआ।

मिकालोविच—ल्यूबा कहाँ है? उन्होंने निश्चय किया है कि आज खूब नाच कर गये वक्त की पूर्ति करेंगी और मैंने आज उन्हे सहायता देने का वचन दिया है।

मेरी—वह महफिल के इन्तजाम में लगी हुई है।

मिकालोविच—तो मैं जाकर उनकी मदद कर सकता हूँ?

मेरी—जरूर, आप शौक से जाइए।

(मिकालोविच जाना चाहता है। ल्यूबा का प्रवेश, उसके हाथ मे कुर्सी की गद्दियाँ और कुछ फ़ीते हैं)

ल्यूबा—ओहो, तुम आ गये; बड़ी अच्छी बात है, तुम मुझे मदद दे सकते हो। बैठकखाने में तीन गद्दियाँ और हैं, उन्हे जाकर ले आओ।

मिकालोविच—मैं अभी दौड़ कर जाता हूँ।

मेरी—देखो ल्यूबा, मेहमान लोग आनेवाले हैं; दोस्त लोग इस बारे में सवाल करेंगे। क्या मैं उन लोगों को सूचना दे दूँ?

ल्यूबा—नही, माँ, नही। लोग सवाल करेंगे तो करने दो। पिता जी इसे पसन्द नही करेंगे।

मेरी—मगर वह जानते हैं; क्योंकि अब तक वह सब समझ गये होंगे। और फिर किसी न किसी वक्त उनसे कहना तो होगा ही। मैं समझती हूँ कि आज ही इस विषम की सूचना दे दें तो अच्छा होगा।

ल्यूबा—नहीं, नहीं, माँ, ऐसा न करना। इससे रंग मे भंग हो जायगा। नहीं, इस विषय में तुम अभी कुछ न कहना।

मेरी—जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।

ल्यूबा—अच्छी बात है तो, मगर नाच ख़तम होने के बाद, दावत के ठीक शुरू में।

(मिकालोविच का प्रवेश)

ल्यूबा—क्यो, सब ले आये न ?

मेरी—मैं जाकर ज़रा बच्चों को देखती हूँ।

(अलेक्जेण्डरा के साथ प्रस्थान)

मिकालोविच—(तीन गद्दियाँ लिये हुए है, जिन्हें वह ठोडी से सम्हालता है और रास्ते में कुछ चीजें गिराता जाता है) तुम तकलीफ न करो। ल्यूबा, रहने दो मैं उन्हें उठा लूँगा। तुमने गुलदस्ते तो बहुत से बनाये हैं। बस मै आज ठीक तरह से नृत्य मे भाग ले सकूँगा। वानिया इधर आओ।

वानिया—(बहुत से फूल और गुलदस्ते लिये हुए) यह लो, मैं सब उठा लाया हूँ।

ल्यूबा—मैंने और मिकालोविच ने आज शर्त बदी है; देखें कौन जीतता है।

मिकोलोविच—तुम्हारे लिए बड़ी आसानी है; क्योंकि तुम सब लोगों को जानते हो। मगर मुझे तो पहले-पहल युवती

महिलाओं को प्रसन्न करना होगा। इसके मानी यह है कि दौड़ने से पहले ही तुम चालीस कदम आगे हो।

वानिया—मगर तुम "भावी वर" हो और मैं बालक हूँ।

मिकालोविच—नहीं भाई, मैं अभी "भावी वर" नहीं हूँ, और मैं बालक से भी गया-गुज़रा हूँ।

ल्यूबा—वानिया ! जरा मेरे कमरे से गोंद, सुई और कैंची तो ले आओ। मगर मेहरबानी करके कोई चीज़ मत तोड़ डालना।

वानिया—मै सब चीज़ें तोड़ डालूँगा। (भाग जाता है)

मिकालोविच—(ल्यूबा का हाथ थाम कर) ल्यूबा इसे चूम सकता हूँ ? (उसका हाथ चूम कर) मैं बहुत ही सुखी हूँ। प्यारी ल्यूबा, क्या मेरी आशा पूरी होगी ? क्या तुम मुझे स्वीकार करके अपना दास बनाने की कृपा करोगी ? नाच के वक्त हमे बात करने का मौक़ा मिलेगा ? क्या मैं अपने घरवालो को तार दे दूँ कि मेरी प्रार्थना स्वीकृत हो गई और मैं बहुत ही सुखी हूँ।

ल्यूबा—हाँ, आज रात को।

मिकालोविच—बस, एक बात और है। निकोलस साहब को यह कैसा लगेगा ? क्या तुमने उनसे कह दिया है ?

ल्यूबा—नहीं, मैंने उनसे कहा नहीं है, मगर मैं अब कह दूँगी। वह उसी तरह उदासीन भाव से उसे सुन लेंगे। जिस तरह कि वह अब ख़ानदान के और सब कामों को देख सुन लेते हैं। वह यही कहेंगे, "जैसा तुम्हे अच्छा लगे वैसा करो।" मगर इसमें शक नहीं कि उनके दिल को चोट लगेगी।

मिकालोविच—क्योंकि मैं चेरमशनव नही हूँ ।

ल्यूबा—हाँ, उनकी ख़ातिर अभी तक मैं अपने दिल को दबाये और धोखा देती रही। यह इसलिए नहीं कि उनके प्रति मेरा प्रेम कम हो गया है बल्कि इसलिए कि मैं झूठ नहीं बोल सकती। वह खुद ऐसा कहते हैं। मै चाहती हूँ कि इसी तरह जीवन बिताऊँ।

मिकालोविच—और जीवन ही एक सत्य है। हाँ, चेरमशेनव का क्या हाल है ?

ल्यूबा—(उत्तेजित भाव से) मेरे सामने उनका नाम मत लो। मैं उन्हें दोषी ठहराना चाहती हूँ—उस वक्त दोषी ठहराना चाहती हूँ, जब वह बेचारे मुसीबतें उठा रहे हैं; और जानती हूँ कि यह सब इसलिए है कि मैं उनकी अपराधिनी हूँ। बस, मैं इतना जानती हूँ कि मेरे दिल में उनके प्रति एक तरह का प्रेम है, और मैं समझती हूँ कि वह प्रेम पहले के प्रेम से कहीं अधिक सच्चा और वास्तविक है।

मिकालोविच—ल्यूबा, क्या यह सत्य है ?

ल्यूबा—तुम मुझसे यह कहलाना चाहते हो कि मैं तुम्हें उस सच्चे प्रेम के साथ प्यार करती हूँ ? मैं यह नहीं कहूँगी। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ; मगर यह प्यार दूसरी तरह का है—यह आदर्श-प्रेम नही है। वास्तव मे न तो यही आदर्श प्रेम है और न ही वह। अगर किसी तरह इन दोनों का मिश्रण हो जाता तभी, मैं समझती हूँ, सच्चे प्रेम का आनन्द आता।

मिकालोविच—नहीं, नहीं, मुझे जो कुछ मिला है, मैं उसी से संतुष्ट हूँ (ल्यूबा का हाथ चूमता है) ल्यूबा !

ल्यूबा—(उसे हटा कर) नहीं, जल्दी से इन्हें छाँट लेना चाहिए। लोग आने लगे हैं।

(शाहज़ादी, टानिया, और एक छोटी लड़की का प्रवेश)

ल्यूबा—बैठिए माँ अभी आती हैं।

शाहज़ादी—क्या हमीं लोग सबसे पहले आये हैं ?

मिकालोविच—कोई न कोई तो सबसे पहले आवेगा ही।

स्ट्यूपा—कल रात मैं समझा था इटेलियन सिनेमा में तुमसे जरूर मुलाकात होगी।

टानिया—हम लोग चाची के यहाँ गये थे इसलिए नहीं आ सके।

(विद्यार्थी, महिलायें, मेरी और एक काउन्टेस आती हैं।)

काउन्टेस—क्या हम लोग निकोलस साहब से नहीं मिल सकते ?

मेरी—नहीं, वह पढ़ना छोड़ कर हमारी महफ़िल मे शरीक नहीं होते।

मिकालोविच—अच्छा अब शुरू कीजिए। (ताली बजाता है, नाचने वाले अपनी जगह आकर नाचते हैं)।

अलेक्ज़ेण्डरा—(मेरी के पास जाकर) वह बहुत ही उत्तेजित हो गया। वह बोरिस से मिलने गया था और लौट कर आया तो देखा कि यहाँ महफिल लगी हुई है। वह चला जाना चाहता है। मैं उसके दरवाजे तक गई थी और उसे अलेक्जेण्डर पेट्रोविच से बातें करते हुए देखा।

मिकालोविच—महिलाओ, तैयार हो जाइए, सज्जनो आगे बढ़ो।

अलेक्ज़ेण्डरा—उसने निश्चय कर लिया है कि इस घर में रहना उसके लिए असम्भव है, वह घर छोड़ कर जा रहा है।

मेरी—आह, यह आदमी कितना जालिम है ? (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(निकोलस का कमरा; संगीत की आवाज़ दूर पर सुनाई पड़ती है। निकोलस ओवर कोट पहने हुए है। मेज़ पर एक ख़त रख देता है। अलेक्ज़ेण्डर पेट्रोविच फटे कपड़े पहने उसके साथ है।)

अलेक्ज़ेण्डर पेट्रोविच—आप कुछ चिन्ता न करें; हम लोग काकेशिया तो बिना एक पैसा ख़र्च किये जा सकते हैं; और वहाँ आप कयाम कर सकते हैं।

निकोलस—तूला तक हम रेल पर सफर करेंगे और वहाँ से पैदल चलेंगे। अच्छा, मैं तैयार हूँ। (ख़त को मेज़ के बीच में रखकर दरवाजे तक जाता है, वहां मेरी को खड़ा देखता है।) अरे, तुम यहां क्यों आगई ?

मेरी—क्यों आगई ? तुम्हें इस बज्र निठुराई से रोकने के लिए। तुम यह क्या कर रहे थे ? घर क्यों छोड़े जाते हो ?

निकोलस—इसीलिए कि मैं इस तरह नहीं रह सकता। मुझसे यह बीभत्स पतित जीवन नही सहा जाता।

मेरी—यह तो बहुत ही दुःख-प्रद है। मेरा जीवन—जिसे मैंने तुम्हारी और बच्चों की सेवा के लिए ही अर्पण कर दिया, अब एक-बारगी तुम्हे बीभत्स और पतित मालूम पड़ने लगा है। (अलेक्जेण्डर पेट्रोविच को देखकर) कम-से-कम इस आदमी को तो बाहर भेज दो, मैं नहीं चाहती कि कोई हमारी बातें सुने।

अलेक्ज़ेण्डर पेट्रोविच—आप लोग बातें कीजिए, मैं जाता हूँ।

निकोलस—अलेक्जेण्डर पेट्रोविच, जरा बाहर ठहरो, मैं अभी आता हूँ।

(अलेक्जेण्डर पेट्रोविच का प्रस्थान)

मेरी—भला, तुम्हारा और इसका क्या मेल है? वह तुम्हारी स्त्री से भी बढ़कर तुम्हे प्यारा क्यों है? कुछ समझ में नहीं आता। और तुम जा कहां रहे हो?

निकोलस—मैंने तुम्हारे लिए एक ख़त लिखकर रख दिया है। मैं बोलना नहीं चाहता था, क्यों कि यह मेरे लिए बहुत ही मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर तुम शान्ति से सुनना चाहती हो तो मैं शान्ति के साथ तुम्हे बताने की कोशिश करूंगा।

मेरी—नहीं, मैं यह कुछ नहीं समझती। तुम अपनी पत्नी को, जिसने अपना सर्वस्व तुम्हारे लिए निछावर कर दिया हो, क्यों दुख देते हो और सताते हो? क्यो उससे घृणा करते करते हो? मुझे बताओ, क्या मैं कभी बॉल-नाच-पार्टी मे जाया करती हूँ, या मैंने और कोई बुरी बात की है। मेरा सारा जीवन परिवार के कामों मे ही लग रहा है। मैंने बच्चों को ख़ुद ही दूध पिलाया, उनकी परवरिश की और पिछले साल उनकी पढ़ाई और घर के इन्तज़ाम का सारा बोझ भी सर पर आन पड़ा है।......

निकोलस—(बात काट कर) मगर यह सब तुम्हारे सिर पर इसलिए पड़ा कि तुम मेरे कहने के अनुसार नही रहना चाहती।

मेरी—मगर यह तो बिलकुल असम्भव है। चाहे किसमें पूछ देखो। यह असम्भव था कि बच्चों को अशिक्षित रहने दिया

जाय, जैसा कि तुम रखना चाहते थे, और यह मेरे लिए बहुत कठिन था कि मैं धोबी और रसोइये का काम खुद करूं।

निकोलस—यह तो मैंने कभी नही कहा।

मेरी—खैर, उसका मतलब कुछ इसी तरह का था। देखो, तुम ईसाई हो, तुम दूसरो के साथ नेकी करना चाहते हो और तुम कहते हो कि सब आदमियो को प्यार करते हो, लेकिन उस बिचारी औरत को क्यो सताते हो, जिसने जन्म भर तुम्हारी सेवा मे विताया है।

निकोलस—मैं तुम्हें सताता किस तरह हूँ ? मैं तुम्हे प्यार करता हूँ, मगर........

मेरी—तुम मुझे छोड़कर चले जा रहे हो। यह सताना नहीं तो और क्या है ? यह सुनकर सब लोग क्या कहेगे ? बस यही कहेगे कि या तो मै खराब औरत हूँ और या तुम पागल हो।

निकोलस—अच्छा, यही समझलो कि मैं पागल हूँ, मगर मुझसे इस तरह नही रहा जा सकता।

मेरी—मगर इसमे ऐसी भयानक बात कौनसी है ? अगर साल में एक बार (और सिर्फ एक बार—क्योंकि मुझे डर था कि तुम उसे पसन्द नहीं करोगे) मैंने एक पार्टी दी और वह भी बहुत छोटी और सादीसी, जिसमें सिर्फ मानिया और बारबरा वासिलेवना को ही बुलाया तो वह भी तुम्हे पसन्द न आया। उसे तुम इतना बड़ा अपराध समझते हो कि जिसके लिए मेरी बे-इज्जती और बदनामी होगी। और सिर्फ बे-इज्जती ही नही, सबसे बुरी बात तो यह है कि अब तुम मुझे प्यार

नही करते। तुम औरो को प्यार करते हो, सारी दुनिया को चाहते हो, और उस शराबी अलेक्जेण्डर पिट्रोविच तक को प्यार करते हो, दुनिया भर में एक मैं ही ऐसी बुरी, बद किस्मत और गई-गुजरी हूँ कि जिसे तुम प्यार करना नहीं चाहते ? तुम मुझे प्यार करो या न करो, मगर मैं तुम्हे अब भी चाहती हूँ। और तुम्हारे बगैर जी नहीं सकती। अरे निर्मोही! तुम यह क्यो करते हो ? क्यो मुझे छोड़ते हो ?

(रोती है)

निकोलस—मगर तुम मेरे जीवन—मेरे आध्यात्मिक जीवन को समझना भी तो नही चाहती।

मेरी—मैं समझना चाहती हूँ, मगर नहीं समझ पाती। मैं तो देखती हूँ कि तुम्हारे ईसाई-धर्म ने तुम्हे मुझसे और बच्चों से घृणा करना सिखला दिया है; मगर मेरी समझ में नही आता कि किस लिए ?

निकोलस—तुम देखती हो कि दूसरे लोग जरूर समझते हैं।

मेरी—कौन ? अलेक्जेण्डर पिट्रोविच जो तुम से रुपये पाता है।

निकोलस—वह और दूसरे लोग भी। टानिया और वासिली साहब। लेकिन अगर कोई भी नहीं समझता तो इससे भी कोई अन्तर नही पड़ता।

मेरी—वासिली साहब अपने किये पर पछताते हैं और टानिया इस वक्त भी स्टयूपा के साथ नाच रही है।

निकोलस—मुझे यह सुन कर दुःख हुआ; मगर इससे स्याही सफेदी में नहीं बदल जाती। मै अपने जीवन को नहीं बदल सकता। मेरी ! तुम्हे मेरी जरूरत नहीं हैं। मुझे जाने दो

मैंने कोशिश की कि तुम्हारे जीवन में भाग लेते हुए मैं उन सिद्धान्तों का भी समावेश करूँ कि जो मेरे लिए बहुत आवश्यक और प्रिय हैं; मगर मैं देखता हूँ कि यह असम्भव है। इसका नतीजा यही है कि मुझे और तुम्हें दोनो को दुःख होता है। इससे मुझे केवल दुःख ही नहीं होता है, बल्कि मैं जिस काम को करना चाहता हूँ वह खराब हो जाता है। हर एक आदमी, यहाँ तक कि यह अलेक्जेंडर पिट्रोविच तक, यह कह सकता है कि मैं मक्कार हूँ—मैं बातें बघारता हूँ, मगर कुछ करके नहीं दिखाता। मैं सादगी और ग़रीबी की शिक्षा देता हूँ; मगर ऐशो-आराम से रहता हूँ और बहाना यह करता हूँ कि मैंने अपनी जायदाद स्त्री के नाम लिख दी है।

मेरी—तो तुम्हे डर इस बात का है कि लोग क्या कहेंगे? सचमुच तुम इस इस लोकापवाद की अवहेलना करके ऊँचे नहीं उठ सकते।

निकोलस—मुझे इसका भय नहीं है कि लोग क्या कहेंगे—गो उनकी बातें सुनकर मुझे शर्म जरूर लगती है। मगर मुझे भय इस बात का है कि मैं ईश्वर के काम को खराब कर रहा हूँ।

मेरी—यह तो तुम्हीं अक्सर कहते थे कि ईश्वर अपनी इच्छा को मनुष्यों के विरोध करने पर भी पूरा करके छोड़ता है। मगर इससे कोई मतलब नहीं। बोलो, तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो?

निकोलस—यह तो मैं कई बार तुम्हें बता चुका हूँ।

मेरी—मगर, निकोलस, तुम जानते हो कि यह असम्भव है। ज़रा सोचो तो सही, ल्यूबा का ब्याह होने वाला है, वानिया कालेज मे भरती होने जा रहा है, मिसी और काटिया स्कूल में हैं। भला, मैं इन सब बातों को किस तरह रोक सकती हूँ ?

निकोलस—फिर भला, मैं क्या करूँ ?

मेरी—वही करो कि जिसे तुम अकसर मनुष्य का कर्तव्य बताते थे। धैर्य धारण करो और प्रेम-पूर्वक व्यवहार करो। क्या यह तुम्हारे लिए बहुत मुश्किल है। बस, हम लोगों के साथ रह कर जो कुछ हो सके करो, मगर घर छोड़ कर मत जाओ। बोलो, तुम्हें किस बात का दुःख है ?

(दौड़ते हुए वानिया का आना)

वानिया—माँ, वे लोग तुम्हे बुला रहे हैं।

मेरी—बोल दो. मैं अभी नहीं आ सकती, जाओ, जाओ।

वानिया—जल्दी आना (भाग जाता है)।

निकोलस—तुम मेरे विचारों को पसन्द नहीं करती और न उन्हें समझना चाहती ही हो।

मेरी—यह बात नहीं है कि मैं समझना नहीं चाहती। मगर मैं समझ ही नहीं पाती।

निकोलस—नहीं, तुम समझती नही और हम एक दूसरे से दूर होते जाते हैं। तुम मेरे हार्दिक भावो को पहचानो, अपने को मेरी स्थिति मे रख कर देखो, फिर तुम सब समझ सकोगी। एक तो यहां का जीवन नितांत पतित है। तुम्हें यह शब्द बुरा लगता है; मगर जिस जीवन की नीव डकैती

के ऊपर है उसे मैं किसी दूसरे नाम से पुकार ही नहीं सकता। हमारा जीवन "डकैती-मय" है; क्योंकि जिस घर पर हम निर्भर हैं वह उसी ज़मीन से आता है जिसे हमने किसानों से चुराया या छीन लिया है। इसके अलावा मैं देखता हूँ कि इस प्रकार का जीवन बच्चों को भी अधःपतित और चरित्रहीन बना रहा है। कहा है कि जो बच्चों को गुमराह करता है वह बड़ा पापी है। और मैं रोज़ अपनी आंखों से देखता हूँ कि धीरे धीरे बच्चे ख़राब और बरबाद हो रहे हैं। हर एक दावत से मेरे कलेजे में चोट लगती है।

मेरी—मगर यह सब तो पहले भी था। दुनिया मे सभी जगह यह होता है।

निकोलस—लेकिन मुझसे यह नहीं हो सकता। जब से मैंने समझ लिया कि हम सब भाई भाई हैं तब से यह फिज़ूल ख़र्ची, ख़ुदग़र्ज़ी और लापरवाही मेरे दिल में कांटे की तरह खटकती है।

मेरी—यह सब तुम्हारे मन की बातें हैं। कोई अपने मन से जो चाहे सो बात निकाल सकता है।

निकोलस—(तेज़ी से) तुम कुछ समझती नहीं, यही तो बड़ी भयानक बात है। आज ही की बात है, सुनो। मैं आज अछूत लोगों के मुहल्ले मे गया, वहां मैंने एक छोटे से दुध-मुँहे बच्चे को भूख से मरता हुआ देखा, एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी भयंकर रोग से पीड़ित ज़मीन पर पड़ा हुआ था; उसके पास एक छोटी, लड़की अकेली पड़ी रो रही थी; उसके पास न खाने को अन्न था न दवा मोल लेने

को पैसा; बाहर सड़क पर उसकी माँ सर्दी से कांपती हुई तन पर का भीगा कपड़ा सुखा रही थी; उसके पास कोई दूसरा कपड़ा न था और वह रह रह कर खांसी के मारे बेदम हो रही थी, शायद उसे क्षय रोग हो गया है। घर आकर मैंने देखा—सब ऐशो अशरत में मशगूल हैं, नौकरों की एक पलटन काम करने के लिए तैयार है, अपने सुख के लिए हमें किसी दूसरे का ख्याल भी नहीं है। मै बोरिस से मिलने गया कि जिसने सच्चाई के खातिर अपना सर्वस्व निछावर कर दिया है। बोरिस—शुद्ध, उच्च और दृढ़ प्रतिज्ञ बोरिस तरह तरह की मुसीबतें उठा रहा है गवर्नमेन्ट उससे छुटकारा पाने के लिए जान बूझकर उसके दिमाग को नुक़सान पहुँचाकर उसे बरबाद कर देना चाहती है। मै जानता हूँ और गर्वमेन्ट को भी मालूम है कि उसका दिल कमज़ोर है इस लिए वह पागलों के बीच में लेजाकर रखते हैं और उसे हर तरह से सताकर उत्तेजित करते हैं। यह दृश्य भयंकर-महा भयंकर है। और जब मैं घर वापिस आया तो सुना कि हमारे घर भर में, जिसने सच्चाई को समझा था न केवल सच्चाई को ही छोड़ दिया बल्कि उस आदमी को भी त्याग दिया कि जिसे प्रेम-दान देकर व्याहने का वादा किया था और अब वह व्याह करना चाहती है एक झूठे मक्कार।

मेरी—यही तुम्हारी ईसाइयत है।

निकोलस—मैं जानता हूँ कि यह मेरे अयोग्य है और मैं दोषी हूँ; मगर तुमसे वही कहता हूँ कि तुम अपने को मेरी स्थिति

रखकर देखो। मेरा मतलब है कि वह सच्चाई से फिर गई।

मेरी—तुम कहते हो "सच्चाई से फिर गई" मगर और लोग, अधिकांश लोग, कहते हैं "भ्रम से निकल गई"। देखा, वासिली साहब भी एक बार बहक गये थे, मगर फिर गिरजा को जाने लगे।

निकोलस—यह असम्भव है।

मेरी—उन्होंने लिसा को लिखा है। वह तुम्हें ख़त दिखायगी। इस तरह का विचार-परिवर्तन बहुत ही अस्थायी होता है, टानिया के मामले में भी ऐसा ही हुआ। मैं उस आदमी का जिक्र भी नहीं करना चाहती; क्योंकि वह तुम्हारी बात इस लिए मानता है कि इसे वह लाभदायक समझता है।

निकोलस—(क्रुद्ध होकर) ख़ैर, जाने दो। मैं सिर्फ़ तुमसे कहता हूँ। मैं अब भी मानता हूँ कि सत्य सत्य ही है। यह सब देखकर मुझे दुःख होता है। यहां घर पर मैं देखता हूँ, नाच गाना हो रहा है, दावतों के सामान हैं और सैकड़ों रुपये बेकार पानी की तरह बहाये जा रहे हैं, जब कि बेचारे ग़रीब लोग भूखों मर रहे हैं। मुझसे यह नहीं देखा जाता। मुझ पर दया करो, मुझे जाने दो। मैं यहां नहीं रह सकता। खुदा हाफिज।

मेरी—मगर तुम जाओगे तो मैं भी तुम्हारे साथ जाऊंगी। और अगर साथ नहीं ले जाओगे तो तुम जिस गाड़ी से जाओगे उसके नीचे दबकर मर जाऊंगी। भाड़ में पड़ने दो सबको—मिसी और कातिया को भी। हरे राम, हरे राम, कितना ज़ुल्म है, कितना अत्याचार है। (रोती है)

निकोलस—(दरवाज़े के पास) अलेक्ज़ेण्डर पिट्रोविच, तुम घर जाओ मैं नहीं जाऊंगा। (अपनी पत्नी से) अच्छी बात है, मैं ठहर जाता हूँ। (ओवर कोट उतारता है)

मेरी—(गले लगाकर) हमें बहुत दिन जिन्दा नहीं रहना है। २८ वर्ष तक साथ रहने के बाद हमें अपने बीते हुए जीवन की खुशी को मिट्टी में नहीं मिलाना चाहिए। अब मैं कभी कोई पार्टी न दूंगी; मगर तुम मुझे इस तरह मत दण्ड दो।

(वानिया और कातिया दौड़े आते हैं।)

वानिया और कातिया—माँ, आओ, जल्दी करो।

मेरी—आती हूँ, अभी आती हूँ। अच्छा, अब पुरानी बातें भूलकर एक दूसरे को क्षमा कर देना चाहिए।

(कातिया और वानिया के साथ प्रस्थान)

निकोलस—बालक है, बिलकुल बालक है, या चालाक औरत है? नहीं, एक चालाक बालक है। हां, ठीक है। मालूम होता है, ईश्वर, तू नहीं चाहता कि मैं तेरा सेवक बनकर तेरा यह काम पूरा करूं। तू चाहता है कि लोग मेरी ओर उँगली उठावें और कहें "यह उपदेश देता है मगर काम नहीं करता है" अच्छा यही सही। मैं समझा, तू चाहता है, त्याग, नम्रता, और आत्म-समर्पण। काश मैं इतना ऊँचा उठ सकता।

(लिसा का प्रवेश)

लिसा—क्षमा कीजिएगा। मैं वासिली साहब का खत आपके पास लाई हूँ।। वह मेरे नाम है, मगर उसमें लिखा है कि मैं आपको भी सुना दूं।

निकोलस—क्या यह वास्तव में सच है?

लिसा—हाँ, क्या मैं पढ़कर सुनाऊँ ?

निकोलस—हां, पढ़ो।

लिसा—(पढ़ती है) "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप यह निकोलस साहब को सुना दें। मुझे अपनी उस ग़ल्ती पर सख़्त अफ़सोस है कि जिसकी वजह से मैं गिरजा से बहक गया था। मगर ख़ुशी की बात है कि मैं फिर गिरजा को मानने लगा हूँ। मुझे आशा है कि आप और निकोलस साहब भी इसी मार्ग का अनुसरण करेंगे। कृपया मुझे क्षमा कीजिएगा।"

निकोलस—उन्होंने बेचारे को सता-सता कर आख़िर काबू में कर लिया।

लिसा—मैं आपसे यह भी कहने आई थी कि शाहज़ादी यहीं है। वह मेरे साथ दूसरी-मंजिल तक अत्यन्त उत्तेजित दशा में दौड़ कर आई और आपसे मिल कर जायगी। वह अभी बोरिस से मिल कर आई है। मैं समझती हूँ कि आप इस वक्त उससे न मिलें तो अच्छा है। आप से मिल कर उसे क्या फ़ायदा हो सकता है ?

निकोलस—नहीं, जाकर उन्हे अन्दर भेज दो। मालूम होता है कि आज मुसीबतों का दिन है।

लिसा—अच्छा तो, मैं जाकर भेजती हूँ। (प्रस्थान)

निकोलस—(अकेले में) हाँ,—काश कि मैं यह अच्छी तरह समझ सकता कि ज़ीवन का अर्थ यही है कि मैं तेरी सेवा कर सकूँ; और मुझे आज़माने के लिए जब कोई मुसीबत मुझ पर डालता है तब तू जानता है कि मैं उसे

सहन कर सकूँगा, उसे सह लेने की शक्ति मेरे अन्दर मौजूद है, नहीं तो वह आज़माइश नहीं रहेगी...ईश्वर मेरी मदद कर !

(शाहज़ादी का प्रवेश)

शाहज़ादी—तुमने मुझे अन्दर बुला लिया ? इतनी बड़ी इज़्ज़त बख़्शी ? मैं आपको सलाम करती हूँ। मैं तुमसे हाथ नहीं मिलाऊँगी, क्योंकि मैं तुमसे घृणा करती हूँ, तुम्हें तुच्छ समझती हूँ।

निकोलस—बात क्या हुई ?

शाहज़ादी—बस यह, कि वह उसे सज़ा देने के लिए दण्ड-भवन में लिये जा रहे हैं और इस बात के कारण तुम्हीं हो।

निकोलस—शाहज़ादी, अगर तुम्हें कुछ कहना है तो वह बोलो; लेकिन अगर तुम केवल मुझे कोसने ही को आई हो तो तुम अपने को ही हानि पहुँचाती हो। तुम्हारी बातों से मुझे चोट नहीं पहुँचेगी; क्योंकि मैं हृदय से तुम्हारे साथ सहानुभूति रखता हूँ और तुम पर तरस खाता हूँ।

शाहज़ादी—आहा, कितनी दया है ! कैसी ऊँची ईसाइयत है ! नहीं मि० सारयन्तसेव, तुम मुझे धोका नहीं दे सकते। अब हम तुम्हे अच्छी तरह समझ गये। तुमने मेरे लड़के को बरबाद कर दिया, और तुम्हें उसकी कुछ पर्वाह नहीं। तुम 'बाल' कराते हो, नाच-पार्टी देते हो; और तुम्हारी लड़की, जिसका विवाह मेरे लड़के के साथ ठहरा था अब किसी दूसरे के साथ विवाह करनेवाली है और तुम इस पर राज़ी हो। मगर तुम दुनिया को दिखाना चाहते हो कि तुम सादा

ज़िन्दगी बसर करते हो। इस मक्कारी और बहानेसाज़ी से तुम मुझे कितने घृणित और कितने तुच्छ मालूम होते हो ?

निकोलस—शाहज़ादी, इतनी उत्तेजित मत होओ। बोलो, तुम किसलिए आई हो ?—महज़ मुझे झिड़कने या गाली सुनाने के लिए तो न आई होगी !

शाहज़ादी—हाँ, इसके लिए भी। मेरे दिल में जो आग जल रही है, उसे किसी तरह शान्त भी करना है। मगर मैं जो कहना चाहती हूँ, वह यह है कि उसे वह दण्ड-भवन मे में लिये जा रहे हैं और यह मुझसे नहीं सहा जाता। तुमने ही यह सब काम कराया है। तुम्ही ने, हां, तुम्हीं ने !

निकोलस—मैंने नही, यह काम ईश्वर ने कराया है। और ईश्वर जानता है कि मुझे तुम्हारे लिए कितना दुःख है। ईश्वर की इच्छा में बाधा मत डालो। वह तुम्हें आज़माना चाहता है, इस आज़माइश को नम्रता-पूर्वक, शान्ति से सहन करो।

शाहज़ादी—मैं इसे शान्वि से सहन नहीं कर सकती। मेरी सारी जान मेरे लड़के में है और तुमने उसे मुझसे छीन कर बर-बाद कर दिया। मैं शान्त नहीं रह सकती। मै तुम्हारे पास आई हूँ और यह मैं अन्तिम बार कहने आई हूँ कि तुमने मेरे लड़के को बरबाद किया है और तुम्हीं को उसकी रक्षा करनी चाहिए। जाओ, और कह सुन कर उसे आज़ाद कराओ। डाक्टर, गवर्नर-जनरल, शाहन्शाह या जिससे जी चाहे मिलो। यह सब तुम्हारा काम है। और अगर तुम यह न करोगे तो मैं नहीं जानती मैं क्या कर बैठूँगी। इसके लिए उत्तरदाता तुम्ही हो।

निकोलस—बोलो, मैं क्या करूँ ? तुम जो कहोगी वह मैं करने के लिए तैयार हूँ।

शाहज़ादी—मैं फिर दुहराती हूँ—तुम्हें उसकी रक्षा करनी होगी। अगर तुम नहीं करोगे तो सावधान! ईश्वर मालिक है!

(प्रस्थान)

(निकोलस गद्दी पर लेट जाता है। ख़ामोशी। दरवाजा खुलता है और बाजे की आवाज़ ज़रा जोर से सुनाई देने लगी।

स्त्यूपा का प्रवेश)

स्त्यूपा—बाबा यहाँ नहीं है, अन्दर आ जाओ।

(लोग जोड़े बना कर नाचते हुए आते हैं)

ल्यूबा—(निकोलस को देख कर) ओहो, तुम यहीं हो बाबा, माफ करना।

निकोलस—(उठ कर) कोई परवाह नहीं है। (नाचने वाले जाते हैं)

निकोलस—वासिली ने कदम पीछे हटा लिया; बोरिस को मैंने तबाह कर दिया। ल्यूबा ब्याह करनेवाली है। कहीं मैं भूल तो नहीं कर रहा हूँ ? भूल कर रहा हूँ तुममे विश्वास करने की ? नहीं, पिता मेरी मदद करो।

पांचवां अंक

(पाँचवे अंक के लिए टालस्टाय यह नोट छोड़ गये, जिसे वह
कभी पूरा नहीं कर सके)।

दण्ड-भवन का एक कमरा। कैदी बैठे और लेटे हैं। बोरिस बाइबिल पढ़ कर मतलब समझाता है। एक आदमी जिसको कोड़े लगाये गये हैं, अन्दर लाया जाता है। "आह इसका बदला चुकाने के लिए अगर पुगचेव जीता होता।" शाहज़ादी अन्दर घुस आती है मगर बाहर निकाल दी जाती है। एक अफसर से झगड़ा। कैदी प्रार्थना करने के लिए जाते हैं, बोरिस हवालात में डाला जाता है: "उसको कोड़े लगेंगे।"

दृश्य बदलता है

ज़ार की सभा। सिगरेट, हँसी-मज़ाक। शाहज़ादी मिलना चाहती है। "उससे कहो ज़रा ठहरे।" अर्जी देने वालों की पेशी। खुशामद, उसके बाद शाहज़ादी। उसकी प्रार्थना अस्वीकृत हुई

(प्रस्थान)

दृश्य बदलता है

मेरी, निकोलस की बीमारी के बारे में डाक्टर से बातचीत करती है। "वह बदल गया है। नम्र और शान्त है। मगर उदासीन रहता है।" निकोलस आकर डाक्टर से बातचीत करता है और कहता है कि इलाज करना बेकार है। मगर पत्नी की खातिर उस पर राज़ी हो जाता है। टानिया और स्ट्यूपा का प्रवेश। ल्यूबा मिकालोविच के साथ। ज़मीन की बाबत बात-

प्रीत। निकोलस इस तरह बातें करता है जिससे उन्हें बुरा न लगे। सबका प्रस्थान। निकोलस लिसा से कहता है, मुझे सन्देह है कि मैंने जो कुछ किया वह ठीक है कि नहीं। मैं किसी काम में कामयाब न हुआ। बोरिस नष्ट हो गया; वासिली पीछे हट गया; मैंने कमजोरी दिखाई। इससे प्रकट है कि ईश्वर मुझे अपना सेवक नहीं बनाना चाहता। उसके पास बहुत से सेवक हैं—और वह मेरे बगैर उसकी इच्छा-पूर्ण कर सकते हैं। जो आदमी इस बात को समझ लेता है वह शक्ति पाता है।" लिसा का प्रस्थान। वह प्रार्थना करता है। शाहजादी दौड़ कर आती है और उसे गोली मार कर गिरा देती है। निकोलस कहता है कि इत्तफाक से गोली उसके हाथ से छूटकर लग गई। वह ज़ार के नाम एक चिट्ठी लिखता है। वासिली कुछ सच्चे ईसाइयों के साथ आता है! वह खुशी मनाते हुए मरता है कि गिरजा की धोखे-बाजी जाहिर हो गई और कहता है कि वह अपने जीवन का अर्थ समझ गया।

समाप्त

सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर.

स्थापना सन् १९२५ ई०; मूलधन ४५०००)

उद्देश्य—सस्ते से सस्ते मूल्य में ऐसे धार्मिक, नैतिक, समाज सुधार सम्बन्धी और राजनैतिक साहित्य को प्रकाशित करना जो देश को स्वराज्य के लिए तैय्यार बनाने में सहायक हो, नवयुवकों में नवजीवन का संचार करे, स्त्रीस्वातंत्र्य और अछूतोद्धार आन्दोलन को बल मिले।

संस्थापक—सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला (सभापति) सेठ जमनालालजी बजाज आदि सात सज्जन।

मंडल से—राष्ट्र-निर्माणमाला और राष्ट्र-जागृतिमाला ये दो मालाएँ प्रकाशित होती हैं। पहले इनका नाम सस्तीमाला और प्रकीर्णमाला था।

राष्ट्र-निर्माणमाला (सस्तीमाला) में प्रौढ़ और सुशिक्षित लोगों के लिए गंभीर साहित्य की पुस्तकें निकलती हैं।

राष्ट्र-जागृतिमाला (प्रकीर्णमाला) में समाज सुधार, ग्राम-संगठन, अछूतोद्धार और राजनैतिक जागृति उत्पन्न करनेवाली पुस्तकें निकलती हैं।

स्थाई ग्राहक होने के नियम

(१) उपर्युक्त प्रत्येक माला में वर्ष भर में कम से कम सोलह सौ पृष्ठों की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। (२) प्रत्येक माला की पुस्तकों का मूल्य डाक व्यय सहित ४) वार्षिक है। अर्थात् दोनों मालाओं का ८) वार्षिक। (३) स्थाई ग्राहक बनने के लिए केवल एक बार ॥) प्रत्येक माला की प्रवेश फीस ली जाती है। अर्थात् दोनों मालाओं का एक रुपिया। (४) किसी माला का स्थायी ग्राहक बन जाने पर उसी माला की पिछले वर्षों में प्रकाशित सभी या चुनी हुई पुस्तकों की एक एक प्रति ग्राहकों को लागत मूल्य पर मिल सकती है। (५) माला का वर्ष जनवरी मास से शुरू होता है। (६) जिस वर्ष से जो ग्राहक बनते हैं उस वर्ष की सभी पुस्तकें उन्हें लेनी होती हैं। यदि उस वर्ष की कुछ पुस्तकें उन्होंने पहले से ही ले रखी हों तो उनका नाम व मूल्य कार्य्यालय में लिख भेजना चाहिए। उस वर्ष की शेष पुस्तकों के लिए कितना रुपिया भेजना चाहिये, वह कार्य्यालय से सूचना मिल जायगी।

सस्ती-साहित्य-माला के प्रथम वर्ष की पुस्तकें

(१) दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह—प्रथम भाग (महात्मा गांधी) पृष्ठ सं० २७२, मूल्य स्थायी ग्राहकों से ।≡) सर्वसाधारण से ॥)

(२) शिवाजी की योग्यता—(ले० गोपाल दामोदर तामस्कर एम० ए० एल० टी०) पृष्ठ १३२ मूल्य ।=) ग्राहकों से ।)

(३) दिव्य जीवन—पुस्तक दिव्य विचारों की खान है। पृष्ठ-संख्या १३६, मूल्य ।=) ग्राहकों से ।) चौथी बार छपी है।

(४) भारत के स्त्री रत्न—(पाँच भाग) इस में वैदिक काल से लगाकर आज तक की प्रायः सब धर्मों की आदर्श, पतिव्रता, विदुषी और भक्त कोई ५०० स्त्रियों की जीवनी होगी। प्रथम भाग पृष्ठ ४१० मू० १) ग्राहकों से ॥) दूसरा भाग दूसरे वर्ष में छपा है। पृष्ठ ३२० मू० ॥-)

(५) व्यावहारिक सभ्यता—छोटे बड़े सब के उपयोगी व्यावहारिक शिक्षाएँ। पृष्ठ १२८, मूल्य ।)॥ ग्राहकों से ≡)॥

(६) आत्मोपदेश—पृष्ठ १०४, मू० ।) ग्राहकों से ≡)

(७) क्या करें? (टॉलस्टॉय) महात्मा गांधी जी लिखते हैं—"इस पुस्तक ने मेरे मन पर बड़ी गहरी छाप डाली है। विश्व-प्रेम मनुष्य को कहाँ तक ले जा सकता है, यह मैं अधिकाधिक समझने लगा" प्रथम भाग पृष्ठ २६६ मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)

(८) कलवार की करतूत—(नाटक) (ले० टाल्सटाय) अर्थात् शराबखोरी के दुष्परिणाम; पृष्ठ ४० मू० -)॥ ग्राहकों से -)।

(९) जीवन साहित्य—(भू० ले० बाबू राजेन्द्रप्रसादजी) काका कालेलकर के धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर मौलिक और मननीय लेख—प्रथम भाग-पृष्ठ २१८ मू० ॥) ग्राहकों से ।=)

प्रथम वर्ष में उपरोक्त नौ पुस्तकें १६६८ पृष्ठों की निकली है

सस्ती-साहित्य-माला के द्वितीय वर्ष की पुस्तकें

(१) तामिल वेद—[ले० अछूत संत ऋषि तिरुवल्लुवर] धर्म और नीति पर अमृतमय उपदेश—पृष्ठ २४८ मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥

(२) स्त्री और पुरुष [म० टाल्सटाय] स्त्री और पुरुषों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आदर्श विचार—पृष्ठ १५४ मू० ।=) ग्राहकों से ।)

(३) हाथ की कताई बुनाई [अनु० श्री रामदास गौड़ एम० ए०) पृष्ठ २६७ मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥ इस विषय पर आई हुई ६६ पुस्तकों में से इसको पसंद कर म० गांधीजी ने इसके लेखकों को १०००) दिया है।

(४) हमारे ज़माने की गुलामी (टाल्सटाय) पृष्ठ १०० मू० ।)

(५) चीन की आवाज़—पृष्ठ १२० मू० ।-) ग्राहकों से ≡)॥

(६) द० अफ्रिका का सत्याग्रह—(दूसरा भाग) ले० म० गांधी पृष्ठ २२८ मू० ॥) ग्राहकों से ।=) प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

(७) भारत के स्त्रीरत्न (दूसरा भाग) पृष्ठ लगभग ३२० मू० ॥-) ग्राहकों से ॥≡) प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

(८) जीवन साहित्य [दूसरा भाग] पृष्ठ २०० मू० ॥) ग्राहकों से ।≡) इसका पहला भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

दूसरे वर्ष में लगभग १६५० पृष्ठों की ये ८ पुस्तकें निकली हैं

सस्ती-प्रकीर्ण-माला के प्रथम वर्ष की पुस्तकें

(१) कर्मयोग—पृष्ठ १५२, मू० ।=) ग्राहकों से ।)

(२) सीताजी की अग्नि-परीक्षा—पृष्ठ १२४ मू० ।-) ग्राहकों से ≡)॥

(३) कन्या-शिक्षा—पृष्ठ सं० ९४, मू० केवल ।) स्थायी ग्राहकों से ≡)

(४) यथार्थ आदर्श जीवन—पृष्ठ २६४, मू० ॥-) ग्राहकों से ।=)॥

(५) स्वाधीनता के सिद्धान्त—पृष्ठ २०८ मू० ॥) ग्राहकों से ।-)॥

(६) तरंगित हृदय—(ले० पं० देवशर्म्मा विद्यालंकार) भू० ले० पं० पद्मसिंहजी शर्मा पृष्ठ १७६, मू० ।≡) ग्राहकों से ।-)

(७) गंगा गोविन्दसिंह (ले० चण्डीचरणसेन) ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों और उनके कारिन्दों की काली करतूतें और देश की विनाशोन्मुख स्वाधीनता को बचाने के लिए लड़ने वाली आत्माओं की वीर गाथाओं का उपन्यास के रूप में वर्णन—पृष्ठ २८० मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥

(८) स्वामीजी [श्रद्धानंदजी] का बलिदान और हमारा कर्तव्य [ले० पं० हरिभाऊ उपाध्याय] पृष्ठ १२८ मू० ।-) ग्राहकों से ।)

(९) यूरोप का सम्पूर्ण इतिहास [प्रथम भाग] यूरोप का इतिहास स्वाधीनता का तथा जागृत जातियों की प्रगति का इतिहास है। प्रत्येक भारत-वासी को यह ग्रन्थ रत्न पढ़ना चाहिये। पृष्ठ ३६६ मू० ॥=) ग्राहकों से ॥-)

प्रथम वर्ष में १७१२ पृष्ठों की ये ९ पुस्तकें निकली हैं

सस्ती-प्रकीर्ण-माला के द्वितीय वर्ष की पुस्तकें

(१) यूरोप का इतिहास [दूसरा भाग] पृष्ठ २२७ मू० ॥-) ग्राहकों से ।=) (२) यूरोप का इतिहास [तीसरा भाग] पृष्ठ २४० मू० ॥-) ग्राहकों से ।=) इसका प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

(३) ब्रह्मचर्य-विज्ञान [ले० पं० जगन्नारायणदेव शर्म्मा, साहित्य शास्त्री] ब्रह्मचर्य विषय की सर्वोत्कृष्टपुस्तक—भू० ले० पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे—पृष्ठ ३७४ मू० ।॥-) ग्राहकों से ॥-)॥

(४) गोरों का प्रभुत्व [बाबू रामचन्द्र वर्म्मा] संसार में गोरों के प्रभुत्व का अंतिम घंटा बज चुका। एशियाई जातियां किस तरह आगे बढ़ कर राजनैतिक प्रभुत्व प्राप्त कर रही हैं यही इस पुस्तक का मुख्य विषय है। पृष्ठ २७४ मू० ।॥=) ग्राहकों से ॥=)

(५) अनोखा—फ्रांस के सर्व श्रेष्ठ उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के "The Laughing man" का हिन्दी अनुवाद। अनुवादक हैं ठा० लक्ष्मणसिंह बी० ए० एल० एल० बी० पृष्ठ ४७४ मू० १।-) ग्राहकों से १)

द्वितीय वर्ष में १५६० पृष्ठों की ये ५ पुस्तकें निकली हैं

राष्ट्र-निर्माण माला (सस्ती-साहित्य-माला) [तीसरा वर्ष

(१) आत्म-कथा (प्रथम खंड) म० गांधी जी लिखित-अनु० पं० हरिभाऊ उपाध्याय। पृष्ठ ४१६ स्थाई ग्राहकों से मूल्य-केवल ॥=)

(२) श्री रामचरित्र (ले० श्रीचिंतामण विनायक वैद्य एम० ए०) पृष्ठ २४० मूल्य १।) ग्राहकोंसे ॥≡) समाज-विज्ञान पृष्ठ ५६४ मूल्य १॥) खद्दर का सम्पत्ति-शास्त्र, नीति नाश के मार्ग पर और विजयी बारडोली, छप रहे हैं।

राष्ट्र-जागृतिमाला (सस्ती-प्रकीर्ण-माला) [तीसरा वर्ष]

(१) सामाजिक कुरीतियां [टाल्सटाय] पृष्ठ २८० मूल्य ॥≡) ग्राहकों से ॥) (२) घरों की सफाई—पृष्ठ ६२ मूल्य ।) ग्राहकोंसे ≡) (३) आश्रम-हरिणी (वामनमल्हार जोशी एम० ए० का सामाजिक उपन्यास) पृष्ठ ९२ मूल्य ।) ग्राहकों से ≡) (४) शैतान की लकड़ी (अर्थात् भारत में व्यसन और व्यभिचार) १० चित्र—पृष्ठ ३६८ मूल्य ।॥=) ग्राहकों से ॥=) आगे के ग्रंथ छप रहे हैं।

विशेष हाल जानने के लिए बड़ा सूचीपत्र मंगाइये

पता—सस्ता-साहित्य-मण्डल, अजमेर

(३) हाथ की कताई बुनाई [अनु० श्रीरामदास गौड़ एम० ए०) पृष्ठ २६७ मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥ इस विषय पर आई हुई ९९ पुस्तकों में से इसको पसंद कर म० गांधीजी ने इसके लेखकों को १०००) दिया है।

(४) हमारे ज़माने की गुलामी (टाल्सटाय) पृष्ठ १०० मू० ।)

(५) चीन की आवाज़—पृष्ठ १२० मू० ।-) ग्राहकों से ≡)॥

(६) द० अफ्रिका का सत्याग्रह—(दूसरा भाग) ले० म० गांधी पृष्ठ २२८ मू० ॥) ग्राहकों से ।=) प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

(७) भारत के स्त्रीरत्न (दूसरा भाग) पृष्ठ लगभग ३२० मू० ॥-) ग्राहकों से ॥≡) प्रथम भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

(८) जीवन साहित्य [दूसरा भाग] पृष्ठ २०० मू० ॥) ग्राहकों से ।≡) इसका पहला भाग पहले वर्ष में निकल चुका है।

दूसरे वर्ष में लगभग १६५० पृष्ठों की ये ८ पुस्तकें निकली हैं

सस्ती-प्रकीर्ण-माला के प्रथम वर्ष की पुस्तकें

(१) कर्मयोग—पृष्ठ १५२, मू० ।=) ग्राहकों से ।)

(२) सीताजी की अग्नि-परीक्षा—पृष्ठ १२४ मू० ।-) ग्राहकों से ≡)॥

(३) कन्या-शिक्षा—पृष्ठ सं० ९४, मू० केवल ।) स्थायी ग्राहकों से ≤)

(४) यथार्थ आदर्श जीवन—पृष्ठ २६४, मू० ॥-) ग्राहकों से ।=)॥

(५) स्वाधीनता के सिद्धान्त—पृष्ठ २०८ मू० ॥) ग्राहकों से ।-)॥

(६) तरंगित हृदय—(ले० पं० देवशर्म्मा विद्यालंकार) भू० ले० पं० पद्मसिंहजी शर्मा पृष्ठ १७६, मू० ।≡) ग्राहकों से ।-)

(७) गंगा गोविन्दसिंह (ले० चण्डीचरणसेन) ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारियों और उनके कारिन्दों की काली करतूतें और देश की विनाशोन्मुख स्वाधीनता को बचाने के लिए लड़ने वाली आत्माओं की वीर गाथाओं का उपन्यास के रूप में वर्णन—पृष्ठ २८० मू० ॥=) ग्राहकों से ।≡)॥

(८) स्वामीजी [श्रद्धानंदजी] का बलिदान और हमारा कर्तव्य [ले० पं० हरिभाऊ उपाध्याय] पृष्ठ १२८ मू० ।-) ग्राहकों से ।)

(९) यूरोप का सम्पूर्ण इतिहास [प्रथम भाग] यूरोप का इतिहास स्वाधीनता का तथा जागृत जातियों की प्रगति का इतिहास है। प्रत्येक भारतवासी को यह ग्रन्थ रत्न पढ़ना चाहिये। पृष्ठ २६६ मू० ॥=) ग्राहकों से

प्रथम वर्ष में १७२२ पृष्ठों की ये ९ पुस्तकें निकली हैं